॥ अथ चतुर्लिंतो भद्र मण्डलम् ॥
मिथिलादेशीय मकरन्दानुसार
अपराजिता पञ्चांग
॥ सर्वतोभद्र मण्डल॥
राजा- गुरु
वर्षा - १३
मन्त्री- सूर्य
धान्य- ५
सन्-१४३१
शालिवाहन शक- १९४५-०४६
ईस्वी सन्-२०२३-२०२४
विक्रमसंवत्-२०८०-०८१
मूल्य रु 21/-, नेपाली रु 33
सम्पादकः- पं.श्री अजय मिश्रः (सिद्धान्त,फलित् जयोतिषाचार्यः)
परामर्शक : पं.श्रीरामचन्द्र झा
सहयोगी-उत्कर्ष मिश्र, अपराजिता कुमारी
प्रकाशक एवं वितरक- मिथिला पब्लिकेशन जयदीप भवन, खजाँची रोप पटना-४, मोबाईल नं. 8298824189। यहाँ सभी प्रकार के धार्मिक पुस्तक मिलता है।
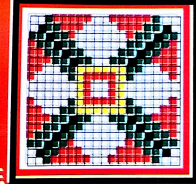
| नक्षत्र<br>वर्णाः | चु.चे.<br>चो.ला. | ली.लू.<br>ले.लो. | अ.इ<br>ऊ.ए. | ओ.वा.<br>बी.बु | वे.वो.<br>का.की | कू.घ.<br>ङ.छा | के.को.<br>हा.ही. | हू.हे.<br>हो.डा. | डी.डू.<br>डे.डो. | मा.मी.<br>मू.मे. | मो.टा.<br>टी.टू. | टे.टो.<br>पा.पी. | पू.ष.<br>ण.ठ. | पे.पो.<br>रा.री. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्रम् | अश्वि. | भरणी | कृतिका | रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा |
| राशिः | मेष | मेष | मेष-१<br>वृष-३ | वृष | वृष-२<br>मिथुन२ | मिथुन | मिथुन-३<br>कर्क-१ | कर्क | कर्क | सिंह | सिंह | सिंह-१<br>कन्या-३ | कन्या | कन्या-२<br>तुला-२ |
| वर्णः | क्षत्रिय | क्षत्रिय | क्षत्रिय१<br>वैश्य-३ | वैश्य | वैश्य-२<br>शूद्र-२ | शूद्र | शूद्र-३<br>विप्र-१ | विप्र | विप्र | क्षत्रिय | क्षत्रिय | क्षत्रिय-१<br>वैश्य-३ | वैश्य | वैश्य-२<br>शूद्र-२ |
| वश्यः | चतुष्पद | चतुष्पद | चतुष्पद | चतुष्पद | चतुष्पद२<br>मानव-२ | मानव | मानव-३<br>जल-१ | जलचर | जलचर | वनचर | वनचर | वनचर१<br>मानव-३ | मानव | मानव |
| युंजा<br>हंसक | पूर्व<br>अग्नि | पूर्व<br>अग्नि | पूर्व<br>अ१.भू३ | पूर्व<br>भूमि | पूर्व<br>भूमि२ | मध्य<br>वायु | मध्य<br>वायु३ | मध्य<br>जल | मध्य<br>जल | मध्य<br>अग्नि | मध्य<br>अग्नि | मध्य<br>अग्नि१ | मध्य<br>भूमि | मध्य<br>भूमि२ |
| (तत्त्व)<br>योनिः | अश्व | गज | मेष<br>वानर | सर्प | वायु२<br>सर्प | श्वान | जल१<br>मार्जार | मेष | मार्जार | मूषक | मूषक | भूमि३<br>गो | महिष | वायु२<br>व्याघ्र |
| योनिवैरः | महिष | सिंह | भौमः-१ | नकुल | नकुल | मृग | मूषक | वानर | मूषक | मार्जार | मार्जार | व्याघ्र | अश्व | गो |
| राशीशः | भौमः | भौमः | शुक्रः-३<br>राक्षस | शुक्र | शुक्रः-२<br>बुधः-२ | बुधः | बुधः-३<br>चन्द्र-१ | चन्द्रः | चन्द्रः | सूर्यः | सूर्यः | सूर्यः-१<br>बुधः-३ | बुधः | बुधः-२<br>शुक्रः-२ |
| गणः<br>नाड़ी | देव<br>आदि | मनुष्य<br>मध्य | अन्त्य | मनुष्य<br>अन्त्य | देव<br>मध्य | मनुष्य<br>आदि | देव<br>आदि | देव<br>मध्य | राक्षस<br>अन्त्य | राक्षस<br>अन्त्य | मनुष्य<br>मध्य | मनुष्य<br>आदि | देव<br>आदि | राक्षस<br>मध्य |

| नक्षत्र<br>वर्णाः | रु.रे.<br>रो.ता. | ती.तू.<br>ते.तो. | न.नी.<br>नू.ने. | नो.या.<br>यी.यू. | ये.यो.<br>भा.भी. | भू.धा.<br>फा.ढा. | भे.भो.<br>जा.जी. | खी.खू.<br>खे.खो. | गा.गी.<br>गू.गे. | गो.सा.<br>सी.सू. | से.सो.<br>द.दी. | दु.थ.<br>झ.ञ. | दे.दो.<br>चा.ची. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्रम् | स्वाती | विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि | शतभिषा | पू.भा. | उ.भा. | रेवती |
| राशिः | तुला | तुला-३<br>वृश्चि१ | वृश्चि | वृश्चि | धनु | धनु | धनु-१<br>मकर-३ | मकर | मकर२<br>कुम्भ२ | कुम्भ | कुम्भ३<br>मीन१ | मीन | मीन |
| वर्णः | शूद्र | शूद्र-३<br>विप्र-१ | विप्र | विप्र | क्षत्रिय | क्षत्रिय | क्षत्रिय१<br>वैश्य-३ | वैश्य | वैश्य२<br>शूद्र२ | शूद्र | शूद्र३<br>विप्र१ | विप्र | विप्र |
| वश्यः | मानव | मानव३<br>कीट-१ | कीट | कीट | मानव | मानव<br>चतु.३ | चतुष्पद | चतु.१<br>जल.२ | जल२<br>मान२ | मानव | मानव३<br>जलचर१ | जलचर | जलचर |
| युंजा<br>हंसक | मध्य<br>वायु | मध्य<br>वायु३ | मध्य<br>जल | अन्त्य<br>जल | अन्त्य<br>अग्नि | अन्त्य<br>अग्नि | अन्त्य<br>अग्नि१ | अन्त्य<br>भूमि | अन्त्य<br>भूमि२ | अन्त्य<br>वायु | अन्त्य<br>वायु३ | अन्त्य<br>जल | पूर्व<br>जल |
| (तत्त्व)<br>योनिः | महिष | जल१<br>व्याघ्र | मृग | मृग | श्वान | वानर | भूमि३<br>नकुल | वानर | वायु२<br>सिंह | अश्व | जल१<br>सिंह | गो | गज |
| योनिवैरः | अश्व | गो | श्वान | श्वान | मृग | मेष | सर्प | मेष | गज | महिष | गज | व्याघ्र | सिंह |
| राशीशः | शुक्रः | शुक्रः३<br>भौमः१ | भौमः | भौमः | गुरुः | गुरुः | गुरुः-१<br>शनिः-३ | शनिः | शनिः | शनिः | शनिः३<br>गुरुः१ | गुरुः | गुरुः |
| गणः<br>नाड़ी | देव<br>अन्त्य | राक्षस<br>अन्त्य | देव<br>मध्य | राक्षस<br>आदि | राक्षस<br>आदि | मनुष्य<br>मध्य | मनुष्य<br>अन्त्य | देव<br>अन्त्य | राक्षस<br>मध्य | राक्षस<br>आदि | मनुष्य<br>आदि | मनुष्य<br>मध्य | देव<br>अन्त्य |

## राशिफल–

**मेष (चू. चे. चो. ला. ली. लू. ले. लो.अ.)**–मेष राशि वालों को इस वर्ष धनागमन होगा। कुटुम्ब परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी। पुत्रोत्सव व मांगलिक कार्य होंगे। मान–सम्मान में वृद्धि होगी। भूमि या भवन की वृद्धि सम्भव है। रोग से मुक्ति मिल सकती है। पदोन्नति की सम्भावना रहेगी। किन्तु मानसिक तनाव हो सकता है। हनुमान जी की उपासना से लाभ मिलेगा।

**वृष (ई. उ. ए. ओ. वा. वी. वू. वे. वो.)** – वृष राशि वालों को कुटुम्ब परिवार का सहयोग प्राप्त रहेगा। साथ ही चल सम्पत्ति में वृद्धि होगी। नौकरी तथा व्यवसाय में परिवर्तन सम्भव है। स्थान परिवर्तन के योग बन सकते हैं। कभी–कभी धन खर्च करने पर भी सफलता प्राप्त नहीं होती है। दुर्गा जी की साधना से लाभ मिलेगा

• **मिथुन (का.की.कु.घ.ङ.छ.के.को.हा.)**– इस वर्ष मिथुन राशि वालों की धन व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। शत्रु वर्ग पराजित होंगे सभी कार्यों में सफलता प्राप्त हो सकती है। तीर्थयात्रा हो सकती है। मित्रों से संबंध विच्छेद भी सम्भव है। पुत्रों द्वारा कष्ट सम्भव है। शुभ कार्यों में प्रवृत्ति रहेगी।

• **कर्क (ही. हू. हे. हो. डा. डी. डू. डे. डो.)** – राशि वालों के लिए यह वर्ष उत्तम नही है। धन–सम्पत्ति में गिरावट आयेगी। मानसिक तनाव में वृद्धि संभंव है। अनेक प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है। प्रतियोगीतात्मक परीक्षा मे सफलाता प्राप्त होगी। दुर्गा तथा शिव जी की उपसाना से कष्ट दूर होगा।

• **सिंह ( मा. मी. मू. मे. मो टा. टी. टू. टे.)**– सिंह राशि वालों के लिए इस वर्ष सभी कार्यो में सफलता प्राप्त होगी। धार्मिक कार्य मे रुचि होगी। नौकरी तथा व्यापार मे हानी हो सकती है। पिता से सहयोग मिलेगा। अधिक परिश्रम से सफलता प्राप्त होगा।

• **कन्या (टो.पा.पी.पू.ष.ण.ठ.पे.पो.)**–कन्या राशि वाले जातक का यह वर्ष मध्यम रहेगा। कार्यों में बाधा अथवा विलम्ब होगा। व्यर्थ विवाद या अशान्ति रहेगी। व्यवसाय मे बाधा सम्भव है। वाहन, भूमि का योग बन रहा है, परीक्षा मे अधिक परिश्रम से सफलता प्राप्त होगी। वर्ष के २,६,७,८,१० मास नेष्ट हैं

• **तुला (रा.री.रू.रे.रो.ता. ती.तू.ते)**– आप के लिए यह वर्ष उत्तम है। मान–सम्मान मे वृद्धि होगी। शत्रुपक्ष तथा स्वास्थ्य के सम्बन्ध में सचेत रहे। खाद्य पदार्थ जनित रोग संभव है। आार्थिक स्थिति में सुधार होगा। माता–पिता का स्वास्थ्य प्रतिकूल रहेगा। शिक्षा क्षेत्र मे सफलता प्राप्त होगी। वर्ष के १, ५, ७, ६ मास नेष्ट है।

•**वृश्चिक(तो.ना.नी.नू.ने.नो.या.यी.यू.)**– इस वर्ष शनि के कारण प्रगतिपूर्ण कार्यो में विघ्न तथा क्षति होगी। स्वास्थ्य प्रतिकूल रहेगा। दुर्घटना तथा अनावश्यक विवाद होगा। राजनिति क्षेत्र मे सफलता मिलेगां, शिक्षा क्षेत्र से सामान्य लाभ होगा, अनावश्यक यात्रा का योग बनरहा है। वर्ष के १,४,६,८,१० मास नेष्ट है। हनुमान जी की आराधना से लाभा होगा।

• **धनु (ये.यो.भा.भी.भु.ध.फ.ढ़.भे)**– धनु राशि हेतु वर्ष सामान्य रहेगा। व्यवसाय तथा रोजगार में साधारण आय होगा। कारो बार मे मन्दी का रुख रहेगा। शिक्षा क्षेत्र मे सफलता प्राप्त होगी, कृषि क्षेत्र मे अधिक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, सन्तान से सुख प्राप्त होगा। वर्ष के३, ५, ७, ११ मास नेष्ट है।

पुराना श्रीराम पूजा भंडार, प्रो० संजय पन्त – 9939658531.

• **मकर(भो.जा.जी.जू.जे.जो.खा.खू.खे.खो.गा.गी)**- मकर राशि वाले जातको पर इस वर्ष शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव उग्र रहेगा। वर्ष का पूर्वार्ध अत्यधिक संघर्षपूर्ण रहेगा। व्यापार मे परेशानी, स्वास्थ्य प्रति कुल रहेगा, मानसिक परेशानी हो सकता। वर्ष के उत्तरार्ध मे धीरे-धीरे कार्य मे सफलता मिलेगा, अध्ययन क्षेत्र मे उन्नति होगा, माता-पिता से सहयोग प्राप्त होगा। वर्ष के १,२,४,६,१० मास नेष्ट है, हनुमान तथा शिव जी के आराधना से सफलता प्राप्त होगा

• **कुम्भ-(गू गे गो सा सी सू से सो दा)**- कुम्भराशि वाले जातको को शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा, स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियों के प्रति सावधानी रखें। व्यापार मे उत्तार चढ़ाव देखने को मिलेगा। शिक्षा तथा कृषि क्षेत्र से लाभ होगा। घर मे मांगलिक कार्य सम्पन्न होगा लेन-देन सावधानी पूर्वक करें, पत्नी से सहयोग मिलेगा। वर्ष के १, ३, ५, ९ मास नेष्ट हैं, दुर्गा तथा हनुमान जी का उपासना से कार्य मे सफलता प्राप्त होगा।

•**मीन ( दी दू थ झ ञ दे दो चा ची )**- आप के लिए यह वर्ष उत्तार-चढ़ाव दायक रहेगा शिक्षा तथा प्रशासनिक क्षेत्र मे सफलता प्राप्त होगा। कृषि सम्बन्धीं कार्य मे नोकसान हो सकता है, स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी से धन का अपव्यय सम्भव है, पत्नी से सहयोग प्राप्त होगा, व्यापारिक लेन देन मे झण्झट हो सकता है अतः सावधानी पूर्वक लेन-देन करें। वर्ष के २, ४, ८ , १२ मास नेष्ट है, विष्णु भगवान के पूजन करने से लाभ मिलेगा।

## खोईहुईवस्तु ज्ञान चक्र

| संज्ञा | नक्षण | लाभालाभ | दिशा |
|---|---|---|---|
| अन्धाक्ष | रो.,पष्य,उ.फा.,वि.,पू.षा.,ध.,रे. | शीघ्रलाभ | पूर्व में |
| मन्दाक्ष | मृ.,श्ले.,ह.,अनु.,उ.षा.,श.,अश्वि. | प्रयत्न से लाभ | दक्षिण में |
| मध्याक्ष | आर्द्रा,म.,चि.,ज्ये.,अभि.,पू.भा.,भ. | दूर श्रवण मात्र | पश्चिम मे |
| सुलोचन | पुन.,पू.फा.,स्वाति,मू.श्र.उ.भा.,कृ. | अलाभ | उत्तर में |

**यात्रा के पहले ग्राह्य वस्तुयें–**

रवि को पान, सोम को दर्पन। मंगल को गुड़ करिये अर्पन।।
बुध को धनिया, बीफै जीरा। शुक्र कहे मोहिं दधि का पीरा।।
कहें शनी मै अदरख पावा। सुख–सम्पत्ति निश्चय घर लावा।।

## अर्धप्रहरा बोधक चक्र

| दिन | रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिवा | ४।५ | २।७ | २।६ | ३।५ | ७।८ | ३।४ | १।६।८ |
| रात्रि | ४।६ | ४।७ | ०।२ | ५।७ | ५।८ | ०।३ | १।६।८ |

**छींक विचार-**

सम्मुख छींक लड़ाई भाखे।
छींक दाहिने द्रव्य विनाशें।।
उँची छींक कहे जयकारी।
नीची छींक होय भयकारी।

**चद्रमा की दिशा-**

मेष, सिंह, धनु, पूरब चन्दा।
दक्षिण कन्या वृष मकरन्दा।।
पश्चिम कुम्भ तुलायां मिथुना।
उत्तर कर्कट वृश्चिक मीना।।

**यात्रा मे दिशाशूलः–**

सोम शनिचर पूरब न चालू।
मंगल बुध उत्तर दिशि कालू।।
रवि शुक्र जो पश्चिम जाय।
हानि होय पथ सुख नहिं पाय।।
बीफे दखिन करें पयाना।
फिर नहिं समझो ताको आना।।

### रक्षाबन्धनमन्त्र-

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः ।
तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे माचल माचल।।

### कुशोत्पाटन-मन्त्र

कुशाग्रे वसते रुद्रः कुशमध्ये तु केशवः ।
कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान्मे देहि मेदिनि।।
कुशोऽसि कुशपुत्रोऽसि ब्रह्मणा निर्मितःपुरा।
देवपितृहितार्थाय कुशमुत्पाटयाम्यहम्।।

### चौठ-चन्द्रदर्शन मन्त्र

सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः।
सुकुमारक मा-रोदिस्तव ह्येष स्यन्मतकः।।
प्रार्थना- दधिशंख-तुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम्।
नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम्।

### भ्रातृद्वितीया में भगिनी-पठनीय मन्त्र

भ्रातस्तवानुजाताहं भुक्ष्वभक्तमिदं शुभं।
प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः।।

### अगस्त्यार्घ्यदान-मन्त्र

कुम्भयोनिसमुत्पन्न मुनीनां मुनिसत्तम।
उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
शंखं पुष्पं फलं तोयं रत्नानिविविधानि च
उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयंप्रतिगृह्यताम्।।
काशपुष्पप्रतीकाश-वह्निमारुतसंभव।
उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

### अगस्त्य-प्रार्थनामन्त्र

आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः
समुद्रःशोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु।।

### होलिका-ध्यानमन्त्र

असूमयावसन्तप्तेः कृत्वा त्वं होलि वालिश
अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूतेभूतिप्रदा भव।।
('होलिकायै नमः' इति मन्त्रेण यथोपचारैः संपूज्य प्रदीपयेत्।)

### होलिका-प्रदीप मन्त्र

दीपयाम्यत्र ते घोरां चिति राक्षसि ते नमः।
हिताय सर्वजगतः प्रीतये पार्वतीपते।।

### होलिका भष्म धारणमन्त्र-

वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्माच्युतशिवादिभिः।
अतस्त्वं पाहि नो भीतेर्भूषिता भूतिदा भव।

### अशोक कलिका-पान मन्त्र

त्वामशोककराभीष्ट मधुमाससमुद्भव।
पिवामि शोकसंतप्तो मामशोकं सदाकुरु।।

### वटसावित्री मन्त्र-

सावित्रीयं मया दत्ता विधिना सती।
बाह्मणः प्रीणनार्थाय ब्राह्मणः प्रतिगृह्यताम्।।

### पुलिकमूलबन्धन-मंत्र

शुचिसितदिन करवारे करमूले बद्धपुलिकमूलस्य।
नागारेरिव नागाः प्रयान्ति किल दूरतस्यतस्य।।
(एवं कृते सर्पभयं न जायते। चातुर्मास्य व्यतीते तु मुक्तिस्तस्य कराद् भवेत् इत्यनेन कार्त्तिकशुक्ल द्वादश्यां तस्य करान्मुक्तिः।)

### अनन्त-धारणमन्त्र

अनन्त संसार महासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धर वासुदेव।
अनन्तरूपे विनियोजयस्व ह्यनन्त रूपाय नमो नमस्ते।।

### उल्काभ्रमण-मन्त्र

शस्त्राशस्त्रहतानां च भूतानां भूतदर्शयोः। उज्ज्वलज्योतिषादेहं निर्दहे व्योम वह्निना।। अग्निदग्धाश्च ये जीवां येऽप्यदग्धाः कुले मम। उज्ज्वलज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमां गतिम्।। यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये । उज्ज्वलज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तो व्रजन्तु ते।।

### घटदान विधि

ॐ वारिपूर्णघटाय नमः३। ॐ ब्राह्मणाय नमः३। ॐ अद्य अमुके मास्यमुके पक्षे अमुक तिथौ मेषार्क संक्रमण प्रयुक्तपुण्यकाले अमुकगोत्रस्य पितुः (गोत्राया मातु) अमुक शर्मा (देव्याः) स्वार्गकामः (कामा) इमं वारिपूर्ण घट यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय अहंददे। **दक्षिणा-** ॐ अद्यकृतैतद् वारिपूर्णघटदान प्रतिष्ठार्थम् एतावद्द्रव्यमूल्यक हिरण्यमग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहंददे।



## संपुटित पाठ मे होम आहुति विचार-

संपुटित पाठ होम में किसी आचार्य का मत हैं **संपुटे हवनं नास्ति** के अनुसार ७०० होम आहुति होगी तो किसी आचार्य के अनुसार संपुट होम आहुति संख्या २१०० होगी। कर्मठगरु- **सम्पुटे हवनं नास्ति प्रत्यहेऽपि तथैव च। नानार्थसिद्धिवैकल्पे होमन्तु विपुलं चरेत्।।** अर्थात् संपुट का हवन नहीं करे परन्तु बहुधा करते हैं, **दुर्गाकल्पतरु एवं अनुष्ठान प्रकाश** मे आहुति संख्या २१०० स्पष्ट लिखी गई हैं। यथा-

**प्रथमश्रावणकृष्णपक्षः** शक १६४५,संवत् २०८०,सन् १४३१,उत्तरायण,उत्तरगोलः,वर्षा ऋतुः ,
**शुद्ध** पश्चिमे कालः, **शुद्ध, दिनांक ४ जुलाईतः १७ जुलाई यावत् सन् २०२३ ई।**

| तिथयः | | तिथिमान | | नक्षत्रमान | | योग | | चन्द्रराशि | | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः | द. प. | राशिः | घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| १ | मं. | २४ ।४३ | दि.३ ।०५ | पूर्वाषाढा | दि.१० ।११ | ऐन्द्र | २२ ।४६ | धनु | दि.३ ।४८ | ५ ।१२ | ६ ।४८ | १६ | ४ | **मैथिलनववर्षारम्भः**,श्रावणेवर्जयेच्छाकम्। अशून्यशयन२व्रत,शिववास-अग्निवास दि.३ ।५ यावत् ततः अमृतयोग← |
| २ | बु. | १८ ।५० | दि.१२ ।४४ | उत्तराषा | दि.८ ।४१ | वैधृति | १५ ।२५ | मकर | अहोरात्र | ५ ।१२ | ६ ।४८ | २० | ५ | अग्निवास दि.१२ ।४४ उपरि। सिद्धियोगः-पूर्व-दक्षिणयात्रा दि.१२ ।४४ यावत् ततः मृत्युयोगः। **गृहारंभ,विपणि** |
| ३ | गु. | १२ ।४१ | दि.१० ।१७ | श्रवण | दि.७ ।०३ | विष्कुम्भ | ०७ ।५२ | मकर | सं.६ ।१३ | ५ ।१३ | ६ ।४७ | २१ | ६ | गणाधिप४व्रत,**गृहारंभ दि.१० ।१७या.**,अग्निवासःदि.१० ।१७या.ततः शिववास,**पञ्चकारम्भः(भदवा) दि.७ ।३उपरि** |
| ४ | शु. | ६ ।२८ | प्रा.७ ।४८ | धनिष्ठा | प्रा.५ ।२२ | प्रीति | ०० ।११ | कुम्भ | अहोरात्र | ५ ।१३ | ६ ।४७ | २२ | ७ | **शतभिषानक्षत्र रा.३ ।३५। मौना५,नागपंचमी५, मनसादेवीपूजनं,मधुश्रावणीपूजारम्भः,गृहारम्भ्रः पंचमम्यां,** |
| ५ | श. | ०० ।२१ | प्रा.५ ।२१ | पूर्वाभाद्र | रा.२ ।१५ | सौभाग्य | ४५ ।२२ | कुम्भ | रा.८ ।३७ | ५ ।१३ | ६ ।४७ | २३ | ८ | **षष्ठीतिथि रा.३ ।०७।** शिववासः प्रा.५५ ।२१ या.। शिववासः, अग्निवासः प्रा.७ ।४८ उपरि। |
| ७ | र. | ४६ ।२२ | रा.१२ ।५७ | उत्तराभाद्र | रा.१२ ।५७ | शोभन | ३८ ।२७ | मीन | अहोरात्र | ५ ।१३ | ६ ।४७ | २४ | ९ | **श्रीशीतला सप्तमी,** अग्निवासः। भद्रा २१ ।५९ यावत्, **विपणि,** दग्धतिथि रा.१२ ।५७ उपरि |
| ८ | चं. | ४४ ।५२ | रा.११ ।०६ | रेवती | रा.११ ।५७ | अतिगण्ड | ३२ ।०७ | मीन | रा.११ ।५७ | ५ ।१३ | ६ ।४७ | २५ | १० | सोमवारीव्रत, शिववासः, **पञ्चक(भदवा) समाप्तिः रा.११ ।५७ उपरि।** पश्चिम-उत्तरयात्रा, यानादिचालंन। |
| ९ | मं. | ४१ ।११ | रा.६ ।४२ | अश्विनी | रा.११ ।१८ | सुकर्मा | २६ ।३८ | मेष | अहोरात्र | ५ ।१४ | ६ ।४६ | २६ | ११ | मन्वादि,सर्वार्थसिद्धियोगः,अग्निवासः। उत्तरां विनायात्रा। ←**पूर्वयात्रा दि.३ ।०५उपरि,यानादिचालंन दि.१० ।११उ.** |
| १० | बु. | ३६ ।३१ | रा.६ ।०२ | भरणी | रा.११ ।०२ | धृति | २१ ।३७ | मेष | प्रा.५ ।०६ | ५ ।१४ | ६ ।४६ | २७ | १२ | भद्रा१० ।२१ उ.। **पुनर्वसौ रवि ५७ ।७ रा.४ ।४,भद्रा १२ ।४१ यावत्, दक्षिणां विनायात्रा दि.७ ।३ यावत्।** |
| ११ | गु. | ३७ ।०४ | रा.८ ।०३ | कृत्तिका | रा.११ ।१६ | शूल | १७ ।४० | वृष | अहोरात्र | ५ ।१४ | ६ ।४६ | २८ | १३ | **कामदाएकादशी ११ व्रत सर्वेषाम्।** शिववासः, अग्निवासः। पूर्वयात्रा |
| १२ | शु. | ३६ ।५३ | रा.७ ।५९ | रोहिणी | रा.११ ।५९ | गण्ड | १४ ।४१ | वृष | अहोरात्र | ५ ।१४ | ६ ।४६ | २९ | १४ | दूर्वादलेन पारण,**शिववासः। ♎कर्के रविः२९ ।५९, याम्यायनसंक्रान्तिपुण्यकालःपुण्यकालः दि.१० ।५७ उपरि❖** |
| १३ | श. | ३८ ।०० | रा.८ ।२७ | मृगशिरा | रा.१ ।१३ | वृद्धि | १२ ।१० | वृष | दि१२ ।३७ | ५ ।१५ | ६ ।४५ | ३० | १५ | **प्रदोष१३ व्रत,** अग्निवासः। भद्रा ३८ ।०० उपरि, पूर्वां विनायात्रा रा.१ ।१३ यावत्, यानादिचालंन |
| १४ | र. | ४० ।१६ | रा.६ ।२२ | आर्द्रा | रा.२ ।५४ | ध्रुव | ११ ।४६ | मिथुन | अहोरात्र | ५ ।१५ | ६ ।४५ | ३१ | १६ | **प्रदोष१४ व्रत,अग्निवास।** मासान्तः। ❖दक्षिणायनारम्भः,वर्षा ऋतुः, ने.श्रावणमासारम्भः,मलमासारम्भः, |
| ३० | चं. | ४३ ।४६ | रा.१० ।४५ | पुनर्वसु | रा.शे५ ।०१ | व्याघात | ११ ।४५ | मिथुन | रा१० ।२६ | ५ ।१५ | ६ ।४५ | १ | १७ | **श्रावणी अमावस्या स्नानदानश्राद्धादौ।** हरियाली अमावस्या। सोमवत्ती अमावस्या,सोमवारीव्रत, शिववासः।♎ |

श्रावण मास भागवान् शिव के विशेष मास होने के कारण, इस मास में शिववास का विचार करना चरूरी नही है।

## प्रथम-श्रावणशुक्लपक्षः(अशुद्ध) शक १६४५, संवत् २०८०, सन् १४३१, दक्षिणायण,उत्तरगोलः, वर्षा ऋतुः,पश्चिमे कालः,**अशुद्ध, दिनांक १८ जुलाईतः १ अगस्त यावत् सन् २०२३ ई।**



| तिथयः | दिनानि | तिथिमानानि द. प. | घं. मि. | नक्षत्रमान नक्षत्राणि | घं. मि. | योगः योगाः | द. प. | चन्द्रराशि राशिः | घ. मि. | सूर्योदय घं.मि. | सूर्यास्त घं.मि. | दिनांक गते | ता | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | मं. | ४८।०५ | रा.१२।२६ | पुष्य | अहोरात्र | हर्षण | १२।३० | कर्क | अहोरात्र | ५।१५ | ६।४५ | २ | १८ | **मासादिः, भौमव्रतम् गौरीपूजा। मृत्युयोगः।** उत्तरां विनायात्रा द्वितीयायाम् रा.१२।२६ उपरि |
| २ | बु. | ५२।५६ | रा.२।२७ | पुष्य | प्रा.७।२६ | वज्र | १३।४७ | कर्क | अहोरात्र | ५।१६ | ६।४४ | ३ | १९ | **चन्द्रदर्शनं,** सौम्यश्रृंग सुभिक्षकरं,शिववासः, अग्निवासः, सिद्धियोगः। उत्तरां विनायात्रा पुष्ये प्रा.७।२६ यावत् |
| ३ | गु. | ५८।०२ | रा.४।२६ | आश्लेषा | दि.१०।२ | सिद्धि | १५।२५ | कर्क | दि.१०।२ | ५।१६ | ६।४४ | ४ | २० | अमृतयोगः। |
| ४ | शु. | ६०।०० | अहोरात्र | मघा | दि१२।३८ | व्यतीपात | १७।०२ | सिंह | अहोरात्र | ५।१६ | ६।४४ | ५ | २१ | श्रीगणेश ४ व्रतं, अमृतयोगः, अग्निवासः। **पुष्ये रविः ००।५७ प्रा.५५।३६,** भद्रा ३०।२५ उपरि |
| ४ | श. | ०२।४६ | प्रा.६।२४ | पूर्वाफा | दि.३।०७ | वरीयान् | १८।२४ | सिंह | रा.६।३६ | ५।१७ | ६।४३ | ६ | २२ | अग्निवासः प्रा.६।२४ यावत् ततः शिववासः, सिद्धियोगः प्रा.६।२४ यावत् ततः मृत्युयोगः। भद्रा २।४६ यावत् |
| ५ | र. | ०६।५७ | दि.८।०४ | उत्तराफा | सं.५।१६ | परिघ | १६।११ | कन्या | अहोरात्र | ५।१७ | ६।४३ | ७ | २३ | शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगः दि.८।०४ यावत् ततः मृत्युयोगः। सर्वार्थसिद्धियोगः सं.५।१६ उपरि। |
| ६ | चं. | १०।०८ | दि.६।२१ | हस्त | रा.७।०२ | शिव | १६।११ | कन्या | अहोरात्र | ५।१८ | ६।४२ | ८ | २४ | शिववासः दि.६।२१ यावत्, सिद्धियोगः दि.६।२१ यावत् ततः मृत्युयोगः। दक्षिणयात्रा षष्ठ्यां दि.६।२१ यावत्,। |
| ७ | मं. | १२।११ | दि.१०।१० | चित्रा | रा.८।१६ | सिद्ध | १८।२० | कन्या | प्रा७।४० | ५।१८ | ६।४२ | ९ | २५ | अग्निवासः,अमृतयोगःदि.१०।१०यावत् ततःसिद्धियोगः। पूर्व-दक्षिणयात्रा प्रा.७।४०यावत् ततःदक्षिण-पश्चिमयात्रा |
| ८ | बु. | १२।५७ | दि.१०।२६ | स्वाती | रा.६।०७ | साध्य | १६।२२ | तुला | अहोरात्र | ५।१८ | ६।४२ | १० | २६ | शिववासः दि.१०।२६ उपरि। मृत्युयोगः दि.१०।२६ यावत्। |
| ९ | गु. | १२।२४ | दि.१०।१६ | विशाखा | रा.६।२४ | शुभ | १३।२३ | तुला | दि.३।३१ | ५।१९ | ६।४१ | ११ | २७ | शिववासःदि.१०।१६ यावत्,अग्निवासः,मृत्युयोगः दि.१०।१६ यावत् ततः सिद्धियोग-पश्चिमयात्रा। |
| १० | शु. | १०।३६ | दि.६।३५ | अनुराधा | रा.६।१२ | शुक्ल | ०६।२५ | वृश्चिक | अहो. | ५।१९ | ६।४१ | १२ | २८ | सिद्धियोगः दि.६।३५ उपरि, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.६।१२ यावत्। भद्रा ७।४५ यावत्, उत्तरयात्रा |
| ११ | श. | ०७।४५ | दि.८।२६ | ज्येष्ठा | रा.८।३५ | ब्रह्म | ४।३५ | वृश्चि | रा८।३५ | ५।२० | ६।४० | १३ | २९ | **पुरुषोत्तम एकादशी ११ व्रतं सर्वेषां,**अग्निवासः,अमृतयोगःदि.८।२६ यावत् ततः शिववास । पश्चिम-उत्तरयात्रा |
| १२ | र. | ०३।५२ | प्रा.६।२२ | मूल | रा.७।३६ | वैधृति | ५२।३६ | धनु | अहोरात्र | ५।२० | ६।४० | १४ | ३० | त्रयोदशीतिथि५५।१५। दूर्वादलेनपारणम्। श्रीधर१२। **प्रदोष** १३ व्रतं, शिववासः,अग्निवास,सर्वार्थसिद्धियोग❖ |
| १४ | च. | ५३।४४ | रा.२।५१ | पूर्वाषाढा | रा.६।२४ | विष्कुम्भ | ४५।४१ | धनु | रा.१२।२ | ५।२१ | ६।३९ | १५ | ३१ | **प्रदोष १४ व्रतं।** सोमवारव्रत, रवियोगः। ❖सिद्धियोग प्रा.६।२२ उपरि। पूर्व-उत्तरयात्रा। |
| १५ | मं. | ४७।५२ | रा.१२।३० | उत्तराषाढा | दि.४।५७ | प्रीति | ३८।२२ | मकर | अहोरात्र | ५।२२ | ६।३८ | १६ | १ | **अगस्त ८। पुरुषोत्तम पूर्णिमा स्नानदान व्रतादौ।** अग्निवासः। भद्रा २०।४८ यावत्, पूर्व-दक्षिणयात्रा |

## द्वितीय श्रावणकृष्णपक्ष(अशुद्ध) शक१९४५,संवत्२०८०, सन् १४३१,दक्षिणायण, उत्तरगोलः, वर्षा ऋतुः , पश्चिमे कालः, दिनांक २ अगस्ततः १६ अगस्त यावत् सन् २०२३ ई.



| तिथय दिनानि | | तिथिमान द. प. | घं. मि. | नक्षत्रमान नक्षत्राणि | घं. मि. | योग योगाः | द. प. | चन्द्रराशि राशिः | घ. मि. | सूर्योदय घं.मि. | सूर्यास्त घं.मि. | दिनांक गते | ता | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | बु. | ४१।४४ | रा.१०।०४ | श्रवण | दि.३।२० | आयुष्य | ३०।४६ | मकर | रा.२।२६ | ५।२२ | ६।३८ | १७ | २ | शिववासः,^८अमृतयोगः, **पञ्चकारम्भः(भदवा) दि.३।२० उपरि।** उत्तरां विनायात्रा दि.३।२० यावत्। |
| २ | गु. | ३५।३२ | रा.७।३५ | धनिष्ठा | दि.१।३६ | सौभाग्य | २३।०७ | कुम्भ | अहोरात्र | ५।२३ | ६।३७ | १८ | ३ | अग्निवासः। **शुक्रवार्धक्यारम्भः ४३।३० उपरि।** पश्चिमयात्रा |
| ३ | शु. | २६।२६ | सं.५।०६ | शतभिषा | दि.१२।०० | शोभन | १५।३२ | कुम्भ | रा.४।५१ | ५।२३ | ६।३७ | १९ | ४ | **गणाधिप४ व्रत,** अमृतयोग-शिववासः सं.५।६ उपरि। **आलश्लेषायां रविः प्रा.६।०२।** भद्रा२।२६ततः २६।२६या. |
| ४ | श. | २३।४० | दि.२।५२ | पूर्वाभाद्र | दि.१०।२६ | अतिगण्ड | ८।०६ | मीन | अहोरात्र | ५।२४ | ६।३६ | २० | ५ | शिववासः, अग्निवासः, सिद्धियोगः दि.२।५२ यावत् ततः मृत्युयोगः। **पश्चिमास्तः शुक्रः ४३।३० रा.१२।०४।** |
| ५ | र. | १८।२५ | दि.१२।४७ | उत्तराभाद | दि.९।०८ | सुकर्मा | १।०५ | मीन | अहोरात्र | ५।२५ | ६।३५ | २१ | ६ | धृतियोग५३।३१, अमृतयोगः-शिववासःदि.१२।४७ यावत् ततः अग्निवासः,उत्तरयात्रा पञ्चम्यां दि.१२।४७यावत्, |
| ६ | चं. | १३।३८ | दि.१०।५२ | रेवती | दि.८।०३ | शूल | ४८।४६ | मीन | प्रा.८।०३ | ५।२५ | ६।३५ | २२ | ७ | सिद्धियोगः-अग्निवासः दि.१०।५२यावत् ततः मृत्युयोगः,**पञ्चक(भदवा) समाप्तिःदि.८।३ उपरि।** सोमवारीव्रत, |
| ७ | मं. | १०।०६ | दि.९।२६ | अश्विनी | दि.७।१६ | गण्ड | ४३।४४ | मेष | अहोरात्र | ५।२६ | ६।३४ | २३ | ८ | शिववासः-अग्निवासः दि.९।२६ उपरि। अमृतयोगः दि.९।२६ या.। उत्तरां विनायात्रा दि.७।१६ यावत् |
| ८ | बु. | ७।२६ | दि.८।२४ | भरणी | प्रा.६।५७ | वृद्धि | ३९।३१ | मेष | दि.१२।५८ | ५।२६ | ६।३४ | २४ | ९ | शिववासः-अग्निवासःदि.८।२४ यावत्। पश्चिम-उत्तरयात्रा। पश्चिम-उत्तरयात्रा दि.८।३ यावत् ततः |
| ९ | गु. | ५।५५ | दि.७।४६ | कृत्तिका | दि.७।०४ | ध्रुव | ३६।२० | वृष | अहोरात्र | ५।२७ | ६।३३ | २५ | १० | अग्निवासः दि.७।४६ उपरि। मृत्युयोगः दि.७।४६ यावत् ततः सिद्धियोगः। पूर्वयात्रा दशम्यां दि.७।४६ उपरि |
| १० | शु. | ५।३८ | दि.७।४२ | रोहिणी | दि.७।३६ | व्याघात | ३४।०७ | वृष | रा.८।१२ | ५।२७ | ६।३३ | २६ | ११ | अग्निवासः दि.७।४२ यावत् ततः शिववासः। पूर्व-दक्षिणयात्रा दि.७।३६ यावत् ततः पश्चिमां विनायात्रा |
| ११ | श. | ६।४२ | दि.८।०८ | मृगशिरा | दि.८।४६ | हर्षण | ३२।५६ | मिथुन | अहोरात्र | ५।२८ | ६।३२ | २७ | १२ | **पुरुषोत्तमएकादशी११ व्रत सर्वेषाम्।** शिववासः,अग्निवासः दि.८।०८ उपरि। पूर्वां विनायात्रा दि.४।४६ यावत् |
| १२ | र. | ८।५७ | दि.९।०३ | आर्द्रा | दि.१०।२१ | वज्र | ३२।४० | मिथुन | अहोरात्र | ५।२९ | ६।३१ | २८ | १३ | दूर्वादलेन पारण, **प्रदोष१३ व्रत,** शिववासः दि.९।०३ यावत्, दक्षिणयात्रा पुनर्वसौ दि.१०।२१ उपरि |
| १३ | च. | १२।२३ | दि.१०।२६ | पुनर्वसु | दि.१२।२३ | सिद्धि | ३३।१५ | मिथुन | प्रा.६।०४ | ५।२९ | ६।३१ | २९ | १४ | सोमवारीव्रत, **प्रदोष१४ व्रत,**अग्निवासः,सर्वार्थसिद्धियोगःदि.१२।२३ उपरि। सोवमारीव्रत,दक्षिण-पश्चिम यात्रा |
| १४ | म. | १६।४० | दि.१२।१० | पुष्य | दि.२।४४ | व्यतीपा | ३४।२४ | कर्क | अहोरात्र | ५।३० | ६।३० | ३० | १५ | **शिववास दि.१२।१० उपरि।** भारतीयस्वतन्त्रता दिवसः। **पूर्वोदितः शुक्रः।** उत्तरां विनायात्रा पुष्ये। |
| ३० | बु. | २१।३५ | दि.२।०६ | आश्लेषा | दि.५।१८ | वरीयान् | ३५।५७ | कर्क | सं.५।१८ | ५।३१ | ६।२९ | ३१ | १६ | **मासान्तः,श्रावणीअमावस्या** स्नानदानश्राद्धादौ। शिववास दि.२।६ यावत्, अग्निवासः२।०६ यावत्,**मलमासान्त।** |

**द्वितीयश्रावणशुक्लपक्षः शुद्ध** शक १९४५, संवत् २०८०, सन् १४३१, दक्षिणायण, उत्तरगोलः, वर्षा ऋतुः, उत्तरे कालः,दिनांक १७ अगस्त तः ३१ अगस्त यावत् सन् २०२३ ई।

| तिथयः | | तिथिमानानि | | नक्षत्रमान | | योगः | | चन्द्रराशि | | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः | द. प. | राशिः | घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| १ | गु. | २६ ।३६ | दि.४ ।१० | मघा | रा.७ ।५६ | परिघ | ३७ ।३६ | सिंह | अहोरात्र | ५ ।३१ | ६ ।२६ | ३२ | १७ | दोलोत्सवारम्भः(झूलन),चन्द्रदर्शनं। मघायां सिंहे च रविः ५८।०२ रा.४ ।४४, मु.३० समा समताकरं। |
| २ | शु. | ३१ ।३२ | सं.६ ।०८ | पूर्वाफाल्गु | रा.१० ।२६ | शिव | ३८ ।५७ | सिंह | रा.१० ।२६ | ५ ।३२ | ६ ।२८ | १ | १८ | स्वामीकरपात्रि जयन्ती। विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालः दि.१२ ।००यावत् पुण्याहः,अशुद्धारम्भ। ने.भाद्रमासारम्भ। |
| ३ | श. | ३५ ।४४ | रा.७ ।५० | उत्तराफाल्गु | रा.१२ ।४० | सिद्ध | ३६ ।५० | कन्या | अहोरात्र | ५ ।३३ | ६ ।२७ | २ | १९ | मधुश्रावणीव्रत समाप्तिः,स्वर्णगौरी व्रतं,अग्निवासः। शुक्रवालत्वनिवृतिः५० ।३१ पूर्व-उत्तरयात्रा पूर्वाफाल्गुन्याम्। |
| ४ | र. | ३९ ।०० | रा.९ ।०९ | हस्त | रा.०२ ।३२ | साध्य | ३६ ।५४ | कन्या | अहोरात्र | ५ ।३३ | ६ ।२७ | ३ | २० | श्रीगणेश४ व्रतं,सर्वार्थसिद्धियोगः। भाद्रीरविव्रतारम्भः। |
| ५ | चं. | ४१ ।१० | रा.१० ।०२ | चित्रा | रा.०३ ।५६ | शुभ | ३६ ।०६ | कन्या | दि.३ ।१४ | ५ ।३४ | ६ ।२६ | ४ | २१ | सोमवारव्रत,नागपञ्चमी नागपूजनं। ऋग्वेदिनांमुपाकर्म(श्रावणी)। शिववासः, अग्निवासः, अमृतयोगः,दक्षिणयात्रा। |
| ६ | मं. | ४२ ।०५ | रा.१० ।२४ | स्वाती | रा.०४ ।५० | शुक्ल | ३७ ।१८ | तुला | अहोरात्र | ५ ।३४ | ६ ।२६ | ५ | २२ | शिववासः,मृत्युयोगःरा.१० ।२४ यावत् ततः दक्षिण-पश्चिमयात्रा। |
| ७ | बु. | ४१ ।४१ | रा.१० ।१५ | विशाखा | रा.शे५ ।१४ | ब्रह्म | ३४ ।३० | तुला | रा.१० ।४४ | ५ ।३५ | ६ ।२५ | ६ | २३ | सिद्धियोगः। अग्निवासः। भद्रा४१ ।४१ उपरि,दक्षिण-पश्चिमयात्रा |
| ८ | गु. | ४० ।०२ | रा.९ ।३६ | अनुराधा | रा.शे५ ।०९ | ऐन्द्र | ३० ।४० | वृश्चिक | अहोरात्र | ५ ।३६ | ६ ।२४ | ७ | २४ | अमृतयोगः,सर्वार्थसिद्धियोगः। भद्रा १० ।५१ यावत्, पश्चिम-उत्तरयात्रा। |
| ९ | शु. | ३७ ।१५ | रा.८ ।३१ | ज्येष्ठा | रा.०४ ।३३ | वैधृति | २५ ।५७ | वृश्चिक | रा४ ।३३ | ५ ।३७ | ६ ।२३ | ८ | २५ | शिववासः,अग्निवासः,अमृतयोगः,दग्धतिथि दशमी रा.८ ।३१ उपरि |
| १० | श. | ३३ ।२८ | रा.७ ।०० | मूल | रा.०३ ।४७ | विष्कुम्भ | २० ।२३ | धनु | अहोरात्र | ५ ।३७ | ६ ।२३ | ९ | २६ | मृत्युयोगःरा.७ ।००यावत्। ← संस्कृतदिवसः,दोलोत्सवान्त, हयग्रीवावतारः पूर्वाफाल्गुन्यां रविः ४८ ।४०। |
| ११ | र. | २८ ।५० | सं.५ ।१० | पूर्वाषाढा | रा.०२ ।३५ | प्रीति | १४ ।०८ | धनु | अहोरात्र | ५ ।३८ | ६ ।२२ | १० | २७ | एकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्। मृत्युयोगः सं.५ ।१० यावत्,भाद्री रविव्रत। पूर्व-उत्तरयात्रा सं.५ ।१० यावत् |
| १२ | च. | २३ ।३४ | दि.३ ।०४ | उत्तराषा | रा.०१ ।०९ | आयुष्यमान | ७ ।१७ | धनु | दि.८ ।१४ | ५ ।३९ | ६ ।२१ | ११ | २८ | सौ.यो.५२ ।४०,दूर्वादलेनपारणम्। श्रीधर१२। प्रदोष१३ व्रत, शिववासः,अग्निवासः। |
| १३ | म. | १७ ।४५ | दि.१२ ।४५ | श्रवण | रा.११ ।१० | शोभन | ५२ ।२३ | मकर | अहोरात्र | ५ ।३९ | ६ ।२१ | १२ | २९ | प्रदोष१४ व्रतं,शिववास दि.१२ ।४५यावत्,सिद्धियोग। पञ्चकारम्भः(भदवा) रा.११ ।३४ उपरि। उत्तरां विनायात्रा। |
| १४ | बु. | ११ ।४० | दि.१० ।२० | धनिष्ठा | रा.०९ ।२९ | अतिगण्ड | ४४ ।३७ | मकर | दि.२ ।४० | ५ ।४० | ६ ।२० | १३ | ३० | व्रतादौ पूर्णिमा,अग्निवास। भद्रा११ ।४० .तः भद्रा- ३८ ।३४ यावत् |
| १५ | गु. | ५ ।२८ | दि.७ ।५३ | शतभिषा | रा.०७ ।५० | सुकर्मा | ३६ ।५६ | कुम्भ | अहोरात्र | ५ ।४१ | ६ ।१९ | १४ | ३१ | प्रतिपदातिथिमानं- ५३ ।५६ रा.३ ।१५, श्रावणी१५ पूर्णिमा, स्नानदानादि उपाकर्म, रक्षाबन्धनम् सूर्योदयात् ← |

# भाद्रकृष्णपक्षः शक १६४५, संवत् २०८०, सन् १४३१, दक्षिणायण, उत्तरगोलः, वर्षा ऋतुः, उत्तरे कालः, दिनांक १ सितम्बर तः १५ सितम्बर यावत् सन् २०२३ ई।



| तिथय | | तिथिमान | | नक्षत्रमान | | योग | | चन्द्रराशि | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः | द. प. | राशिः घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| २ | शु. | ५३।४१ | रा.३।१० | पूर्वाभाद | सं.६।१६ | धृति | २६।२६ | मीन अहोरात्र | ५।४२ | ६।१८ | १५ | सित | दधिभाद्रपदे त्यजेत्। **अशून्यशयन २ व्रत**। कज्जलीनिमित्तकं रात्रौ जागरणं(रतजग्गा)। अग्निवासः, मृत्युयोगः। |
| ३ | श. | ४८।१७ | रा.१।०० | उत्तराभाद | दि.४।५१ | शूल | २२।१३ | मीन अहोरात्र | ५।४२ | ६।१८ | १६ | २ | कजली(**कजरा**)३ व्रत, गोपूजा३, विशालाक्षीपूजनं३। भद्रा २०।५६ तः भद्रा ४८।१७, पश्चिम-उत्तरयात्रा |
| ४ | र. | ४३।५१ | रा.११।१५ | रेवती | दि.३।४१ | गण्ड | १५।३३ | मीन दि.३।४१ | ५।४३ | ६।१७ | १७ | ३ | **श्रीविनायक**४ व्रतं, भाद्रीरविव्र०। शिववासः, **पञ्चक(भदवा) समाप्तिः दि.३।४१ उपरि।** |
| ५ | चं. | ४०।०६ | रा.६।४७ | अश्विनी | दि.२।५४ | वृद्धि | ६।३३ | मेष अहोरात्र | ५।४४ | ६।१६ | १८ | ४ | रक्षापञ्चमी५। शिववासः,अग्निवासः, अमृतयोगः। पूर्वां विनायात्रा अश्विन्यां दि.२।५४ यावत् |
| ६ | मं. | ३७।२४ | रा.८।४२ | भरणी | दि.२।२६ | ध्रुव | ४।१६ | मेष रा.८।२५ | ५।४५ | ६।१५ | १९ | ५ | हलधर६ व्रत(**ललहीछठ**)। मृत्युयोगः रा.८।४२ यावत्। भद्रा ३७।२४ उपरि। |
| ७ | बु. | ३५।५२ | रा.८।०६ | कृत्तिका | दि.२।२५ | हर्षण | ५६।२० | वृष अहोरात्र | ५।४६ | ६।१४ | २० | ६ | शीतलासप्तमी। **श्रीकृष्णजन्माष्टमी ८ व्रतं**,श्रीकृष्णपूजनोत्सवः, **मोहरात्रिर्निशीथे शक्तिपूजनं**,श्रीकृष्णावतार← |
| ८ | गु. | ३५।३३ | रा.७।५६ | रोहिणी | दि.२।५२ | वज्र | ५३।५१ | वृष प्रा.५।२१ | ५।४६ | ६।१४ | २१ | ७ | **कृष्णाष्टमीव्रतं**,(उदयव्यापिनी रोहिणीमतावलम्ब वैष्णवानां श्रीकृष्णाष्टमी व्रत),शिववासः, अमृतयोगः। |
| ९ | शु. | ३६।३६ | रा.८।२५ | मृगशिरा | दि.३।५१ | सिद्धि | ५२।२६ | मिथु अहोरात्र | ५।४७ | ६।१३ | २२ | ८ | कृष्णाष्टमीव्रतपारणा,अमृतयोगः,अग्निवासः। ←सर्वार्थसिद्धियोगःदि.२।२५ उपरि। भद्रा ६।३८ यावत्। |
| १० | श. | ३८।५२ | रा.६।२० | आर्द्रा | सं.५।२० | व्यतीपात | ५१।५१ | मिथु अहोरात्र | ५।४८ | ६।१२ | २३ | ९ | मृत्युयोगः,भद्रा ७।४४ तः भद्रा ३८।५२ यावत्, दक्षिण-पश्चिमयात्रा रा.६।२० उपरि। |
| ११ | र. | ४२।१८ | रा१०।४४ | पुनर्वसु | रा.७।१६ | वरीयान् | ५२।१२ | मिथु दि.१२।४७ | ५।४९ | ६।११ | २४ | १० | **जयाएकादशी११ व्रत सर्वेषाम्**। भाद्रीरविव्रत, शिववासः, अग्निवासः, मृत्युयोगः रा.१०।४४ यावत्। |
| १२ | च. | ४५।३६ | रा.१२।३ | पुष्य | रा.६।३२ | परिघ | ५३।१३ | कर्क अहोरात्र | ५।४९ | ६।११ | २५ | ११ | कुष्माण्डेनपारणा, शिववासः,मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा.६।३३ यावत्। |
| १३ | म. | ५१।३६ | रा.२।२८ | आश्लेषा | रा.१२।०४ | शिव | ५४।३८ | कर्क रा.१२।०४ | ५।५० | ६।१० | २६ | १२ | **प्रदोष १३,** सिद्धियोगः, अग्निवासः। भद्रा ५१।३६ उपरि |
| १४ | बु. | ५६।४५ | रा.४।३३ | मघा | रा.०२।४१ | सिद्ध | ५६।१२ | सिंह अहोरात्र | ५।५१ | ६।०९ | २७ | १३ | **प्रदोश**१४ व्रतं, अघोरचतुर्दशी। **दुर्भर१४,** श्रीभैरवपूजनं, द्वापरयुगादिः। भद्रा २४।१० यावत् |
| ३० | गु | ६०।०० | अहोरात्र | पूर्वाफा | रा.५।०४ | साध्य | ५७।३१ | सिंह अहोरात्र | ५।५२ | ६।०८ | २८ | १४ | श्राद्धादौ पुण्यतमा, **कुशीअमावस्या,** कुशोत्पाटन ॐ हुं फट् इति मन्त्रेण कुशग्रहणं,**उत्तराफाल्गुन्यां रवि ३३।१०** |
| ३० | शु. | १।३४ | प्रा.६।३० | उत्तराफा | अहोरात्र | शुभ | ५८।२४ | सिंह दि.११।४२ | ५।५३ | ६।०७ | २९ | १५ | प्रतिपदातिथिमानं ५७।२६,भाद्रीअमावस्या ३०, शिववासः प्रा.६।३० यावत् ततः सिद्धियोगः। |

| तिथयः | | तिथिमानानि | | नक्षत्रमान | | योगः | चन्द्रराशि | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | **भाद्रशुक्लपक्षः** शक १६४५, संवत् २०८०, सन् १४३१, दक्षिणायण,उत्तरगोलः,शरद् ऋतुः ,उत्तरे काल, |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः द. प. | राशिः घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | तिं.२ तः शुद्ध, **दिनांक १६ सितम्बर तः २६ सितम्बर यावत् सन् २०२३ ई।** |
| १ | श. | ०६।०१ | दि.८।१७ | उत्तराफा | दि.७।३३ | शुक्ल ५८।३६ | कन्या अहोरात्र | ५।५३ | ६।०७ | ३० | १६ | **चन्द्रदर्शनम्।** मु.३० समा समताकरम्। शिववासः दि.।१७ उपरि, अमृतयोगः दि.८।१७ यावत्। दक्षिणयात्रा |
| २ | र. | ०६।२५ | दि.६।४० | हस्त | दि.६।३१ | ब्रह्म ५७।५२ | कन्या अहोरात्र | ५।५४ | ६।०६ | ३१ | १७ | **मासान्तः, कन्यायां रविः ५८।१० रा.शे.५।१०,** शिववासः दि.६।४० यावत्, पूर्व-दक्षिणयात्रा,सर्वार्थसिद्धियोग। |
| ३ | चं. | ११।४३ | दि.१०।३६ | चित्रा | दि.११।०२ | ऐन्द्र ५६।१८ | कन्या प्रा.७।२५ | ५।५५ | ६।०५ | १ | १८ | **हरितालिका३(तीज) व्रतं,चतुर्थीचन्द्रपूजनं(चौरचन),शडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो दि.१२।०० यावत् पुण्याहः** ← |
| ४ | मं. | १२।३८ | दि.१०।५६ | स्वाती | दि.१२।०४ | वैधृति ५३।४१ | तुला अहोरात्र | ५।५६ | ६।०४ | २ | १९ | मासादिः,श्रीगणेशपूजारम्भ। ← **विश्वकर्मापूजा।** ने.आश्विनमासारम्भः, शरद्-ऋतुः,दक्षिणयात्रा। |
| ५ | बु. | ११।२७ | दि.१०।३० | विशाखा | दि.१२।३४ | विष्कुम्भ ५०।०३ | तुला प्रा.६।२२ | ५।५६ | ६।०४ | ३ | २० | **ऋषिपञ्चमी,**सप्तर्षिपूजनं,पञ्चगव्यप्राशनञ्च। शिववासः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१२।३४ उपरि। |
| ६ | गु. | ११।५६ | दि.१०।४३ | अनुराधा | दि.१२।३६ | प्रीति ४५।२८ | वृश्चिक अहोरात्र | ५।५७ | ६।०३ | ४ | २१ | श्रीलोलार्क६ व्रतं, सूर्यपूजनं,शिववासःदि.१०।४३ यावत्,सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१२।३६ यावत्। पश्चिम-उत्तरयात्रा। |
| ७ | शु. | ८।१३ | दि.६।१५ | ज्येष्ठा | दि.१२।१० | आयुष्य ४०।०३ | वृश्चिक दि१२।१० | ५।५८ | ६।०२ | ५ | २२ | अपराजिता७। सन्तानसप्तमी। मृत्युयोगः दि.६।१५ यावत्। उत्तरयात्रा अष्टम्यां दि.६।१५ उपरि। |
| ८ | श. | ०४।३२ | दि.७।४७ | मूल | दि.११।२३ | सौभाग्य ३३।५५ | धनु अहोरात्र | ५।५९ | ६।०१ | ६ | २३ | **नवमीतिथिमानं५५।५८ रा.४।२२। राधाष्टमी,दूर्वा ८ व्रतं,शिववासः दि.७।४७ उपरि।** |
| १० | र. | ५४।४६ | रा.३।५५ | पूर्वाषाढा | दि.१०।१६ | शोभन २७।०८ | धनु दि.४।०० | ६।०० | ६।०० | ७ | २४ | **महानन्दानवमी** ९ व्रतम्। अमृतयोगः। पूर्व-उत्तरयात्रा रा.१०।१६ यावत् |
| ११ | चं. | ४६।०६ | रा.१।३८ | उत्तराषा | दि.०६।१५ | अतिगण्ड१६।५१ | मकर अहोरात्र | ६।०० | ६।०० | ८ | २५ | **कर्माधर्मा ११ व्रतं सर्वेषाम्।** हरेःपार्श्वपरिवर्त्तनं। सर्वार्थसिद्धियोगः दि.६।१५ उपरि। पूर्वां विनायात्रा श्रवणे। |
| १२ | मं. | ४३।०७ | रा.११।१५ | श्रवण | दि.७।४३ | सुकर्मा ९।१६ | मकर दि.६।४३ | ६।०१ | ५।५९ | ९ | २६ | कुष्माण्डेनपारणा,श्रीवामन१२,वामनावतार, **इन्द्रपूजारम्भ,** शिववासः,**पञ्चकारम्भः(भदवा) दि.७।४३ उपरि।** |
| १३ | बु. | ३७।०० | रा.८।५० | धनिष्ठा | प्रा.६।०४ | धृति ४।३१ | कुम्भ अहोरात्र | ६।०२ | ५।५८ | १० | २७ | **शतभिषानक्षत्रमानं रा.४।४०, प्रदोष १३,** व्रतं, शिववासः, मृत्युयोगः। |
| १४ | गु. | ३१।०१ | सं.६।२७ | पूर्वाभाद्र | रा.२।४८ | गण्ड ४६।०७ | कुम्भ रा.६।१२ | ६।०३ | ५।५७ | ११ | २८ | **अनन्त१४ व्रतं,अनन्तपूजनं,** तद्डोरकधारणञ्च। **प्रदोष१४ व्रतं,**श्रीगणेशविसर्जनं,**हस्तेरविः१० ।३८ दि.१०।१७।** |
| १५ | शु. | २५।१८ | दि.४।११ | उत्तराभाद्र | रा.१।२२ | वृद्धि ४१।४७ | मीन अहोरात्र | ६।०४ | ५।५६ | १२ | २९ | भाद्रीपूर्णिमा१५,स्नानदानादि। **अगस्त्यार्घदानं,** शिववासः दि.४।११ उपरि। |
| | | | | | | | | | | | | |

## आश्विनकृष्णपक्षः

शक१६४५, संवत्२०८०, सन् १४३१, दक्षिणायण, उत्तरगोल, शरदृऋतुः, उत्तरेकालः,शुद्ध, **दिनांक ३० सितम्बर तः १४ अक्टूबर यावत् सन् २०२३।**

| तिथय | | तिथिमान | | नक्षत्रमान | | योग | | चन्द्रराशि | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः | द. प. | राशिः घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| १ | श. | २०।०६ | दि.२।०६ | रेवती | रा.१२।०२ | ध्रुव | ३४।५४ | मीन रा.१२।०४ | ६।०४ | ५।५६ | १३ | ३० | आश्विनेदुग्धं त्यजेत्,महालयारम्भः। पितृपक्षीयतर्पणपार्वणारम्भः। प्रतिपद्एकोदिष्टं। **अशून्यशयन** २ व्रतं, |
| २ | र. | १५।३३ | दि.१२।१८ | अश्विनी | रा.११।१५ | व्याघात | २८।३८ | मेष अहोरात्र | ६।०५ | ५।५५ | १४ | अक | अक्टूबर१०, **इन्द्रविसर्जन,** एकोदिष्ट२-३, सर्वार्थसिद्धियोगः। पश्चिमां विनायात्रा। |
| ३ | चं. | ११।५५ | दि.१०।५२ | भरणी | रा.१०।४२ | हर्षण | २३।०४ | मेष रा.४।३६ | ६।०६ | ५।५४ | १५ | २ | **एकोदिष्टं४, ललितादेवीयात्रा,**श्रीगणेश४ व्रतं। **पञ्चक(भदवा) समाप्तिः रा.१२।०२ उपरि।** पश्चिम-उत्तरयात्रा |
| ४ | मं. | ६।१२ | दि.६।४७ | कृत्तिका | रा.१०।३४ | वज्र | १८।१६ | वृष अहोरात्र | ६।०७ | ५।५३ | १६ | ३ | एकोदिष्टं५, शिववासः। पूर्व-दक्षिण यात्रा रहिण्यां रा.१०।३४ यावत् |
| ५ | बु | ०७।४४ | दि.६।१३ | रोहिणी | रा.१०।५६ | सिद्धि | १४।३० | वृष अहोरात्र | ६।०८ | ५।५२ | १७ | ४ | एकोदिष्टं६,शिववासः दि.६।१३ यावत्, सर्वार्थसिद्धियोगः। पूर्व-दक्षिण यात्रा। |
| ६ | गु. | ०७।३० | दि.६।०८ | मृगशिरा | रा.११।४६ | व्यतीपात | ११।४१ | वृष दि.११।२१ | ६।०८ | ५।५२ | १८ | ५ | श्रीचन्द्रषष्ठीव्रतं(चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्य), एकोदिष्टं७, रात्र्यन्ते स्त्रीणां विशेष भोजनं **ओठगन।** |
| ७ | शु. | ०८।३३ | दि.६।३४ | आर्द्रा | रा.०१।०८ | वरीयान् | ६।५२ | मिथु अहोरात्र | ६।०६ | ५।५१ | १६ | ६ | एकोदिष्टं८। **महालक्ष्मीव्रतं, जीमूतवाहन व्रतं(जितिया)।** जीमूतवाहनपूजा, शिववासः दि.६।३४ उपरि। |
| ८ | श. | १०।५४ | दि.१०।३१ | पुनर्वसु | रा.०२।५७ | परिघ | ६।०२ | मिथु रा.८।३० | ६।१० | ५।५० | २० | ७ | महालक्ष्मी,**जीमूतवाहन व्रतस्यपारणा** दि.१०।३२ उपरि, शिववासः दि.१०।३१ यावत्,एकोदिष्टं८। अष्टकाश्राद्धं। |
| ९ | र. | १४।२१ | दि.११।५५ | पुष्य | रा.शे५।१० | शिव | ६।०४ | कर्क अहोरात्र | ६।११ | ५।४६ | २१ | ८ | **मातृकानवमी,**एकोदिष्टं६, अन्वष्टकाश्राद्ध, सर्वार्थसिद्धियोगः,रविपुष्ययोगश्च रा.शे.५।१० यावत्। |
| १० | चं. | १८।४६ | दि.१।४१ | आश्लेषा | अहोरात्र | सिद्ध | ६।५१ | कर्क अहोरात्र | ६।११ | ५।४६ | २२ | ६ | एकोदिष्ट१०, शिववासः दि.१।४१ उपरि, अमृतयोगः दि.१।४१ यावत् ततः सिद्धियोगः। |
| ११ | मं. | २३।५० | दि.३।४४ | आश्लेषा | दि.७।३८ | साध्य | ११।०० | कर्क प्रा.७।४६ | ६।१२ | ५।४८ | २३ | १० | **इन्दिराएकादशी ११ व्रतं सर्वेषाम्।** एकादशीश्राद्धं, शिववासः, मृत्युयोगः दि.३।४४ यावत् ततः अमृतयोगः। |
| १२ | बु. | २६।०४ | सं.५।५१ | मघा | दि.१०।१६ | शुभ | १२।२६ | सिंह अहोरात्र | ६।१३ | ५।४७ | २४ | ११ | गुड़ेनपारणा, एकोदिष्टं १२, **चित्रायां रविः ४१।०५ रा.१०।४०,** शिववासः,सिद्धियोग। |
| १३ | गु. | ३४।०६ | रा.७।५३ | पूर्वाफा | दि.१२।५० | शुक्ल | १३।४६ | सिंह सं.७।२६ | ६।१४ | ५।४६ | २५ | १२ | **प्रदोष १३** व्रतं, एकोदिष्ट१३, अमृतयोगः। भद्रा ३४।०६ उपरि, पूर्व-उत्तर यात्रा त्रयोदशम्यां |
| १४ | शु. | ३८।३१ | रा.६।३६ | उत्तराफा | दि.३।१३ | ब्रह्म | १४।४२ | कन्या अहोरात्र | ६।१५ | ५।४५ | २६ | १३ | **प्रदोष १४ व्रतं,** एकोदिष्ट१४। अमृतयोगः रा.६।३६ यावत्। भद्रा ६।२० यावत् |
| ३० | श. | ४२।०३ | रा.११।०५ | हस्त | सं.५।१७ | ऐन्द्र | १५।०२ | कन्याप्रा.६।०१ | ६।१६ | ५।४४ | २७ | १४ | आश्विन अमावस्या स्नान-दान श्राद्धादौ अमावस्या। महालया३०, पितृपक्षीयतर्पणान्तः। शिववासः। |

## आश्विनशुक्लपक्षः शक १६४५, संवत् २०८०, सन् १४३१, दक्षिणायण, उत्तरगोलः, शरद् ऋतुः, उत्तरे कालः, शुद्धसमयः, दिनांक १५ अक्टूबरतः २८ अक्टूबर यावत् सन् २०२३।

| तिथयः | | तिथिमानानि | | नक्षत्रमान | | योगः | | चन्द्रराशि | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः | द. प. | राशिः घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| १ | र. | ४४।२६ | रा.१२।०३ | चित्रा | सं.६।५४ | वैधृति | १४।३१ | तुला अहोरात्र | ६।१६ | ५।४४ | २८ | १५ | **शारदीयनवरात्रारम्भः,कलशस्थापनं**, नवरात्रव्रतारम्भः, **गजरुढयां** भगवत्याः आगमनं फलं जलाधिक्यम्। **विपणि**। |
| २ | चं. | ४५।३३ | रा.१२।३० | स्वाती | रा.८।०३ | विष्कुम्भ | १३।१० | तुला दि.२।३२ | ६।१७ | ५।४३ | २९ | १६ | **श्रीरेमन्तपूजा**। ब्रह्मचारिणी देवी दर्शनं। पट्टदोरं द्वितीयायां केशसंयम हेतवे। **चन्द्रदर्शनं**,शिववासः,मृत्युयोगः |
| ३ | मं. | ४५।२२ | रा.१२।२६ | विशाखा | रा.८।४२ | प्रीति | १०।४५ | वृश्चि अहोरात्र | ६।१८ | ५।४२ | ३० | १७ | दर्पणं च तृतीयायां सिन्दूरालक्तकं तथा। ← **सिमरियायायां अर्धकुयोगः** अद्यारम्भ्य कार्तिकपूर्णिमा यावत्। |
| ४ | बु. | ४३।५६ | रा.११।५२ | अनुराधा | रा.८।५२ | आयुष्य | ७।२१ | वृश्चि अहोरात्र | ६।१८ | ५।४२ | १ | १८ | श्रीगणेश४ व्रतं, **श्रीगणेशपूजनं,तुलायां रविः२३।४८,धान्यविषुवसंक्रान्तिः पुण्यकालो दि.१२।००उपरि** ।← |
| ५ | गु. | ४१।१९ | रा.१०।५० | ज्येष्ठा | रा.८।३३ | सौभाग्य | २।५७ | वृश्चि रा.८।३३ | ६।१९ | ५।४१ | २ | १९ | मासादि, स्कन्दमाता देवी दर्शनं, पंचम्यामंगरागं च शक्त्यालंकरणानि च। शिववासः,सिद्धियोगः,पश्चिमयात्रा। |
| ६ | शु. | ३७।४२ | रा.९।२४ | मूल | रा.७।५१ | अतिगण्ड | ५१।४३ | धनु अहोरात्र | ६।२० | ५।४० | ३ | २० | **विल्वाभिमन्त्रणं,गजपूजा**,शिववासः, सिद्धियोगः। पूर्व-उत्तरयात्रा, कात्यायनीदेवीदर्शनम्। |
| ७ | श. | ३४।१४ | रा.८।०२ | पूर्वाषाढा | सं.६।४८ | सुकर्मा | ४५।०३ | धनु रा.१२।३२ | ६।२१ | ५।३९ | ४ | २१ | नवपत्रिकाप्रवेशः,मूलेसरस्वत्याःआवाहन,भगवत्तीदर्शन,**महारात्रिर्निशापूजा**, रात्रिजागरण, **गृहप्रवेश** |
| ८ | र. | २८।०५ | सं.५।३६ | उत्तराषा | सं.५।२६ | धृति | ३७।५१ | मकरअहोरात्र | ६।२२ | ५।३८ | ५ | २२ | **महाष्टमी ८ व्रतं**,महागौरीदेवीदर्शनं, श्रीदुर्गाष्टमी ८ व्रतं,शिववासः,दीक्षाग्रहणं। |
| ९ | चं. | २२।२७ | दि.३।२० | श्रवण | दि.३।५७ | शूल | ३०।१७ | मकररा.३।०८ | ६।२२ | ५।३८ | ६ | २३ | **महानवमी ९ व्रतं**,त्रिशूलनीपूजा,दीक्षाग्रहणं,**हवनादिः,पञ्चकारम्भः(भदवा) दि.३।५७ उपरि,गृहारंभ** दि.३।५७उ.। |
| १० | मं. | १६।३३ | दि.१।०० | धनिष्ठा | दि.२।१९ | गण्ड | २२।३२ | कुम्भअहोरात्र | ६।२३ | ५।३७ | ७ | २४ | विजयादशमी१०, **नवरात्रव्रतपारण**, देवीविसर्जनं,जयन्तीधारणं,चरणायुध यानकरी विकला।। **दक्षसावर्णिमन्वादिः**। |
| ११ | बु. | १०।३१ | दि.१०।३६ | शतभिषा | दि.१२।३४ | वृद्धि | १४।३६ | कुम्भरा.४।१९ | ६।२४ | ५।३६ | ८ | २५ | **पाशांकुशएकादशी११ व्रतं सर्वेषां, स्वात्यां रविः**दि.८।०६,**गृहारंभ-गृहप्रवेशः**दि.१२।३४यावत्,दीक्षाग्रहण,शिववास |
| १२ | गु. | ०४।३४ | दि.८।१४ | पूर्वाभाद | दि.११।०१ | ध्रुव | ६।५५ | मीन अहोरात्र | ६।२५ | ५।३५ | ९ | २६ | गुडेनपारणा,**श्रीपद्मनाभ१२। प्रदोष१३ व्रतं**,त्रयोदशीतिथिमानं५४।२३ । शिववासः। **गृहाप्रवेश** उत्तराभाद्रपदायाम्। |
| १४ | शु. | ५३।५१ | रा.३।५८ | उत्तराभा | दि.९।३६ | व्याघात | ९।२६ | मीन अहोरात्र | ६।२६ | ५।३४ | १० | २७ | **गृहप्रवेशः पूर्णिमायां, प्रदोष १४ व्रतं**, अमृतयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.९।३६ उपरि। भद्रा ५३।५१ उपरि। |
| १५ | श. | ४९।२३ | रा.२।११ | रेवती | दि.८।१४ | वज्र | ४५।४७ | मीन दि.८।१४ | ६।२६ | ५।३४ | ११ | २८ | शरद्पूर्णिमा१५,स्नानदानादि, कौमुदीमहोत्सव(**कोजागरा**), श्रीमहालक्ष्मीपूजा,दीक्षाग्रहणं,**वाल्मीकीजयन्ती**।♍ |
| | | | | | | | | | | | | | ♍ **भवासमाप्तिः दि.८।१४ उपरि,गृहारंभ,गृहप्रवेश** रेवत्यां,**विपणि,चन्द्रग्रहण रा.१।०७ से रा.२।२५ तक**। |

## कार्त्तिककृष्णपक्षः शक१९४५,संवत् २०८०,सन् १४३१,दक्षिणायण, दक्षिणगोलः,शरद् ऋतुः, उत्तरे कालः,शुद्ध,**दिनांक २६ अक्टूबरतः १३ नवम्बर यावत् सन् २०२३।**

| तिथय | | तिथिमान | | नक्षत्रमान | | योग | | चन्द्रराशि | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः | द. प. | राशिः घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| १ | र. | ४५।५० | रा.१२।४७ | अश्विनी | प्रा.७।१६ | सिद्धि | ३६।५६ | मेष अहोरात्र | ६।२७ | ५।३३ | १२ | २६ | कार्त्तिकेद्विदलं त्यजेत्। कार्त्तिकेयमुनास्नानं महापुण्यप्रदं, शिववासः, सर्वार्थसिद्धियोगः प्रा. ७।१३ यावत्। |
| २ | चं. | ४३।१५ | रा.११।४५ | भरणी | प्रा.०६।३६ | व्यतीप | ३४।५३ | मेष दि.१२।२५ | ६।२७ | ५।३३ | १३ | ३० | कृत्तिकानक्षत्रमानं ५६।२२ रा.शे.६।१२, अग्निवासः, मृत्युयोगः, **अशून्यशयन २ व्रतं।** |
| ३ | मं. | ४१।५२ | रा.११।१२ | रोहिणी | अहोरात्र | वरीयान् | ३०।४३ | वृष अहोरात्र | ६।२८ | ५।३२ | १४ | ३१ | सिद्धियोगः। कन्यायां शुक्रः दि.४।२६। भद्रा १२।३३ ततः भद्रा ४१।५२ यावत्, पूर्व-दक्षिणयात्रा |
| ४ | बु. | ४१।४४ | रा.११।१० | रोहिणी | प्रा.६।३६ | परिघ | २७।३० | वृष रा.६।५८ | ६।२६ | ५।३१ | १५ | नव | **नवम्बर११, करकचतुर्थी(करवांचौठ)**, श्रीकृष्णपिंगाक्ष ४ व्रतं, शिववासः, सर्वार्थसिद्धियोगः,अग्निवासः। ← |
| ५ | गु. | ४२।५४ | रा.११।३८ | मृगशिरा | प्रा.७।१६ | शिव | २५।१६ | मिथु अहोरात्र | ६।२६ | ५।३१ | १६ | २ | शिववासः, सिद्धियोगः। दक्षिणां विनायात्रा मृगशिरायां प्रा.७।१६ यावत्। ←उत्तरां विनायात्रा रा.११।१०उपरि |
| ६ | शु. | ४५।२१ | रा.१२।३८ | आर्द्रा | दि.८।३४ | सिद्ध | २५।१० | मिथु रा.३।५० | ६।३० | ५।३० | १७ | ३ | सिद्धियोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.८।३४ उपरि,अग्निवासः,**अशोकचन्दन६,** दक्षिणयात्रा,भद्रा ४५।२१ उपरि। |
| ७ | श. | ४८।५५ | रा.२।०५ | पुनर्वसु | दि.१०।१५ | साध्य | २३।४७ | कर्क अहोरात्र | ६।३१ | ५।२९ | १८ | ४ | भद्रा १७।०३ यावत्, पश्चिम-उत्तर यात्रा दि.१०।१५ यावत् ततः पूर्वां विनायात्रा |
| ८ | र. | ५३।०२ | रा.३।४३ | पुष्य | दि.१२।२२ | शुभ | २४।१४ | कर्क अहोरात्र | ६।३१ | ५।२९ | १९ | ५ | श्रीराधाजयन्ती८, शिववासः,सिद्धियोगः,सर्वार्थसिद्धियोगः,**रविपुष्ययोग**,अहोई ८ व्रतं,कालाष्टमी। पश्चिमांविनायात्रा। |
| ९ | चं. | ५८।३० | रा.शे५।५९ | आश्लेषा | दि.२।४७ | शुक्ल | २५।१२ | कर्क दि.२।४७ | ६।३२ | ५।२८ | २० | ६ | अग्निवासः। दक्षिणयात्रा,दग्धतिथि दि.११।५७ यावत्, शिववासः दि.११।५७ यावत् ततः अग्निवासः। |
| १० | मं. | ६०।०० | अहोरात्र | मघा | सं.५।२३ | ब्रह्म | २६।३१ | सिंह अहोरात्र | ६।३२ | ५।२८ | २१ | ७ | **विशाखायां रविः २२।०७ दि.३।२२।** भद्रा ३१।१० उपरि, पूर्वयात्रा सं.५।२३ उपरि |
| १० | बु. | ३।५१ | दि.८।०५ | पूर्वाफा | रा.७।५६ | ऐन्द्र | २७।५१ | सिंह रा.२।३६ | ६।३३ | ५।२७ | २२ | ८ | शिववासः-अमृतयोगः-अग्निवासः दि.८।०५ उपरि। भद्रा ३।५१ यावत्, पूर्वयात्रा |
| ११ | गु. | ०८।५८ | दि.१०।०६ | उत्तराफा | रा.१०।२६ | वैधृति | २८।५३ | कन्याअहोरात्र | ६।३४ | ५।२६ | २३ | ९ | **रम्भाएकादशी११ व्रतं सर्वेषां,** शिववासः, अग्निवासः दि.१०।०६ यावत्। पूर्वयात्रा। |
| १२ | शु. | १३।२८ | दि.११।५७ | हस्त | रा.१२।३४ | विष्कुम्भ | २६।२४ | कन्यादि.१।२६ | ६।३४ | ५।२६ | २४ | १० | बिल्वदलेनतुलसीदलेन वा पारणं,**प्रदोष१३ व्रत**,गोवत्सद्वादशी१२,श्रीधनवन्तरि जयन्ती(**धनतेरस**)। |
| १३ | श. | १७।०१ | दि.१।२३ | चित्रा | रा.२।१८ | प्रीति | २६।०७ | तुला अहोरात्र | ६।३५ | ५।२५ | २५ | ११ | **प्रदोष१४ व्रतं,**यमदीपदानं,हनुमानजयन्ती,हनुमज्जन्मोत्सवः,हनुमद्ध्वजदानं,अग्निवासः,दक्षिण-पश्चिम यात्रा। |
| १४ | र. | १९।२८ | दि.२।२३ | स्वाती | रा.४।४४ | आयुष्य | २७।५९ | तुला अहोरात्र | ६।३६ | ५।२४ | २६ | १२ | **दीपावली,** सुखरात्रिः,लक्ष्मि-कूबेरपूजा, उल्काभ्रमण,रात्रीशेषे द्ररिद्रानिःसारणं,दीक्षाग्रहण, **कालीपूजा।** |
| ३० | चं. | २०।३६ | दि.२।५२ | विशाखा | रा.४।२३ | सौभाग्य | २५।५१ | तुला रा.१०।२८ | ६।३७ | ५।२३ | २७ | १३ | कार्तिकी३०,स्नानदानश्राद्धादौ। **सोमवत्तीअमावस्या। सोमवारी व्रत,** अकृतपितृपक्षीयपार्वणैरद्यावश्यमेव,शिववासः। |

## कार्त्तिकशुक्लपक्षः शक १६४५, संवत्२०८०, सन् १४३१, दक्षिणायण, दक्षिणगोलः, हेमन् ऋतुः , उत्तर/पूर्व काल, शुद्ध,**दिनांक १४ नवम्बरतः २७ नवम्बर यावत् सन् २०२३ ई**

| तिथयः | दिनानि | तिथिमानानि द. प. | घं. मि. | नक्षत्रमान नक्षत्राणि | घं. मि. | योगः योगाः | द. प. | चन्द्रराशि राशिः | घ. मि. | सूर्योदय घं.मि. | सूर्यास्त घं.मि. | दिनांक गते | ता | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | मं. | २०।३० | दि.२।४६ | अनुराधा | रा.४।३८ | शोभन | २२।४२ | वृशि | अहोरात्र | ६।३७ | ५।२३ | २८ | १४ | **अन्नकूटः**,बलिपूजा,अग्न्यादिदेवोत्थापनं,गोवर्धनपूजा,गोपूज, गोक्रीडा,वृषभेऔषधिदानं,**महाकविकालिदासजयन्त्युत्सवः** |
| २ | बु. | १६।२५ | दि.१।१२ | ज्येष्ठा | रा.४।२६ | अतिगण्ड | १८।३४ | वृशि | रा.४।२६ | ६।३८ | ५।२२ | २६ | १५ | **भ्रातृद्वितीया(भईयादूज), चित्रगुप्तपूजा**,यमुनास्नानं,भगिनीगृहेभोजनं,अग्निवासः,शिववासः,सिद्धियोगः, पश्चिमयात्रा। |
| ३ | गु. | १६।३१ | दि.१।१४ | मूल | रा.३।४६ | सुकर्मा | १३।३४ | धनु | अहोरात्र | ६।३८ | ५।२२ | ३० | १६ | **कटुमहुली३**,श्रीगणेश४ व्रतं,**मासान्तः। ♍ कार्त्तिकस्नान समाप्तिः,सिमरियाधाम्नि कल्पवाससमाप्तिः।** |
| ४ | शु. | १२।५७ | दि.११।४६ | पूर्वाषाढा | रा.२।५० | धृति | ७।४५ | धनु | अहोरात्र | ६।३६ | ५।२१ | १ | १७ | प्रतिहारषष्ठीव्रतस्य **नहाय-खाय,वृश्चिके रविःदि.१।३८,विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालो दि.१२।००उपरि पुण्याहः ♍** |
| ५ | श. | ०८।०१ | दि.६।५२ | उत्तराषा | रा.१।३३ | शूल | १।१५ | धनु | दि.८।३१ | ६।४० | ५।२० | २ | १८ | गण्डयोग५२।५४, शिववासः, प्रतिहारषष्ठीव्रतस्यैकभुक्तादिकं(खरना)। ज्ञानपंचमी। **गृहप्रवेश** दि.६।५२ यावत्, |
| ६ | र. | ३।२६ | दि.८।०२ | श्रवण | रा.१२।०४ | वृद्धि | ४६।३६ | मकर | अहोरात्र | ६।४० | ५।२० | ३ | १६ | **स.ति.५४।२४रा.४।२५**,प्रतिहारषष्ठीव्रतं **सायंकालिकार्घदान**,डाला-छठ। **पञ्चकारम्भः(भदवा) रा.१२।४उपरि।** |
| ८ | चं. | ५१।५७ | रा.३।२७ | धनिष्ठा | रा.१०।२७ | ध्रुव | ३६।५३ | मकर | दि.११।१६ | ६।४१ | ५।१६ | ४ | २० | अरुणोदये **प्रातःकालिकार्घदान** पारणञ्च,**सामापूजारम्भः**, जगद्धातृपूजारम्भः,गोपाष्टमी, गवादीनां पूजनं। |
| ९ | मं. | ४६।०० | रा.१।०५ | शतभिषा | रा.८।४६ | व्याघात | ३०।५८ | कुम्भ | अहोरात्र | ६।४१ | ५।१६ | ५ | २१ | **अक्षयनवमी**,सत्ययुगादि,गंगास्नानादि,धातृमूलेभोजनं दीक्षाग्रहणं। **♎ पञ्चक(भदवा)समाप्तिःदि.४।१५ उपरि।** |
| १० | बु. | ४०।०६ | रा.१०।४५ | पूर्वाभाद्र | रा.७।०८ | हर्षण | २३।०६ | कुम्भ | दि.११।५३ | ६।४२ | ५।१८ | ६ | २२ | जगद्धातृविसर्जनं,**गृहप्रवेशः** रा ८।३३उपरि। **⌘ विवाहः,मुण्डनं,द्विरागमन्** त्रयोदशम्यां,बधूप्रवेश,♎ |
| ११ | गु. | ३४।३८ | रा.८।३३ | उत्तराभाद्र | सं.५।३५ | वज्र | १५।३१ | मीन | अहोरात्र | ६।४२ | ५।१८ | ७ | २३ | **देवोत्थानएकादशी११ व्रतं सर्वेषां,भीष्मपञ्चकारम्भः, एकादशी व्रतोद्यापन, गृहप्रवेशः, गृहारंभः।** |
| १२ | शु. | २६।३७ | सं.६।३३ | रेवती | दि.४।१५ | सिद्धि | ८।३३ | मीन | दि.४।१५ | ६।४३ | ५।१७ | ८ | २४ | तुलसीदलेनपारणं,**प्रदोष१३व्रतं**,दामोदर१२,चातुर्मास्यव्रतपारणं,**तुलसीविवाहः,मन्वादिः,गृहप्रवेश,गृहारंभ** दि.४।१५या**⌘** |
| १३ | श. | २५।१८ | दि.४।५० | अश्विनी | दि.३।०६ | व्यतीपात | १।२६ | मेष | अहोरात्र | ६।४३ | ५।१७ | ९ | २५ | **विद्यापतिस्मृतिदिवसः,प्रदोष१४ व्रतं, श्रीवैकुण्ठचतुर्दशी१४ व्रतं, शिववास, गृहप्रवेशः अश्विन्यां◆** |
| १४ | र. | २१।५१ | दि.३।२८ | भरणी | दि.२।२६ | परिघ | ५०।५६ | मेष | रा.८।०८ | ६।४४ | ५।१६ | १० | २६ | **व्रताय पूर्णिमा, सामाविसर्जनं,** कार्त्तिकेयावतारः, कात्तिकेयपूजनं,काश्यां देवदीपावली। **षाण्मासिक रविव्रतारम्भः,** |
| १५ | चं. | १६।२३ | दि.२।२६ | कृत्तिका | दि.२।०४ | शिव | ४५।२३ | वृष | अहोरात्र | ६।४४ | ५।१६ | ११ | २७ | कार्तिकपूर्णिमा१५स्नानदानादि,**गृहारंभः,विवाहः**दि.२।०४ ..,**द्विरागमनं** रोहिण्यां,बधूप्रवेशः,सोनपुरमेला,हरिहरक्षेत्रस्नानं❖ |

❖पुष्करक्षेत्रस्नानं,गोशालाघट्टे कमलायां, जीवच्छघट्टे जीववत्सायां स्नानदानार्चनादिकम्, **अमृतयोगः दि.२।२६ यावत् ततः शिववासः-अग्निवासः, दक्षिणयात्रा रोहिण्यां दि.२।४ यावत ततः सर्वार्थसिद्धियोगः।**

| तिथय | | तिथिमान | | नक्षत्रमान | | योग | | चन्द्रराशि | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | **अग्रहायणकृष्णपक्षः** शक १६४५,संवत् २०८०,सन् १४३१, दक्षिणायण,दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु , पूर्वे कालः, शुद्धः, **दिनांक २८ नवम्बरतः१२ दिसम्बर यावत् सन् २०२३ई** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | दिनानि | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः | द. प. | राशिः घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| १ | मं. | १८।०८ | दि.१।५६ | रोहिणी | दि.४।१० | सिद्ध | ४१।४६ | वृष दि.२।२८ | ६।४४ | ५।१६ | १२ | २८ | **धान्याव्रतारम्भ, शिववासः-अग्निवासः दि.१।५६ यावत्, पूर्व-दक्षिणयात्रा दि.१।५६ तः दि.२।२८ यावत् ।** |
| २ | बु. | १८।०८ | दि.२।०० | मृगशिरा | दि.२।४७ | साध्य | ३६।१४ | मिथु अहोरात्र | ६।४५ | ५।१५ | १३ | २६ | **गृहारम्भः**दि.२।०० यावत्,**मुण्डनं-कर्णवेध-विवाह मृगशिरायां दि.२।४७ यावत्,नवन्नपार्वणं**,सर्वार्थसिद्धियोग ← |
| ३ | गु. | १६।२८ | दि.२।३२ | आर्द्रा | दि.३।५३ | शुभ | ३७।४० | मिथु अहोरात्र | ६।४५ | ५।१५ | १४ | ३० | **सौभाग्यसुन्दरी३ व्रत, गजानन ४ व्रतं,** अग्निवासः दि.२।३२यावत् ततः शिववासः,अमृतयोगःदि.२।३२ यावत्। |
| ४ | शु. | २२।०० | दि.३।३४ | पुनर्वसु | सं.५।२६ | शुक्ल | ३६।५७ | मिथु दि.११।०५ | ६।४६ | ५।१४ | १५ | दिस | **दिसम्बर१२,गृहारम्भः-मुण्डनं-कर्णवेधः-द्विरागमनं पञ्चम्यां दि.३।३४ उपरि, वधूप्रवेशः**,शिववास,अमृतयोग♋ |
| ५ | श. | २५।४३ | दि.५।०३ | पुष्य | रा.७।३० | ब्रह्म | ३७।०६ | कर्क अहोरात्र | ६।४६ | ५।१४ | १६ | २ | **वीड़पंचमी, विषहरापूजन,** मनसादेवीशयनं, शिववासः,अग्निवासः, पूर्वां विनायात्रा दि.५।०३ तः रा.७।३० यावत् |
| ६ | र. | ३०।१६ | सं.६।५३ | आश्लेषा | रा.६।२६ | ऐन्द्र | ३७।५५ | कर्क रा.६।२६ | ६।४६ | ५।१४ | १७ | ३ | **ज्येष्ठायां रविः४१।२५ रा.११।२०,विवाहः** मघायां रा.६।२६ उपरि, अग्निवासः,मृत्युयोगः रा.६।५३ यावत्। |
| ७ | चं. | ३५।३२ | रा.८।५८ | मघा | रा.१२।२४ | वैधृति | ३६।०६ | सिंह अहोरात्र | ६।४६ | ५।१४ | १८ | ४ | **विवाहः मघायां रा.१२।२४ यावत्।** मृत्युयोगः रा.८।५८ यावत्। भद्रा २।५५ यावत् |
| ८ | मं. | ४०।५७ | रा.११।०८ | पूर्वाफा | रा.३।०० | विष्कुम्भ | ४०।३० | सिंह अहोरात्र | ६।४६ | ५।१४ | १६ | ५ | कालभैरवाष्टमी८, शिववासः,सिद्धियोगः,अग्निवासः। ♋ दक्षिणयात्रा सं.५।२६ यावत् ततः पश्चिमां विनायात्रा |
| ६ | बु. | ४६।०७ | रा.१।१३ | उत्तराफा | रा.४।३१ | प्रीति | ४१।३८ | सिंह दि.६।२४ | ६।४७ | ५।१३ | २० | ६ | अष्टकाश्राद्धं। द.ति. रा.१।१३ उपरि। ← भद्रा४८।४८उपरि,उत्तरांविनायात्रा दि.२।०० यावत् ततः मृत्युयोग। |
| १० | गु. | ५१।२४ | रा.३।२० | हस्त | अहोरात्र | आयुष्य | ४२।२० | कन्या अहोरात्र | ६।४७ | ५।१३ | २१ | ७ | **विवाहः एकादश्यां रा.३।२० उपरि,** सिद्धियोगः, अग्निवासः। भद्रा १८।४५ तः५१।२४ यावत्, पूर्वयात्रा। |
| ११ | शु. | ५४।१३ | रा.४।२८ | हस्त | प्रा.७।४३ | सौभाग्य | ४२।२० | कन्या रा.८।५८ | ६।४७ | ५।१३ | २२ | ८ | **उत्पन्नाएकादशी११ व्रतं सर्वेषाम्, विवाहःदिवारात्रौ,** शिववासः,सिद्धियोगः। पूर्व-दक्षिण यात्रा रा.४।२८ यावत् |
| १२ | श. | ५६।३६ | रा.शे५।२६ | चित्रा | दि.६।३३ | शोभन | ४१।२६ | तुला अहोरात्र | ६।४७ | ५।१३ | २३ | ६ | गोमूत्रेण पारणं, शिववासः-अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.६।३३ उपरि। दक्षिण-पश्चिम यात्रा |
| १३ | र. | ५७।४६ | रा.शे५।५५ | स्वाती | दि.१०।५८ | अतिगण्ड | ३६।३६ | तुला रा.शे५।३६ | ६।४८ | ५।१२ | २४ | १० | **प्रदोष १३ व्रतं, विवाहः स्वात्यां दि.१०।५८ यावत्।** सिद्धियोगः। भद्रा ५७।४६ उपरि, दक्षिणयात्रा |
| १४ | चं. | ५७।३६ | रा.शे५।५१ | विशाखा | दि.११।४६ | सुकर्मा | ३६।५० | वृश्चि अहोरात्र | ६।४८ | ५।१२ | २५ | ११ | **प्रदोष १४ व्रत,** ज्येष्ठायां मंगल सं.६।०३। अग्निवासः। भद्रा २७।४४ |
| ३० | मं. | ५६।१६ | रा.शे५।१८ | अनुराधा | दि.१२।१३ | धृति | ३३।०१ | वृश्चि अहोरात्र | ६।४८ | ५।१२ | २६ | १२ | मार्गीअमावस्या, स्नान-दान श्राद्धादौ। पापवारान्विते दर्शे दुर्भिक्ष च प्रजाभयम्। शिववासः। |

| तिथयः | | तिथिमानानि | | नक्षत्रमान | | योगः | | चन्द्रराशि | | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | अग्रहायणशुक्लपक्षः शक१९४५, संवत्२०८०, सन् १४३१, दक्षिणायण, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु, पूर्वे कालः, दिनांक १३ दिसम्बर तः २६ दिसम्बर यावत् सन् २०२३ ई। |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः | द. प. | राशिः | घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| १ | बु. | ५३।४३ | रा.४।१७ | ज्येष्ठा | दि.१२।०६ | शूल | २८।१६ | वृशि | दि.१२।०३ | ६।४८ | ५।१२ | २७ | १३ | **हरिशोव्रतं,** रुद्रव्रतम्। अमृतयोगः। पश्चिमयात्रा दि.१२।०३ यावत् ततः पूर्व यात्रा, **विवाहः-द्विरागमनं मूले।** |
| २ | गु. | ५०।१० | रा.२।५३ | मूल | दि.११।३५ | गण्ड | २२।३६ | धनु | अहोरात्र | ६।४६ | ५।११ | २८ | १४ | शिववासः, अग्निवासः। पूर्व-उत्तर यात्रा अहोरात्र, **विवाहः-द्विरागमनं मूले दि.११।५६ यावत्।** |
| ३ | शु. | ४५।४६ | रा.१।०७ | पूर्वाषाढा | दि.१०।४३ | वृद्धि | १६।२३ | धनु | दि.४।२५ | ६।४६ | ५।११ | २६ | १५ | उत्तरयात्रा दि.४।२५यावत्,पूर्वयात्रा,**मुण्डनं-कर्णवेधः-विवाहः-द्विरागमनं उत्तराषाढ़ायां दि.१०।४३ उ.,वधूप्रवेशः।** |
| ४ | श. | ४०।३१ | रा.११।०१ | उत्तराषा | दि.६।२६ | ध्रुव | ६।२६ | मकर | अहोरात्र | ६।४६ | ५।११ | ३० | १६ | **मासान्तः। श्रीगणेश४ व्रतं।** अग्निवासः,भद्रा १३।०८ उपरि भद्रा ४०।२१ यावत्,**मूले धनुषि च रवि ४५।३६,** |
| ५ | र. | ३५।०६ | रा.८।५३ | श्रवण | दि.८।०५ | व्याघात | २।०० | मकर | रा.७।५७ | ६।५० | ५।१० | १ | १७ | **षडशीतिसंक्रान्तिःपुण्यकालो दि.१२।०० यावत् पुण्याहः,अशुद्धारम्भः,विवाहपञ्चमी,**सीतारामविवाहोत्सव ← |
| ६ | चं. | २६।२० | सं.६।३४ | शतभिषा | रा.४।४६ | वज्र | ४६।२४ | कुम्भ | अहोरात्र | ६।५० | ५।१० | २ | १८ | **मासादिः,**स्कन्दषष्ठी ६,शिववास,सिद्धियोग। ←शिववासः,अग्निवासः,**पञ्चकारम्भः(भदवा) दि.८।०५ उपरि।** |
| ७ | मं. | २३।२६ | दि.४।१२ | पूर्वाभा | रा.३।१० | सिद्धि | ३८।२६ | कुम्भ | रा.६।३५ | ६।५० | ५।१० | ३ | १९ | अमृतयोगः सं.४।१२ यावत् ततः सिद्धियोगः, अग्निवासः। भद्रा २३।२६ उपरि भद्रा ५०।२७ यावत्। |
| ८ | बु. | १७।२६ | दि.१।४६ | उत्तराभा | रा.१।३५ | व्यती | ३०।४४ | मीन | अहोरात्र | ६।५० | ५।१० | ४ | २० | मृत्युयोगः दि.१।४६ यावत् ततः शिववासः। |
| ९ | गु. | ११।५१ | दि.११।३४ | रेवती | रा.१२।११ | वरीयान् | २३।१६ | मीन | रा.१२।११ | ६।५० | ५।१० | ५ | २१ | **महानन्दानवमी** ९ व्रतं, शिववासः, अग्निवासः,सर्वार्थसिद्धियोगः, **पञ्चक(भदवा) समाप्तिः रा.१२।११ उपरि।** |
| १० | शु. | ०७।१४ | दि.६।४३ | अश्विनी | रा.११।०२ | परिघ | १६।१५ | मेष | अहोरात्र | ६।५० | ५।१० | ६ | २२ | सिद्धियोगः दि.६।४३उपरि,सर्वार्थसिद्धियोगः। भद्रा ३५।०७ उपरि,पश्चिमां विनायात्रा। |
| ११ | श. | ०३।०१ | दि.८।०२ | भरणी | रा.१०।१४ | शिव | ६।५३ | मेष | रा.४।०८ | ६।५० | ५।१० | ७ | २३ | द्वा.ति.५६।४०,शिववासः दि.८।०२ उपरि, **मोक्षदाएकादशी११ व्रतं सर्वेषाम्। गीताजयन्ती।** केशव१२,मत्सद्वादशीव्रतं। |
| १३ | र. | ५७।१६ | रा.शे५।४५ | कृत्तिका | रा.६।४७ | सिद्ध | ४।१० | वृष | अहोरात्र | ६।५० | ५।१० | ८ | २४ | सा.यो.५५।०८, शिववासः,अग्निवासः,सिद्धियोगः, गोमूत्रेणपारणं, **प्रदोष १३ व्रतं।** |
| १४ | चं. | ५६।१२ | रा.शे५।१८ | रोहिणी | रा.६।४७ | शुभ | ५५।२१ | वृष | अहोरात्र | ६।५० | ५।१० | ९ | २५ | **प्रदोष १४ व्रतं।** सर्वार्थसिद्धियोगः। भद्रा ५६।१२ उपरि |
| १५ | मं. | ५६।२० | रा.शे५।२२ | मृगशिरा | रा.१०।१६ | शुक्ल | ५२।२५ | वृष | दि.१०।०२ | ६।५० | ५।१० | १० | २६ | मार्गी१५ स्नानदानादिः पूर्णिमा। हरिहरक्षेत्रस्नानं, हरिहरनाथपूजनदर्शनादिकं। **दत्तात्रेयावतारः।** अग्निवासः। ⌃ |
| | | | | | | | | | | | | | | ⌃ भद्रा २६।१६ यावत्, उत्तरां विनायात्रा रा.१०।१६ यावत्, भौमवती अमावस्या। |

| तिथयः | | तिथिमान | | नक्षत्रमान | | योग | | चन्द्रराशि | | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | पौषकृष्णपक्षः शक १६४५, संवत् २०८०, सन् १४३१, दक्षिणायण, दक्षिणगोलः, हेमन्त ऋतुः, पूर्वे कालः, दिनांक २७ दिसम्बर तः ११ जनवरी यावत् सन् २०२४ ई। |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः | द. प. | राशिः | घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| १ | बु. | ५७ ।४६ | रो.शे५ ।५४ | आर्द्रा | रा.३ ।१५ | ब्रह्म | ५० ।२८ | मिथु | अहोरात्र | ६ ।५० | ५ ।१० | ११ | २७ | **पौषे कौशीकीस्नानं महापुण्यप्रदं,** शिववासः, अमृतयोगः। दग्धतिथि द्वितीया रा.शे.५ ।५४ उपरि। |
| २ | गु. | ६० ।०० | अहोरात्र | पुनर्वसु | रा.१२ ।४५ | ऐन्द्र | ४६ ।२८ | मिथु | सं.७ ।२२ | ६ ।५० | ५ ।१० | १२ | २८ | सर्वार्थसिद्धियोगः, अग्निवासः। पश्चिम यात्रा रा.१२ ।४५ यावत् ततः दक्षिणां विनायात्रा, दग्धतिथि अहोरात्र |
| २ | शु. | ०० ।२६ | प्रा.७ ।०१ | पुष्य | रा.२ ।४२ | वैधृति | ४६ ।२२ | कर्क | अहोरात्र | ६ ।५० | ५ ।१० | १३ | २६ | **पूर्वाषाढ़ायां रविः ४७ ।३६,** मृत्युयोगः प्रा.७ ।०१ यावत् ततः पश्चिमां विनायात्रा २ ।४२ यावत्।← |
| ३ | श. | ०४ ।१६ | दि.८ ।३३ | आश्लेषा | रा.४ ।५८ | विष्कुम्भ | ५० ।०० | कर्क | रा.४ ।५८ | ६ ।५० | ५ ।१० | १४ | ३० | **लम्बोदर४ व्रत।** शिववासः-अग्निवासः दि.८ ।३३ उपरि। सिद्धियोगः दि.८ ।३३ उपरि। भद्रा ४ ।१६ यावत् |
| ४ | र. | ०६ ।०२ | दि.१० ।२५ | मघा | अहोरात्र | प्रीति | ५१ ।०३ | सिंह | अहोरात्र | ६ ।४६ | ५ ।११ | १५ | ३१ | शिववासः, अमृतयोगः दि.१० ।२५ उपरि। ← अग्निवासः,दग्धतिथि प्रा.७ ।०१ यावत्, भद्रा ३३ ।२४ उपरि, |
| ५ | चं. | १४ ।१८ | दि.१२ ।३२ | मघा | प्रा.७ ।३० | आयुष्य | ५२ ।२६ | सिंह | अहोरात्र | ६ ।४६ | ५ ।११ | १६ | जन | **जनवरी२०२४,**शिववासः-अमृतयोगःदि.१२ ।३२यावत् ततः सिद्धियोग,अग्निवास। भद्रा १८ ।३३ उपरि,उत्तरयात्रा |
| ६ | मं. | १८ ।४६ | दि.२ ।१८ | पूर्वाफा | दि.१० ।०६ | सौभाग्य | ५३ ।४१ | सिंह | दि.४ ।४४ | ६ ।४८ | ५ ।१२ | १७ | २ | मृत्युयोगः दि.२ ।१८ यावत् ततः अमृतयोगः। ♍ अग्निवासः। पूर्व-दक्षिण यात्रा सं.४ ।४५ यावत्। |
| ७ | बु. | २४ ।५४ | सं.४ ।४५ | उत्तराफा | दि.१२ ।३८ | शोभन | ५४ ।३२ | कन्या | अहोरात्र | ६ ।४८ | ५ ।१२ | १८ | ३ | शिववासः सं.४ ।४५ उपरि, सिद्धियोगः सं.४ ।४५ यावत् ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१२ ।३८ उपरि, ♍ |
| ८ | गु. | २६ ।२१ | रा.६ ।३२ | हस्त | दि.२ ।५६ | अतिग | ५४ ।४६ | कन्या | रा.३ ।३४ | ६ ।४८ | ५ ।१२ | १६ | ४ | **अपूपाष्टका,** शिववासः, अमृतयोगः रा.६ ।३२ यावत् ततः मृत्युयोगः। पूर्वयात्रा रा.६ ।३२ यावत् |
| ६ | शु. | ३२ ।५२ | रा.७ ।५६ | चित्रा | दि.४ ।१२ | सुकर्मा | ५४ ।१२ | तुला | अहोरात्र | ६ ।४८ | ५ ।१२ | २० | ५ | **अन्वष्टकांश्राद्ध।** अमृतयोगः-अग्निवासः रा.७ ।५६ यावत्। दक्षिण यात्रा रा.७ ।५६ उपरि |
| १० | श. | ३५ ।१६ | रा.८ ।५३ | स्वाती | सं.६ ।२३ | धृति | ५२ ।४८ | तुला | अहोरात्र | ६ ।४७ | ५ ।१३ | २१ | ६ | मृत्युयोगः रा.८ ।५३ यावत् ततः अमृतयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः सं.६ ।२३ यावत्। भद्रा ४ ।०४ उपरि। |
| ११ | र. | ३६ ।२० | रा.६ ।१६ | विशाखा | रा.७ ।२५ | शूल | ४६ ।१६ | तुला | दि.१ ।०६ | ६ ।४७ | ५ ।१३ | २२ | ७ | **सफलाएकादशी११ व्रत सर्वेषाम्।** शिववासः, मृत्युयोग-अग्निवासः रा.६ ।१६ यावत् ततः उत्तरयात्रा। |
| १२ | चं. | ३६ ।०४ | रा.६ ।१२ | अनुराधा | रा.७ ।५४ | गण्ड | ४६ ।५१ | वृश्चि | अहोरात्र | ६ ।४७ | ५ ।१३ | २३ | ८ | **गोमयेन पारणं,** शिववासः, मृत्युयोगः रा.६ ।१२ यावत् ततः पश्चिम-उत्तर यात्रा रा.१२ ।०६ उपरि। |
| १३ | मं. | ३४ ।३४ | रा.८ ।३६ | ज्येष्ठा | रा.७ ।३६ | वृद्धि | ४२ ।२३ | वृश्चि | रा.७ ।३६ | ६ ।४७ | ५ ।१३ | २४ | ६ | **प्रदोष१३ व्रत।** सिद्धियोग। **दसतारकारम्भः रा.७ ।३५ उपरि।** अग्निवासः। पश्चिमयात्रा रा.७ ।१६ यावत्। |
| १४ | बु. | ३१ ।५६ | रा.७ ।३३ | मूल | रा.७ ।२८ | ध्रुव | ३६ ।२६ | धनु | अहोरात्र | ६ ।४६ | ५ ।१४ | २५ | १० | **प्रदोष १४ व्रत।** अग्निवासः रा.७ ।३३ उपरि। भद्रा ३ ।१६ यावत्। |
| ३० | गु. | २८ ।२० | सं.६ ।०६ | पूर्वाषाढा | रा.६ ।४१ | व्याघात | ३१ ।०२ | धनु | रा१२ ।२४ | ६ ।४६ | ५ ।१४ | २६ | ११ | **पौषी अमावस्या स्नानदान श्राद्धादौ।** शिववासः सं.६ ।०६, अग्निवासः, **उत्तराषाढ़ायां रविः ४६ ।२३ रा.२ ।३१।** |

**पौषशुक्लपक्षः** शक १९४५, संवत् २०८०, सन् १४३१, दक्षिणायण, दक्षिणगोलः, हेमन्त ऋतुः , पूर्वे कालः, **दिनांक १२ जनवरी तः २५ जनवरी यावत् सन् २०२४ ई।**

| तिथयः | | तिथिमानानि | | नक्षत्रमान | | योगः | | चन्द्रराशि | | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः | द. प | राशिः | घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| १ | शु. | २३।५३ | दि.४।१६ | उ.षाढ़ा | दि.५।३१ | हर्षण | २४।१८ | मकर | अहोरात्र | ६।४६ | ५।१४ | २७ | १२ | चन्द्रदर्शन। सिद्धियोगः-अग्निवासः दि.४।१६ यावत् ततः शिववासः,सर्वार्थसिद्धियोगः दि.५।३१ उपरि। |
| २ | श. | १८।४६ | दि.२।१६ | श्रवण | दि.४।०८ | वज्र | १७।०३ | मकर | रा.२।४५ | ६।४५ | ५।१५ | २८ | १३ | शिववास दि.२।१६या.ततःअग्निवास,सर्वार्थसिद्धियोग-पूर्वांविनायात्रा दि.४।८ या,**पञ्चकारंभ(भदवा)दि.४।८उपरि,** |
| ३ | र. | १३।१४ | दि.१२।०२ | धनिष्ठा | दि.१।२३ | सिद्धि | ६।२६ | कुम्भ | अहोरात्र | ६।४५ | ५।१५ | २९ | १४ | मासान्तः, **श्रीगणेश ४ व्रत।** ← **तिलसंक्रान्तिः,** माघस्नानारम्भः,प्रयागेकल्पवासारम्भः,शुद्धारम्भः,उत्तरायणारम्भः। |
| ४ | चं. | ०७।२५ | दि.६।४३ | शतभिषा | दि.१२।५६ | व्यती | १।३६ | कुम्भ | प्रा६।४१ | ६।४५ | ५।१५ | १ | १५ | **व.यो.५२।०५। मकरे रविः ४।५४ सौम्यायनसंक्रान्तिःपुण्यकालो दि.८।४२ उपरि दि.३।२६यावत् पुण्याहः** ← |
| ५ | मं. | ०१।३१ | प्रा.७।२१ | पूर्वाभा | दि.११।१६ | परिघ | ४५।५३ | मीन | अहोरात्र | ६।४५ | ५।१५ | २ | १६ | ष.ति.५४।१६,मासादिः। शिववास,। ♍ दि.८।१४ यावत् ततः दक्षिणां विनायात्रा रा.१२।५६ यावत्। |
| ७ | बु. | ५०।२३ | रा.२।५३ | उत्तराभा | दि.६।३६ | शिव | ३८।१६ | मीन | दि.८।१४ | ६।४४ | ५।१६ | ३ | १७ | **मुण्डनं,कर्णवेधः,विवाहः दिवारात्रौ, गृहप्रवेशः,**सिद्धियोग,अग्निवास। पश्चि यात्रा दि.८।१४यावत् ततः पूर्वयात्रा। |
| ८ | गु. | ४५।३१ | रा.१२।५६ | रेवती | दि.०८।१४ | सिद्ध | ३१।०६ | मेष | अहोरात्र | ६।४४ | ५।१६ | ४ | १८ | **विवाहः रा.१२।५६ यावत्,**सर्वार्थसिद्धियोगः,**पञ्चक(भदवा) समाप्ति दि.८।१४ उपरि।** पूर्व-उत्तर यात्रा ♍ |
| ९ | शु. | ४१।२३ | रा.११।१७ | अश्विनी | दि.७।०१ | साध्य | २४।३३ | मेष | अहोरात्र | ६।४४ | ५।१६ | ५ | १९ | भ.न.५७।५१,**दसतारकसमाप्तिः** दि.७।०१ उपरि,शिववासः,अमृतयोगः,सर्वार्थसिद्धियोगः दि.७।१यावत्,अग्निवास। |
| १० | श. | ३८।०८ | रा.९।५८ | कृत्तिका | रा.शे५।३५ | शुभ | १८।३८ | मेष | दि१२।२६ | ६।४३ | ५।१७ | ६ | २० | **विश्वकमार्चा, कर्मदशमी।** ❖ भद्रा७।०१ तः ३५।५५ यावत्,पूर्व-दक्षिणयात्रा रा.९।५उपरि, |
| ११ | र. | ३५।५५ | रा.९।०५ | रोहिणी | रा.शे५।२६ | शुक्ल | १३।३१ | वृष | अहोरात्र | ६।४३ | ५।१७ | ७ | २१ | **पुत्रदाएकादशी११ व्रतं सर्वेषां,**मन्वादि, **विवाहः** रा.९।०५यावत्। **मारार्केपौषे उपनयनं निषिद्धं,** ❖ |
| १२ | चं. | ३४।५७ | रा.८।४० | मृगशिरा | रा.शे५।५० | ब्रह्म | ९।१७ | वृष | दि.५।३९ | ६।४२ | ५।१८ | ८ | २२ | नारायण१२ गोममयेन पारण। शिववासः,**गृहप्रवेशः-विवाहः** रा.८।४० उपरि,सर्वार्थसिद्धियोगः,अग्निवासः।☒ |
| १३ | मं. | ३५।१३ | रा.८।४७ | आद्रा | अहोरात्र | ऐन्द्र | ६।०० | मिथुन | अहोरात्र | ६।४२ | ५।१८ | ९ | २३ | **प्रदोष१३ व्रत।** शिववासः,सिद्धियोगः। ☒ पूर्वां विनायात्रा रा.८।४० उपरि, दग्धतिथि रा.८।४० यावत्। |
| १४ | बु. | ३६।४६ | रा.९।२४ | आर्द्रा | प्रा.६।४२ | वैधृति | ३।४५ | मिथुन | रा१।४५ | ६।४१ | ५।१९ | १० | २४ | **प्रदोष १४ व्रत। गृहप्रवेशः रा.१।०० उपरि चक्रशुद्धि,** अग्निवासः। भद्रा३६।४९ उपरि। **श्रवणे रविः ४५।४७।** |
| १५ | गु. | ३९।३७ | रा.१०।३० | पुनर्वसु | दि.८।०५ | विष्कुम्भ | २।३२ | कर्क | अहोरात्र | ६।४० | ५।२० | ११ | २५ | **पौषी पूर्णिमा १५,स्नानदान-व्रतादौ, गृहारम्भ, कौशिकी स्नान,शाकम्भरीजयन्ती,** ♋ |
| | | | | | | | | | | | | | | ♋ **सर्वार्थसिद्धियोगःदि.८।५ यावत्,**पश्चिम-उत्तर यात्रा दि.८।५यावत् ततःदक्षिणांविनायात्रा |

## माघकृष्णपक्षः शक १९४५, संवत् २०८०,सन् १४३१,उत्तरायण,दक्षिणगोलः, शिशिर-ऋतु , पूर्वे कालः, दिनांक २६ जनवरी तः ९ फरवरी यावत् सन् २०२४ ई।

| तिथय दिनानि | तिथिमान द. प. | तिथिमान घं. मि. | नक्षत्रमान नक्षत्राणि | नक्षत्रमान घं. मि. | योग योगाः | योग द. प. | चन्द्रराशि राशिः | चन्द्रराशि घ. मि. | सूर्योदय घं.मि. | सूर्यास्त घं.मि. | दिनांक गते | दिनांक ता | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ शु. | ४३।३४ | रा.१२।०५ | पुष्य | दि.६।५६ | प्रीति | २।०८ | कर्क | अहोरात्रं | ६।४० | ५।२० | १२ | २६ | माघे कमलास्नानं महापुण्यप्रदं, **गणतन्त्रदिवसः,कर्णवेध**,शिववास,अग्निवास,पश्चिमां विनायात्रा दि.६।५६या। |
| २ श. | ४८।२१ | रा.२।०० | आश्लेषा | दि.१२।०६ | आयु. | २।३५ | कर्क | दि.१२।०६ | ६।४० | ५।२० | १३ | २७ | शुभयोगः। ♍सर्वार्थसिद्धियोग,अग्निवासः प्रा.७।२२ यावत् ततः शिववास, पश्चिमां विनायात्रा। |
| ३ र. | ५३।४० | रा.४।०७ | मघा | दि.२।३७ | सौभाग्य | ३।३४ | सिंह | अहोरात्रं | ६।३९ | ५।२१ | १४ | २८ | सिद्धियोगः,अग्निवासः,पूर्व-उत्तरयात्रा दि.२।३७उपरि। |
| ४ चं. | ५६।०६ | रा.शे६।१६ | पूर्वाफा. | सं.५।१४ | शोभन | ४।५४ | सिंह | रा.११।५२ | ६।३८ | ५।२२ | १५ | २९ | **भालचन्द्र४ व्रतं, श्रीगणेशावतारः**, गणेशपूजनं, शिववासः, उत्तराषाढायां बुध दि.१०।५२ |
| ५ मं. | ६०।०० | अहोरात्र | उत्तराफा. | रा.७।४७ | अति. | ६।१४ | कन्या | अहोरात्रं | ६।३७ | ५।२३ | १६ | ३० | शिववासः, अग्निवासः, पूर्व-दक्षिण यात्रा रा.७।४७ उपरि। |
| ५ बु. | ०४।१२ | दि.८।१७ | हस्त | रा.१०।०६ | सुकर्मा | ७।१८ | कन्या | अहोरात्रं | ६।३७ | ५।२३ | १७ | ३१ | **विवाह** दिवारात्रौ,**मुण्डनं-कर्णवेधः** पंचम्यां दि.८।१७या.। सर्वार्थसिद्धियोग,शिववासःदि.८।१७या.। |
| ६ गु. | ०८।३६ | दि.१०।०३ | चित्रा | रा.१२।११ | धृति | ७।५१ | कन्या | दि.११।०६ | ६।३६ | ५।२४ | १८ | फर | अग्निवासः, पूर्व यात्रा दि.११।०६ यावत् ततः पश्चिम यात्रा, **विवाहः चित्रायाम्।** |
| ७ शु. | १२।०० | दि.११।२४ | स्वाती | रा.१।४७ | शूल | ७।३७ | तुला | अहोरात्रं | ६।३६ | ५।२४ | १९ | २ | **श्रीरामानन्दाचार्यजयन्ती,** मृत्युयोगः दि.११।२४ यावत् ततः दक्षिणयात्रा-शिववासः। |
| ८ श. | १४।१६ | दि.१२।१८ | विशाखा | रा.२।५४ | गण्ड | ६।३२ | तुला | रा.८।३७ | ६।३५ | ५।२५ | २० | ३ | **अपूपाष्टका,** सिद्धियोगः दि.१२।२८ उपरि, शिववासः दि.१२।२८ यावत्, अग्निवासः। |
| ९ र. | १५।१३ | दि.१२।३६ | अनुराधा | रा.३।३१ | वृद्धि | ४।२६ | वृश्चिक | अहोरात्रं | ६।३४ | ५।२६ | २१ | ४ | अन्वष्टकाश्राद्ध, **विवाह** दि.१२।३६उपरि,अमृतयोग-अग्निवास-उत्तर यात्रा दि.१२।३६उपरि,भद्रा४४।५६उ. |
| १० चं. | १४।४६ | दि.१२।२८ | ज्येष्ठा | रा.३।३८ | ध्रुव | १।२१ | वृश्चिक | रा.३।३८ | ६।३४ | ५।२६ | २२ | ५ | विवाहः मूले रा.३।३८ उपरि, अमृतयोगः दि.१२।२८ यावत् ततः सिद्धियोग-शिववास, अग्निवास्। |
| ११ मं. | १३।०६ | दि.११।४८ | मूल | रा.३।१८ | हर्षण | ५२।१६ | धनु | अहोरात्रं | ६।३३ | ५।२७ | २३ | ६ | **षट्तिलाएकादशी११ व्रतं सर्वेषाम्। धनिष्ठायां रवि ५८।०३,** शिववास,अग्निवास-पूर्वयात्रा दि.११।४८उपरि, |
| १२ बु. | १०।३६ | दि.१०।४६ | पूर्वाषाढा | रा.२।३३ | वज्र | ४६।३० | धनु | अहोरात्रं | ६।३२ | ५।२८ | २४ | ७ | गोदुग्धेन पारणं, **प्रदोष १३ व्रतं, विवाह** रा.२।३३ उपरि,शिववासः-अग्निवासः-सिद्धियोगः दि.१०।४६या.। |
| १३ गु. | ०६।४१ | दि.६।१२ | उत्तराषाढा | रा.१।३० | सिद्धि | ४०।०१ | धनु | दि.८।१७ | ६।३२ | ५।२८ | २५ | ८ | **प्रदोष१४ व्रतं,नरकनिवारण१४ व्रतं,** प्रदोषेशिवार्चनं सहस्राश्वमेधसमफलदं, **कुशेश्वर-कपिलेश्वरप्रतिष्ठादिनं।** |
| १४ शु. | ०२।०८ | प्रा.७।२२ | श्रवण | रा.१२।०६ | व्यती. | ३२।५७ | मकर | अहोरात्रं | ६।३१ | ५।२९ | २६ | ९ | अमावस्यातिथिमांन५५।४८,माघीअमावस्या,मौनीअमावस्या,पञ्चकारम्भः(भदवा)रा.१२।०६उपरि,कलियुगादि ♍ |

| तिथयः | | तिथिमानानि | | नक्षत्रमान | | योगः | | चन्द्रराशि | | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | माघशुक्लपक्षः शक१९४५, संवत् २०८०, सन् १४३१, उत्तरायण, दक्षिणगोलः, शिशिर-ऋतुः, पूर्वे कालः, दिनांक १० फरवरी तः २४ फरवरी यावत् सन् २०२४ ई। |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः | द. प. | राशिः | घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| १ | श. | ५१।१८ | रा.३।०१ | धनिष्ठा | रा.१०।३७ | वरीयान् | २५।२८ | मकर | दि.११।२३ | ६।३० | ५।३० | २७ | १० | **शिशिरनवरात्रारम्भः, कलशस्थापनं, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः**, अमृतयोगः। |
| २ | र. | ४५।२८ | रा.१२।४१ | शतभिषा | रा.६।०० | परिघ | १७।४३ | कुम्भ | अहोरात्रं | ६।३० | ५।३० | २८ | ११ | रेमन्तपूजा,शिववास,अग्निवास। ← प्रयागेकल्पवाससमाप्तिः, ने.फाल्गुनमासारम्भः। दक्षिणेकाल। |
| ३ | चं. | ३६।३४ | रा.१०।१८ | पूर्वाभाद्र | रा.७।२० | शिव | ६।४६ | कुम्भ | दि.१।४४ | ६।२६ | ५।३१ | २६ | १२ | मासान्तः,वदरी३,कुन्दकुसुमैः पार्वतीपूजनं,पश्चिम यात्रा दि.१।४४ यावत् ततः उत्तर यात्रा। |
| ४ | मं. | ३४।४६ | रा.८।२३ | उत्तराभाद्र | सं.५।४१ | सिद्ध | २।०१ | मीन | अहोरात्रं | ६।२८ | ५।३२ | १ | १३ | **श्रीगणेश४ व्रतं,कुम्भेरविः३२।२१,**विष्णुपदिसंक्रान्तिपुण्यकाल दि.१२।००उपरि पुण्याहः,माघस्नानसमाप्तिः ← |
| ५ | बु. | २८।२८ | सं.५।५१ | रेवती | दि.४।१३ | शुभ | ४७।१० | मीन | दि.४।१३ | ६।२८ | ५।३२ | २ | १४ | **मासादिः,वसन्तपञ्चमी,सरस्वतीपूजनं,**तक्षकपूजा,पश्चिमाभिमुख हलप्रवाहः। **पञ्चक(भदवा) समाप्ति दि.४।१३उपरि।** |
| ६ | गु. | २३।३८ | दि.३।५४ | अश्विनी | दि.२।५६ | शुक्ल | ४०।२५ | मेष | अहोरात्रं | ६।२७ | ५।३३ | ३ | १५ | शीतलाषष्ठी,**विवाहः-द्विरागमनं-देवादिप्रतिष्ठा** अश्विन्यां दि.२।५६ यावत्। शिववासः-अग्निवासःदि.३।५४यावत्। |
| ७ | शु. | १९।३६ | दि.२।१६ | भरणी | दि.२।०३ | ब्रह्म | ३४।२० | मेष | रा.७।५५ | ६।२६ | ५।३४ | ४ | १६ | पत्रिकाप्रवेशः,महारात्रिर्निशापूजा, **अचलासप्तमी ७ व्रतं,**मृत्युयोगः दि.२।१६ यावत्,अग्निवासः दि.२।१६उपरि। |
| ८ | श. | १६।२५ | दि.१।०० | कृत्तिका | दि.१।३० | ऐन्द्र | २६।०० | वृष | अहोरात्रं | ६।२६ | ५।३४ | ५ | १७ | **महाष्टमीव्रतं,**दीक्षाग्रहणं,भीष्माष्टमीव्रत। सर्वार्थसिद्धियोग दि.१।३०उपरि,अग्निवास दि.१।००यावत् ततःशिववास। |
| ९ | र. | १४।१६ | दि.१२।०७ | रोहिणी | दि.१।१२ | वैधृति | २४।२९ | वृष | रा.१।२१ | ६।२५ | ५।३५ | ६ | १८ | **महानन्दानवमी,श्रीहरसूब्रह्मदेवजयन्ती९। विवाहः-द्विरागमनं-देवादिप्रतिष्ठा** दि.१२।७ उ.,शिववास,अग्निवास। |
| १० | चं. | १३।१९ | दि.११।४४ | मृगशिरा | दि.१।२९ | विष्कुम्भ | २०।५८ | मिथुन | अहोरात्रं | ६।२५ | ५।३५ | ७ | १९ | विजयादशमी, **गृहारम्भः-गृहप्रवेशः-विवाहः-मुण्डनं-कर्णविध-उपनयनं-द्विरागमनं-देवादिप्रतिष्ठा** दि.१।२९यावत्। |
| ११ | मं. | १४।४१ | दि.१२।१६ | आर्द्रा | दि.२।१५ | प्रीति | १८।२७ | मिथुन | अहोरात्रं | ६।२४ | ५।३६ | ८ | २० | **भैमीएकादशी११** व्रतं सर्वेषां,**व्रतोद्यापनम्।** सन्तान१२। **छन्दोगानां उपनयनं। शतभिषायां रविः ७।५२** |
| १२ | बु. | १५।२१ | दि.१२।३१ | पुनर्वसु | दि.३।३१ | आयुष्य | १६।५८ | मिथुन | दि.९।१२ | ६।२३ | ५।३७ | ९ | २१ | गोदुग्धेनपारण,**प्रदोष१३व्रतं,गृहारम्भ दि.३।३१ यावत्,गृहप्रवेशः,क्ष.वै.उपनयनं, द्विरामगनं,मुण्डनं,कर्णविधः।** |
| १३ | गु. | १८।१२ | दि.१।३८ | पुष्य | दि.५।१४ | सौभाग्य | १६।२१ | कर्क | अहोरात्रं | ६।२२ | ५।३८ | १० | २२ | **प्रदोष**१४ व्रतं,**गृहप्रवेशः-मुण्डनं-कर्णविध-द्विरागमनं-देवादिप्रतिष्ठा** दि.१।३८ यावत्। सर्वार्थसिद्धियोग,अग्निवास। |
| १४ | शु. | २२।१३ | दि.३।१५ | आश्लेषा | रा.७।२४ | शोभन | १६।३८ | कर्क | रा.७।२४ | ६।२२ | ५।३८ | ११ | २३ | **व्रताय पूर्णिमा।** अमृतयोगः,भद्रा २२।१३ उपरि। **देवादिप्रतिष्ठा,**शिववास,दक्षिणपश्चिमयात्रा दि.१२।३१ या.। |
| १५ | श. | २७।०१ | सं.५।०६ | मघा | रा.६।४६ | अतिगण्ड | १७।३२ | सिंह | अहोरात्रं | ६।२१ | ५।३६ | १२ | २४ | **माघीपूर्णिमा१५** स्नानदानादि,गोशालाघट्टे कमलायां स्नानदानशिवार्चनादिकं,श्रीरविदासजयन्ती। अग्निवासः। |

| तिथयः | | तिथिमान | | नक्षत्रमान | | योग | | चन्द्रराशि | | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | **फाल्गुनकृष्णपक्षः** शक१६४५, संवत् २०८०,सन् १४३१, उत्तरायण,दक्षिणगोलः, शिशिर-ऋतु, दक्षिणे कालः, **दिनांक २५ फरवरी तः १० मार्च यावत् सन् २०२४ ई।** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | दिनानि | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः | द. प. | राशिः | घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| १ | र. | ३२।१६ | रा.७।१५ | पूर्वाफा | रा.१२।२५ | सुकर्मा | १८।५२ | सिंह | अहोरात्र | ६।२० | ५।४० | १३ | २५ | फाल्गुने वाङ्मतिस्नानं महापुण्यप्रदं, राहुवेधात् विवाहःमध्यम-**द्विरागमनं** रा.१२।२५उपरि। शिववासः। |
| २ | चं. | ३७।४२ | रा.६।२३ | उत्तराफा | रा.०३।०० | धृति | २०।१६ | सिंह | दि.७।०३ | ६।१९ | ५।४१ | १४ | २६ | **मुण्डनं, कर्णविधः, गृहारम्भः, विवाहः दिवारात्रौ, द्विरागमनं** रा.६।२३ उपरि, वधूप्रवेशः। अग्निवासः |
| ३ | मं. | ४२।४२ | रा.११।२२ | हस्त | रा.०५।२५ | शूल | २१।३५ | कन्या | अहोरात्र | ६।१८ | ५।४२ | १५ | २७ | सिद्धियोगः, पूर्व-दक्षिणयात्रा रा.११।२२ यावत्, भद्रा १५।१२ उपरि। |
| ४ | बु. | ४७।०१ | रा.१।०६ | चित्रा | अहोरात्र | गण्ड | २२।२१ | कन्या | रा.६।३० | ६।१८ | ५।४२ | १६ | २८ | **श्रीहेरम्ब**४ व्रतं, **विवाहः-द्विरागमनं-वधूप्रवेशः** पञ्चम्यां रा.१।०६ उपरि,शिववासः,अग्निवासः। |
| ५ | गु. | ५०।१४ | रा.२।२२ | चित्रा | दि.७।३३ | वृद्धि | २२।२८ | तुला | अहोरात्र | ६।१७ | ५।४३ | १७ | २९ | **मुण्डनं,कर्णविधः, द्विरागमनं,वधूप्रवेशः,गृहारम्भः चित्रायां दि.७।३३ यावत्।** सिद्धियोगः,शिववास। |
| ६ | शु. | ५२।२५ | रा.३।१४ | स्वाती | दि.६।१४ | ध्रुव | २१।४० | तुला | रा.४।१० | ६।१६ | ५।४४ | १८ | मार्च | सिद्धियोगः, अग्निवासः, दक्षिण यात्रा रा.६।१४ यावत्, भद्रा ५२।२५ उपरि। |
| ७ | श. | ५३।१० | रा.३।३१ | विशाखा | दि.१०।२८ | व्याघात | १९।५८ | वृश्चिक | अहोरात्र | ६।१५ | ५।४५ | १९ | २ | **श्रीहनुमत्पूजनोत्सवः** नौलागढ़, पश्चिम-उत्तर यात्रा रा.३।३१ उपरि, भद्रा २२।४७ यावत्। |
| ८ | र. | ५२।३६ | रा.३।१८ | अनुराधा | दि.११।०८ | हर्षण | १७।१५ | वृश्चिक | अहोरात्र | ६।१४ | ५।४६ | २० | ३ | शाकाष्टका। **विवाहः** अनुराधायां दि.११।०८ यावत्। सिद्धियोगः, शिववासः, उत्तर यात्रा रा.३।१८ यावत्। |
| ९ | चं. | ५०।५१ | रा.२।३४ | ज्येष्ठा | दि.११।२२ | वज्र | १३।३१ | वृ. | दि.११।२२ | ६।१४ | ५।४६ | २१ | ४ | अन्वष्टका,अग्निवासः,**विवाहः रा.२।३४ उपरि। पूर्वाभाद्रपदायां रविः २२।४६**,शिववास। |
| १० | मं. | ४७।५८ | रा.१।२४ | मूल | दि.११।०८ | सिद्धि | ८।५१ | धनु | अहोरात्र | ६।१३ | ५।४७ | २२ | ५ | स्वामीदयानन्दसरस्वती जयन्ती। पूर्व यात्रा रा.१।२४ यावत्, भद्रा १९।२४ उपरि ४७।४८ यावत्। |
| ११ | बु. | ४४।०८ | रा.११।५१ | पूर्वाषाढा | दि.१०।२७ | व्यतीपात | ३।२१ | धनु | दि.४।०३ | ६।१२ | ५।४८ | २३ | ६ | **विजयाएकादशी**११व्रतं सर्वेषाम्। **विवाहः दि.१०।२८उपरि।** अमृतयोगः,शिववासः,अग्निवासः,पूर्वयात्रा। |
| १२ | गु. | ३९।२७ | रा.६।५७ | उत्तराषा | दि.०८।४७ | परिघ | ५०।१८ | मकर | अहोरात्र | ६।११ | ५।४९ | २४ | ७ | गोदध्नापारणं,**विवाहः दिवारात्रौ,** शिववासः, पूर्व यात्रा दि.८।४७ यावत् ततः दक्षिणां विनायात्रा। |
| १३ | शु. | ३४।०६ | रा.७।४९ | श्रवण | दि.०८।१० | शिव | ४२।५७ | मकर | रा.७।२६ | ६।१० | ५।५० | २५ | ८ | **विवाहः रा.७।३९ या.,प्रदोष१३-१४ व्रतं,**नक्तव्रतं, **महाशिवरात्रिव्रतं,**श्रीगौरीशंकरविवाहोत्सवः,श्रीशिवदर्शनं |
| १४ | श. | २८।२८ | सं.५।३३ | धनिष्ठा | प्रा.६।४२ | सिद्ध | ३५।१९ | कुम्भ | अहोरात्र | ६।१० | ५।५० | २६ | ९ | महाशिवरात्रिव्रतस्य पारणा,सिद्धियोगः, भद्रा१।१८यावत्। **पञ्चकारम्भः(भदवा) दि.८।१०उपरि** |
| ३० | र. | २२।३१ | दि.३।०६ | पूर्वाभाद्र | रा.३।२४ | साध्य | २७।३३ | कुम्भ | रा.६।४१ | ६।०९ | ५।५१ | २७ | १० | **फाल्गुनीअमावस्या** स्नानदानादिः,**गोसहस्रिका३०,मन्वादिः,** विवाहः रा.३।२४ उपरि,शिववासः,अग्निवासः। |

| तिथयः | | तिथिमानानि | | नक्षत्रमान | | योगः | | चन्द्रराशि | | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | फाल्गुनशुक्लपक्षः शक१६४५, संवत् २०८०,सन् १४३१, उत्तरायण, दक्षिणगोलः, शिशिर/वसन्त-ऋतु दक्षिणे कालः, **दिनांक ११ मार्च तः २५ मार्च यावत् सन् २०२४ ई।** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः | द. प. | राशिः | घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| १ | चं. | १६।३३ | दि.१२।४५ | उत्तराभाद्र | रा.१२।५५ | शुभ | १६।४८ | मीन | | ६।०८ | ५।५२ | २८ | ११ | **जनकपुरपरिक्रमारम्भः**। श्रीरामकृष्णपरमहंसजयन्ती, **मुण्डनं द्वितीयायां, कर्णवेधः, विवाहः दिवारात्रौ, द्विरागमनं,** |
| २ | मं. | १०।४६ | दि.१०।२५ | रेवती | रा.१२।१४ | शुक्ल | १२।१० | मीन | ४५।१८ | ६।०७ | ५।५३ | २९ | १२ | अमृतयोग-शिववास दि.१०।२५यावत्, **पञ्चक(भदवा)समाप्त रा.१२।१४यावत्।** |
| ३ | बु. | ०५।२१ | दि.८।१४ | अश्विनी | रा.१०।५४ | ब्रह्म | ४।५१ | मेष | | ६।०६ | ५।५४ | ३० | १३ | **श्रीगणेश**४ व्रतं, **मासान्तः**। मृत्युयोगः दि.८।१४ यावत्, अग्निवासः दि.८।१४ यावत्, भद्रा ३२।५४ उपरि। |
| ४ | गु. | ००।२८ | रा.४।४० | भरणी | रा.६।५२ | वैधृति | ५१।४८ | मेष | ५४।०१ | ६।०६ | ५।५४ | १ | १४ | **पञ्चमीतिथिमानं५५।५७, मीने रविः २२।४२ दि.३।११ षडशीतिसंक्रान्तिः**पुण्यकालः दि.३।११उपरि पुण्याह≏ |
| ६ | शु. | ५४।१२ | रा.३।४५ | कृत्तिका | रा.६।१० | विष्कु | ४६।१६ | वृष | | ६।०५ | ५।५५ | २ | १५ | **गोरुपिणीषष्ठी, मासादि,** सिद्धियोगः,शिववास। ≏**खरमासारम्भः**। वसन्तऋतु,ने.चैत्रमासारम्भः। |
| ७ | श. | ५१।०७ | रा.२।३० | रोहिणी | रा.६।५२ | प्रीति | ४१।३५ | वृष | | ६।०४ | ५।५६ | ३ | १६ | कामदासप्तमी७ व्रतं। सर्वार्थसिद्धियोगः, पूर्व-दक्षिण यात्रा रा.६।५२ यावत् ततः पूर्वांविनायात्रा। |
| ८ | र. | ५०।१५ | रा.०२।०८ | मृगशिरा | रा.६।०१ | आयु | ३७।५० | वृष | ७।१२ | ६।०३ | ५।५७ | ४ | १७ | होलाष्टकारम्भः। **उत्तराभाद्रपदायां रविः ४३।२७ रा.११।२७।** सिद्धियोगः, पश्चिमांविनायात्रा, भद्रा२०।४१यावत् |
| ९ | चं. | ५०।३६ | रा.०२।१६ | आर्द्रा | रा.६।४१ | सौभाग्य | ३५।०६ | मिथुन | | ६।०२ | ५।५८ | ५ | १८ | शिववासः,अग्निवासः,दक्षिण-पश्चिमयात्रा रा.२।१६उपरि। **वधूप्रवेशः,देवादिप्रतिष्ठा,**सिद्धियोग दि.१२।४५यावत् |
| १० | मं. | ५२।१८ | रा.०२।५७ | पुनर्वसु | रा.१०।५१ | शोभन | ३३।२१ | मिथुन | २६।२० | ६।०२ | ५।५८ | ६ | १९ | दक्षिण-पश्चिम यात्रा रा.१०।५१ यावत् ततः उत्तरां विनायात्रा। |
| ११ | बु. | ५५।०६ | रा.०४।०३ | पुष्य | रा.१२।२६ | अतिग | ३२।३४ | कर्क | | ६।०१ | ५।५९ | ७ | २० | **उपनयनं,आमलकी११**व्रतं सर्वेषां,**व्रतोद्यापनं,**जनकपुर-अन्तगृहीयपरिक्रमारम्भ,रं[illegible]री**एकादशी,**उत्तरांविनायात्रा पुष्ये |
| १२ | गु. | ५६।०४ | रा.शे५।३७ | आश्लेषा | रा.०२।३३ | सुकर्मा | ३२।४० | कर्क | ५१।२३ | ६।०० | ६।०० | ८ | २१ | **उपनयनं,** गोविन्द१२, श्रीनृसिंह१२, गोदध्नापारणं, समुद्रस्नानं,श्रीजगन्नाथदर्शनं, शिवव[illegible]ः। |
| १३ | शु. | ६०।०० | अहोरात्र | मघा | रा.०४।५६ | धृति | ३३।२८ | सिंह | | ५।५९ | ६।०१ | ९ | २२ | **प्रदोष १३ व्रतं,** शिववासः। ⌘श्रीचैतन्यमहाप्रभुजयन्ती। अमृतयोगः, दक्षिण यात्रा दि.१०।०७ [illegible]परि। |
| १३ | श. | ०३।४८ | दि.७।२६ | पूर्वाफाल्गु | अहोरात्र | शूल | ३४।४६ | सिंह | | ५।५८ | ६।०२ | १० | २३ | **प्रदोष१४** व्रतं, सिद्धियोगः दि.७।२६ उपरि शिववासः दि.७।२६ यावत्, अग्निवासः, उत्तरयात्रा [illegible] ७।२६यावत् |
| १४ | र. | ०६।०३ | दि.६।३५ | पूर्वाफाल्गु | दि.७।३० | गण्ड | ३६।१६ | सिंह | २०।३० | ५।५८ | ६।०२ | ११ | २४ | **व्रतायपूर्णिमा। होलिकादाहः रा.१०।३८ उपरि, भद्रा ६।०३ उपरि ४१।४१ यावत्,** |
| १५ | चं. | १४।२० | दि.११।४१ | उत्तराफाल्गु | दि.१०।०७ | वृद्धि | ३७।४३ | कन्या | | ५।५७ | ६।०३ | १२ | २५ | **फाल्गुनीपूर्णिमा१५,**स्नानदानादि,**सावर्णिमन्वादिः। कुलदेवताभ्यःसिन्दूरार्पणःपातरिदानं,**जनकपुरपरिक्रमासमाप्ति⌘ |

| तिथय | | तिथिमान | | नक्षत्रमान | | योग | | चन्द्रराशि | | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | चैत्रकृष्णपक्षः शक१९४५, संवत् २०८०,सन् १४३१, उत्तरायण, दक्षिणंगोलः, वसन्त-ऋतु दक्षिणे कालः, **दिनांक २६ मार्च तः ८ अप्रैल यावत् सन् २०२४ ई।** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः | द. प. | राशिः | घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| १ | मं. | १६।१३ | दि.१।३७ | हस्त | दि.१२।३६ | ध्रुव | ३८।४४ | कन्या | ४६।२६ | ५।५६ | ६।०४ | १३ | २६ | **होलिकाभस्मधारणं, सचैलस्नानं, होली,** सप्तडोरकबन्धनं। चैत्रेलक्ष्मणास्नानंमहापुण्यप्रदं। शिववास दि.१।३७यावत् |
| २ | बु. | २५।२५ | दि.४।०५ | चित्रा | दि.२।४७ | व्याघात | ३६।०७ | तुला | | ५।५५ | ६।०५ | १४ | २७ | पश्चिम-दक्षिणयात्रा-सिद्धियोगः दि. ४।०५ यावत् ततः अग्निवासःभद्रा ५५।५६उपरि,दग्धतिथि दि.४०५यावत्। |
| ३ | गु. | २६।२८ | दि.४।१६ | स्वाती | दि.४।३५ | हर्षण | ३८।३७ | तुला | | ५।५४ | ६।०६ | १५ | २८ | **श्रीविकटचतुर्थी** ४व्रतं, अमृतयोग, पश्चिमयात्रा-अग्निवासः दि.४।१६ यावत् ततः शिववासः,भद्रा२६।२८ यावत्। |
| ४ | शु. | २८।३० | सं.५।१८ | विशाखा | सं.५।५७ | वज्र | ३७।१८ | तुला | १४।१७ | ५।५४ | ६।०६ | १६ | २९ | अमृतयोगः सं.५।१८ यावत्, शिववासः, अग्निवासः सं. ५।१८ उपरि, उत्तर यात्रा सं.५।१८ उपरि। |
| ५ | श. | २६।०७ | सं.५।३१ | अनुराधा | सं.५।३५ | सिद्धि | ३४।५४ | वृश्चिक | | ५।५३ | ६।०७ | १७ | ३० | **रंगपञ्चमी ५ व्रतं,** मृत्युयोगः सं.५।३१ यावत् ततः पश्चिम-उत्तर यात्रा-अमृतयोगः, शिववास,अग्निवासः। |
| ६ | र. | २८।२६ | सं.५।१४ | ज्येष्ठा | रा.७।०७ | व्यतीपात | ३१।३२ | वृश्चिक | ३३।०८ | ५।५२ | ६।०८ | १८ | ३१ | **रेवत्यां रविः१०।४६।** मृत्युयोगः सं.५।१४ यावत्, ततः उत्तरयात्रा,अग्निवासः, भद्रा२८।२६ उपरि। |
| ७ | चं. | २६।०४ | दि.४।१६ | मूल | सं.०६।५८ | वरीयान् | २७।१० | धनु | | ५।५१ | ६।०६ | १९ | अप्रै | **भानुसप्तमी,**मासान्तः। मृत्युयोगः दि.४।१६ यावत् ततः उत्तरयात्रा, शिववासः। |
| ८ | मं. | २३।३८ | दि.३।१७ | पूर्वाषाढा | सं.६।२६ | परिघ | २१।५८ | धनु | ४५।५६ | ५।५० | ६।१० | २० | २ | **शीतलाष्टमी८ व्रतं,** सिद्धियोगः-शिववासः दि.३।१७ यावत्, अग्निवासः, पूर्व यात्रा दि.३।१७ यावत्। |
| ९ | बु. | १६।३९ | दि.१।४१ | उत्तराषा | [illegible].५।२९ | शिव | १५।५९ | मकर | | ५।५० | ६।१० | २१ | ३ | श्रीऋषभनाथ जी जयन्ती। उत्तरां विनायात्रा सं.५।२९ उपरि, भद्रा ४७।१५ उपरि। |
| १० | गु. | १४।५२ | दि.११।४५ | श्रवण | दि.४।१५ | सिद्ध | ९।२२ | मकर | ५४।१७ | ५।४९ | ६।११ | २२ | ४ | सिद्धियोगःदि.११।४५यावत् ततःशिववास,अग्निवास,**पञ्चकारम्भ (भदवा) दि.४।१५ उपरि,**दक्षिणां विनायात्रा। |
| ११ | शु. | ०६।२८ | दि.६।३५ | धनिष्ठा | दि.२।४८ | साध्य | २।१४ | कुम्भ | | ५।४८ | ६।१२ | २३ | ५ | **पापमोचनीएकादशी११ व्रतं सर्वेषां,** सिद्धियोगः दि.६।३५ यावत् ततः मृत्युयोगः, शिववासः,पश्चिम यात्रा। |
| १२ | श. | ०३।४१ | दि.७ [illegible]५ | शतभिषा | दि.१।११ | शुक्ल | ४७।०७ | कुम्भ | | ५।४७ | ६।१३ | २४ | ६ | **त्रयोदशीतिथि** रा.३।३४,गोघृतेनपारणं, **प्रदोष १३ व्रतं। महावारुणीयोगः** दि.७।१६ उपरि दि.१।१६ यावत्। |
| १४ | र. | ५१।[illegible]८ | रा.२।२५ | पूर्वाभाद्र | दि.११।३० | ब्रह्म | ३९।३६ | कुम्भ | ००।२३ | ५।४६ | ६।१४ | २५ | ७ | **प्रदोष१४ व्रतं।** अग्निवासः, भद्रा २४।५४ यावत्। |
| ३० | चं. | ४५।४६ | रा.१२।०४ | उत्तराभाद्र | दि.६।५२ | ऐन्द्र | ३१।४२ | मीन | | ५।४६ | ६।१४ | २६ | ८ | चैत्रीअमावस्या३०,स्नानदानादौ पुण्यतमा। विक्रमसंवत्२०८१ प्रारम्भोऽमान्तात्। **सोमवत्ती अवस्या,सोमवारी व्रत।** |
| | | | | | | | | | | | | | | **माहावारुणीयोगे गंगायां यदि स्नान-दानात् कोटि सूर्यग्रहण समफल लभ्यते।** शिववासः दि.७।१५यावत्। |

## चैत्रशुक्लपक्षः

शक१६४६, संवत् २०८०,सन् १४३१, उत्तरायण, दक्षिणगोलः, वसन्त-ऋतु
दक्षिणे कालः, **दिनांक ९ अप्रैल तः २३ अप्रैल यावत् सन् २०२४ ई।**

| तिथयः | | तिथिमानानि | | नक्षत्रमान | | योगः | चन्द्रराशि | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः द. प. | राशिः घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| १ | मं. | ४०।१८ | रा.६।५२ | रेवती | दि.८।१६ | वैधृतिः २४।२१ | मीन ६।२५ | ५।४५ | ६।१५ | २७ | ९ | **वसन्तनवरात्रारम्भः**,कलशस्थापनं,श्रीदुर्गापूजनोत्सवः,**पञ्चक(भदवा) समाप्तिः** दि.८।१६ **यावत्।** |
| २ | बु. | ३५।२१ | रा.७।५२ | अश्विनी | दि.६।५६ | विष्कुम्भ २०।४७ | मेष | ५।४४ | ६।१६ | २८ | १० | श्रीरेमन्तपूजा,झूलेलालजयन्ती,**चन्द्रदर्शनं**,शिववास। **सतुआइन**,यवविषुवसंक्रान्तिःपुण्यकालःदि.१२।००उपरि |
| ३ | गु. | ३१।१५ | सं.६।१३ | भरणी | प्रा.५।४६ | प्रीति ११।०३ | मेष २८।४६ | ५।४३ | ६।१७ | २९ | ११ | श्रीगौरी३ व्रतं,**मन्वादि**। श्रीगणेश४ व्रतं। सोपकरणवारिपूर्णघटदानं,वैशाखस्नानारम्भः,**खरमाससमाप्ति।** |
| ४ | शु. | २८।०७ | दि.४।५६ | रोहिणी | रा.४।३६ | आयुष्य ५।०२४ | वृष | ५।४२ | ६।१८ | ३० | १२ | श्रीसूर्यषष्ठीव्रतस्य **नहाय-खाय,मासान्तः।** अमृतयोगःदि.४।५६यावत् ततः शिववास-पूर्व-दक्षिणयात्रा,अग्निवास। |
| ५ | श. | २५।५५ | दि.४।०४ | मृगशिरा | रा.४।४३ | सौभाग्य ००।३५ | वृष २७।२८ | ५।४२ | ६।१८ | १ | १३ | श्रीसूर्यषष्ठीव्रतस्यैकभुक्तं(**खरना**),मीनावतार,**श्रीरामराज्याभिषेकमहोत्सव, अश्विन्यों मेषे च रविः४४।५८।** |
| ६ | र. | २४।५६ | दि.३।३६ | आर्द्रा | रा.शे५।१५ | अतिगण्ड ५३।४२ | मिथुन | ।४१ | ६।१९ | २ | १४ | **श्रीसूर्यषष्ठीव्रतं,सायंकालिकार्घदानं,**बिल्वाभिमन्त्रणं,गजपूजा। **जुड़िशीतल,मासादि।** |
| ७ | चं. | २५।१३ | दि.३।४५ | पुनर्वसु | अहोरात्र | सुकर्मा ५१।४६ | मिथुन४५।५६ | ५।४० | ६।२० | ३ | १५ | प्रातः**कालिकार्घ्यदानं** पारणञ्च। **नवपत्रिकाप्रवेशः**। निशापूजा,रात्रिजागरणं। **मुण्डनं,कर्णवेधः छ.वै.उपनयनं,** |
| ८ | मं. | २६।५३ | दि.४।१४ | पुनर्वसु | दि.६।१७ | धृति ५०।५३ | कर्क | ५।३९ | ६।२१ | ४ | १६ | **महाष्टमी८ व्रतं,**सन्धिपूजा,दीक्षाग्रहणं,अशोकाष्टमी,अशोककलिकापानं,ब्रह्मपुत्रस्नानं। अग्निवास। |
| ९ | बु. | २९।३६ | दि.५।२८ | पुष्य | दि.७।५० | शूल ५०।५१ | कर्क | ५।३८ | ६।२२ | ५ | १७ | रामावतार,**श्रीरामनवमी९ व्रतं सर्वेषां,महानवमी व्रत,** नवम्यां हवनं,हनुमद्ध्वजदानं,श्रीसीतारामपूजनदर्शनादिकम्। |
| १० | गु. | ३३।३० | रा.७।०२ | आश्लेषा | दित्र९।४६ | गण्ड ५१।३६ | कर्क१०।२९ | ५।३८ | ६।२२ | ६ | १८ | **विजयादशमी१०।** नवरात्रव्रतपारणं,**दीक्षाग्रहणं, उपनयनं दि.९।४७ यावत्। विवाह** दि.९।४८ उपरि। सिद्धियोग। |
| ११ | शु. | ३८।१० | रा.८।५३ | मघा | दि.१२।०९ | वृद्धि ५२।५३ | सिंह | ५।३७ | ६।२३ | ७ | १९ | **कामदा ११ व्रतं सर्वेषाम्।** श्रीविष्णुदोलोत्सव। **विवाहः दि.१२।०९ यावत्, उपनयनं दि.१२।०९ उपरि।** |
| १२ | श. | ४३।२९ | रा.१०।५९ | पूर्वाफा | दि.२।४२ | ध्रुव ५४।२८ | सिंह ३९।२४ | ५।३६ | ६।२४ | ८ | २० | **गृहप्रवेश दि.२।४२ उपरि।** श्रीविष्णु१२,गोघृतेनपारणं। सर्वार्थसिद्धियोग-पूर्वदक्षिण यात्रा दि.५।२०उपरि। |
| १३ | र. | ४८।२७ | रा.१२।५८ | उत्तराफा | दि.५।२० | व्याघात ५६।०० | कन्या | ।३६ | ६।२४ | ९ | २१ | **विवाहः रा.१२।५८ यावत्। प्रदोष१३ व्रतं,**चैत्रावली,मदन१३ श्रीमदनपूजनं शिववास,अग्निवास, |
| १४ | चं. | ५३।१६ | रा.२।५३ | हस्त | रा.७।५२ | हर्षण ५७।१२ | कन्या | ।३५ | ६।२५ | १० | २२ | **प्रदोष१४ व्रत,**पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते। **गृहप्रवेशः दि.३।४३ यावत् ततः द्विरागमनं,**दक्षिण-पश्चिमयात्रा। |
| १५ | मं. | ५७।२२ | रा.४।३० | चित्रा | रा.१०।०७ | वज्र ५७।५० | कन्या ८।३३ | ५।३४ | ६।२६ | ११ | २३ | **चैत्रीपूर्णिमा१५** स्नानदानादिः, **स्वारोचिषमन्वादिः।** हनुमद्ध्वजदानं। अग्निवासः,दक्षिणयात्रा रा.४।३० यावत्। |

**वैशाखकृष्णपक्षः** शक१९४६, संवत् २०८१,सन् १४३१, उत्तरायण, उत्तरगोलः, वसन्त-ऋतु दक्षिणे कालः, **दिनांक २४ अप्रैल तः ८ मई यावत् सन् २०२४ ई।**

| तिथय | | तिथिमान | | नक्षत्रमान | | योग | | चन्द्रराशि | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः | द. प. | राशिः घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| १ | बु. | ६०।०० | अहोरात्र | स्वाती | रा.१२।०१ | सिद्धि | ५७।३६ | तुला | ५।३४ | ६।२६ | १२ | २४ | **वैशाखे तैलं त्यजेत्।** वैशाखे कौशिकी स्नानं महापुण्यप्रद, **द्विरागमनं स्वात्यां।** अमृतयोग, शिववास,। |
| १ | गु. | ००।२२ | प्रा.५।४१ | विशाखा | रा.१।२६ | व्यतीपात | ५६।३७ | तुला ३३।३५ | ५।३३ | ६।२७ | १३ | २५ | **विवाहः-द्विरागमनं** अनुराधायां रा.१।२६ उपरि। ← उत्तरयात्रा दि.६।१७उपरि,भद्रा ३२।३५उपरि। |
| २ | शु. | ०२।१६ | दि.६।१७ | अनुराधा | रा.२।२६ | वरीयान् | ५४।३३ | वृश्चिक | ५।३२ | ६।२८ | १४ | २६ | **गृहारंभ,विवाह** रा२।२६यावत्,**द्विरागमनं दि.६।१७ या.**,सर्वार्थसिद्धियोग,अग्निवास दि.६।१७यावत् ← |
| ३ | श. | ०२।५२ | दि.६।४० | ज्येष्ठा | रा.२।५३ | परिघ | ५१।२७ | वृश्चिक५३।२३ | ५।३२ | ६।२८ | १५ | २७ | श्रीवक्रतुण्ड४ व्रत, **भरण्यां रवि २६।०७** । सिद्धियोगः-शिववासः-अग्निवासः दि.६।४० उपरि। |
| ४ | र. | ०२।०७ | प्रा.६।२१ | मूल | रा.२।५१ | शिव | ४७।२२ | धनु | ५।३१ | ६।२६ | १६ | २८ | **कोकिलाषष्ठी**६,**विवाह-द्विरागमनं** प्रा.६।२१उपरि,सर्वार्थसिद्धियोग, शिववास, पूर्व-उत्तरयात्रा प्रा.६।२१उ.। |
| ५ | चं. | ००।०६ | प्रा.५।३३ | पूर्वाषाढा | रा.२।२२ | सिद्ध | ४२।२५ | धनु | ५।३१ | ६।२६ | १७ | २९ | शर्करासप्तमी, षष्ठीतिथि..........। अमृतयोगः प्रा.५।३३ यावत् ततः सिद्धियोगः, अग्निवासः❖ |
| ७ | मं. | ५२।५६ | रा.०२।४१ | उत्तराषा | रा.१।३२ | साध्य | ३६।४० | धनु ६।३७ | ५।३० | ६।३० | १८ | ३० | अमृतयोगः,भद्रा २५।०० यावत्। ❖उत्तर यात्रा अहोरात्र, भद्रा ५७।०१ उपरि। |
| ८ | बु. | ४८।०६ | रा.१२।४३ | श्रवण | रा.१२।२२ | शुभ | ३०।१४ | मकर | ५।२९ | ६।३१ | १९ | मई | श्रीशीतलाष्टमी८ व्रतम्, विवाह रा.१२।४३ यावत्। अग्निवासः,शिववासः,**पञ्चक(भदवा)आरम्भ रा.१२।२२उपरि।** |
| ९ | गु. | ४२।४० | रा.१०।३३ | धनिष्ठा | रा.१०।५७ | शुक्ल | २३।१५ | मकर १५।२७ | ५।२९ | ६।३१ | २० | २ | उत्तराभद्रापदायां मंगल दि.३।५०। ☒ **पश्चिम-उत्तर यात्रा दि.१२।५५ यावत्, भद्रा १८।४३ उपरि।** |
| १० | शु. | ३६।४९ | रा.०८।११ | शतभिषा | रा.९।२२ | ब्रह्म | १५।५३ | कुम्भ | ५।२८ | ६।३२ | २१ | ३ | अग्निवासःरा.८।११ यावत्,भद्रा ९।४४ उपरि ३६।४९ यावत्। |
| ११ | श. | ३०।४४ | सं.५।४४ | पूर्वाभाद्र | रा.७।४३ | ऐन्द्र | ८।१९ | कुम्भ२१।४१ | ५।२७ | ६।३३ | २२ | ४ | **वरूथिनीएकादशी११ व्रतं सर्वेषां**,वल्लभाचार्यजयन्ती, **गुरु वार्धक्यारंभ ४।१२** । शिववासः,दक्षिणपश्चिमयात्रा |
| १२ | र. | २४।३६ | दि.३।१८ | उत्तराभाद्र | दि.२।०३ | वैधृति | ००।३५ | मीन | ५।२७ | ६।३३ | २३ | ५ | कुशोदकेन पारणं, **प्रदोष १३ व्रतं,** उपरि। शिववासः दि.३।१८ यावत्, उत्तर यात्रा दि.२।०३ उपरि। |
| १३ | चं. | १८।४३ | दि.१२।५५ | रेवती | दि.४।१८ | प्रीतिः | ४५।३६ | मीन २७।३५ | ५।२६ | ६।३४ | २४ | ६ | **प्रदोष १४ व्रत, पश्चिमास्त गुरु** ४।१२ दि.७।१७। अग्निवासः, **पञ्चक (भदवा)समाप्तिः दि.४।१८ उपरि।** ☒ |
| १४ | मं. | १३।११ | दि.१०।४१ | अश्विनी | दि.३।०२ | आयु | ३८।३६ | मेष | ५।२५ | ६।३५ | २५ | ७ | सर्वार्थसिद्धियोगः दि.३।[illegible] यावत्, शिववासः दि.१०।४१ उपरि। |
| ३० | बु. | ०८।११ | दि.८।४० | भरणी | दि.१।५० | सौभा | ३२।०८ | मेष १७।३० | ५।२४ | ६।३४ | २६ | ८ | **वैशाखीअमावस्या३०,स्नानदानश्राद्धादौ।** गंगास्नाननादि। शिववासः-अग्निवासः दि.८।४०यावंत् ततः अमृतयोग। |

| तिथयः | | तिथिमानानि | | नक्षत्रमान | | योगः | | चन्द्रराशि | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | वैशाखशुक्लपक्षः शक१९४६, संवत् २०८१,सन् १४३१, उत्तरायण, उत्तरगोलः, वसन्त-ऋतु दक्षिण/पश्चिम कालः, **दिनांक ९ मई तः २३ मई यावत् संन् २०२४ ई।** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः | द. प. | राशिः घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| १ | गु. | ३।३६ | दि.६।५२ | कृत्तिका | दि.१।०३ | शोभन | २६।२८ | वृष | ५।२५ | ६।३५ | २७ | ९ | चन्द्रदर्शनं,शिवाजीजयन्ती, मुण्डनं-कर्णवेधः-द्विरगमनं रोहिण्यां दि.१।०३ उपरि,शिववासः दि.६।५२ उपरि। |
| २ | शु. | ००।४१ | रा.०५।४० | रोहिणी | दि.१२।३२ | अतिग | २१।२५ | वृष ४७।४८ | ५।२४ | ६।३६ | २८ | १० | तृतीयातिथि५७।४४,अक्षयतृतीया,गंगास्नानादिः,परशुरामावतारः,श्रीपरशुरामजयन्ती, **मुण्डनं-कर्णविधः** ☒ |
| ४ | श. | ५७।२२ | रा.०४।२० | मृगशिरा | दि.१२।३१ | सुकर्मा | १७।२० | मिथुन | ५।२४ | ६।३६ | २९ | ११ | **श्रीगणेश ४ व्रतं, कृतिकासु रवि** १३।५२,अग्निवासः। ◆रामानुजाचार्यजयन्ती,अग्निवासः,अमृतयोगः,शिववास |
| ५ | र. | ५७।३५ | रा.०४।२५ | आर्द्रा | दि.१२।५५ | धृतिः | १४।१४ | मिथुन | ५।२३ | ६।३७ | ३० | १२ | **षाण्मासिकरविव्रत विसर्गः-सप्तडोरकविसर्गः। द्विरागमनं** दि.१२।५५ उपरि, जगद्गुरुशंकराचार्यजयन्ती,◆ |
| ६ | चं. | ५६।०७ | रा.शे५।०० | पुनर्वसु | दि.१।५२ | शूलः | १२।१० | मिथनु ५।३८ | ५।२२ | ६।३८ | ३१ | १३ | **मासान्त**,शिववासः। 🡐**पुण्यकालो दिवा १२।०० उपरि पुण्याहः**,वैशाखस्नानसमाप्ति,हरिद्वारेकल्पवाससमाप्ति। |
| ७ | मं. | ६०।०० | अहोरात्र | पुष्य | दि.०३।१९ | गण्ड | ११।०६ | कर्क | ५।२२ | ६।३८ | १ | १४ | जह्नु७, जह्नुमुनेः, कर्णरन्ध्राद् गंगायाः प्राकट्यं, **गंगास्नानदानादिः, वृषे रवि ४१।४० विष्णुपदीसंक्रान्तिः** 🡐 |
| ७ | बु. | ०१।४५ | दि.०६।०३ | आश्लेषा | सं.०५।१३ | वृद्धि | १०।५६ | कर्क २६।४० | ५।२१ | ६।३९ | २ | १५ | मासादिः। ☒मृगशिरायां दि.१२।३२ उपरि । **द्विरागमनं तृतीयायां**,शिववास। |
| ८ | गु. | ०५।३२ | दि.०७।३३ | मघा | रा.०७।५९ | ध्रुव | ११।५० | सिंह | ५।२१ | ६।३९ | ३ | १६ | **दीक्षाग्रहणं। जानकीनवमीव्रतं,(मध्याह्न व्यापिनी ग्राह्य)श्रीसीतारामपूजनदर्शनादिकं,मैथिलीदिवस, हनुमद्ध्वजदानं** |
| ९ | शु. | १०।०५ | दि.०९।२२ | पूर्वाफा | रा.०९।५९ | व्याघात | १२।५३ | सिंह ५८।१८ | ५।२० | ६।४० | ४ | १७ | जानकीनवमीव्रतस्यपारण दि.९।२२उपरि,**गृहप्रवेशः** उत्तराफाल्गुन्यां,शिववासः-अग्निवासः-अमृतयोगःदि.९।२२यावत्। |
| १० | श. | १५।०८ | दि.११।२२ | उत्तराफा | रा.१२।३७ | हर्षण | १४।२८ | कन्या | ५।१९ | ६।४१ | ५ | १८ | मृत्युयोगः दि.११।२२ यावत् ततः अमृतयोगः, दक्षिण यात्रा रा.१२।३७ उपरि। |
| ११ | र. | २०।१६ | दि.१।२५ | हस्त | रा.०३।११ | वज्र | १६।१० | कन्या | ५।१९ | ६।४१ | ६ | १९ | **मोहिनीएकादशी११ व्रतं सर्वेषां**, सर्वार्थसिद्धियोगः,शिववासः दि.१।२५ उपरि, पूर्व-दक्षिण यात्रा दि.१।२५उपरि। |
| १२ | चं. | २४।५६ | दि.३।१७ | चित्रा | अहोरात्र | सिद्ध | १७।३१ | कन्या २७।२९ | ५।१८ | ६।४२ | ७ | २० | मधुसूदन१२, कुशोदकेनपारणं, **प्रदोष१३ व्रतं,मुण्डनं-कर्णवेधः** त्रयोदश्यां दि.३।१७ उपरि। शिववासः, अग्निवास। |
| १३ | मं. | २६।०१ | दि.४।५४ | चित्रा | प्रा.०५।३१ | व्यतीपात | १८।२२ | तुला | ५।१८ | ६।४२ | ८ | २१ | **प्रदोष१४ व्रतं**,सिद्धियोगः दि.४।५४ यावत् शिववासः दि.४।५४ यावत्, दक्षिण-पश्चिमयात्रा दि.४।५४ यावत्। |
| १४ | बु. | ३१।५७ | सं.६।०३ | स्वाती | दि.०७।३० | वरीयान् | १८।२९ | तुला५३।२९ | ५।१७ | ६।४३ | ९ | २२ | **नरसिंहावतारः**, नरसिंह १४ व्रत, प्रदोषात् यावद्रात्रौ, श्रीनरसिंहपूजनदर्शनादिकं,अग्निवासः। |
| १५ | गु. | ३३।५० | रा.६।४९ | विशाखा | दि.०९।०४ | परिघः | १७।४१ | तुला | ५।१७ | ६।४३ | १० | २३ | **वैशाखीपूर्णिमा१५**, स्नानदानादि, कच्छपावतारः,बुद्धावतारः,श्रीबुद्धजयन्ती। सिद्धियोगः सं.६।४९ यावत्। |

**ॐजानकीनवमीव्रतम्**, वृहदद्विष्णुपुराणे - वैशाखस्य सिते पक्षे नवमी तु मघायुता। सैव मध्याह्नयोगेन शस्यते व्रतकर्मणि।।

| तिथय | | तिथिमान | | नक्षत्रमान | | योग | | चन्द्रराशि | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | **ज्येष्ठाकृष्णपक्षः** शक१९४६, संवत् २०८१,सन् १४३१, उत्तरायण, उत्तरगोलः, ग्रीष्म-ऋतु पश्चिमे कालः, **दिनांक २४ मई तः ६ जून यावत् सनु २०२४ ई।** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः | द. प. | राशिः घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| १ | शु. | ३४।२० | सं.७।०० | अनुराधा | दि.१०।०८ | शिवः | १५।५२ | वृश्चिक अहोरात्र | ५।१६ | ६।४४ | ११ | २४ | ज्येष्ठेवृन्ताकं त्यजेत्,सिद्धियोगः सं.७।०० यावत् ततःमृत्युयोगः,सर्वार्थसिद्धियोगः,शिववासः,अग्निवास,उत्तरयात्रा। |
| २ | श. | ३३।३२ | सं.६।४० | ज्येष्ठा | दि.११।५४ | सिद्धिः | १३।०४ | वृश्चिकदि.११।५४ | ५।१६ | ६।४४ | १२ | २५ | **रोहिण्यां रवि** ७।४४ दि.८।२१। उत्तरयात्रा अहोरात्र, पश्चिमयात्रा दि.११।५४ यावत् ततः पूर्वयात्रा। |
| ३ | र. | ३१।३२ | दि.४।५२ | मूल | दि.१०।४७ | साध्य | ०६।१५ | धनु अहोरात्र | ५।१६ | ६।४४ | १३ | २६ | **श्रीआखुरथ ४ व्रतं,** सर्वार्थसिद्धियोगः दि.१०।४७ यावत्, पूर्व-उत्तरयात्रा-अग्निवासः दि.४।५२ यावत् |
| ४ | चं. | २८।२८ | दि.४।३८ | पूर्वाषाढा | दि.१०।२२ | शुभः | ०४।३२ | धनु दि.४।११ | ५।१५ | ६।४५ | १४ | २७ | **मुण्डनं-कर्णवेधः** पञ्चम्या दि.४।३८उपरि,अमृतयोग-शिववासः,अग्निवासः दि.४।३८ उपरि,दग्धतिथि दि.४।३८या. |
| ५ | मं. | २४।२४ | दि.३।०० | उत्तराषा | दि.६।३८ | ब्रह्म | ५२।४६ | मकर अहोरात्र | ५।१५ | ६।४५ | १५ | २८ | मृत्युयोगः दि.३।०० उपरि, शिववासः-अग्निवासः दि.३।०० यावत्, उत्तरां विनायात्रा दि.६।३८ उपरि। |
| ६ | बु. | १९।३० | दि.१।०३ | श्रवण | दि.८।३२ | ऐन्द्र | ४५।५६ | मकर सं.७।५२ | ५।१५ | ६।४५ | १६ | २९ | अमृतयोगः दि.१।०३ यावत्,**भदवारंभ (पञ्चक) दि.८।३२ उपरि,** उत्तरांविनायात्रा दि.८।३२ यावत्। |
| ७ | गु. | १३।५९ | दि.१०।४९ | धनिष्ठा | दि.७।१० | वैधृतिः | ३८।४२ | कुम्भ अहोरात्र | ५।१४ | ६।४६ | १७ | ३० | अमृतयोगः-शिववासः दि.१०।४९ उपरि, अग्निवासः दि.१०।४९ यावत्, दग्धतिथि दि.४।५२ उपरि। |
| ८ | शु. | ०८।०४ | दि.८।२७ | शतभिषा | प्रा.५।३८ | विष्क | ३१।०६ | कुम्भ रा.१०।४२ | ५।१४ | ६।४६ | १८ | ३१ | **पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रमान५५।५६ रा.३।२६।** अमृतयोगः दि.८।२७ उपरि, शिववासः दि.८।२७ यावत्। |
| ९ | श. | ०१।५५ | प्रा.६।०० | उत्तराभा | रा.२।१६ | प्रीतिः | २३।३० | मीन अहोरात्र | ५।१४ | ६।४६ | १९ | जून | **दशमीतिथिमानं५३।५० रा.२।४६।** सिद्धियोगः प्रा.६।००यावत् ततः मृत्युयोगः,भद्रा२७।५२उपरि ५५।४५यावत्। |
| ११ | र. | ४६।४४ | रा.१।०८ | रेवती | रा.१।३८ | आयुष्य | १६।१३ | मीन रा.१।३८ | ५।१४ | ६।४६ | २० | २ | **अपराएकादशी ११ व्रतं स्मार्त्तानां,** मृत्युयोगः,शिववासः,अग्निवासः,**पञ्चक(भदवा) समाप्ति** रा.१।३८ यावत्। |
| १२ | चं. | ४४।०६ | रा.१०।५१ | अश्विनी | रा.११।१४ | सौभा | १०।२७ | मेष अहोरात्र | ५।१३ | ६।४७ | २१ | ३ | तिलेनपारणं,वैष्णवानां एकादशीव्रतं,मृत्युयोगःरा.१०।५१ यावत् ततः पूर्वांविनायात्रा रा.११।१४ यावत्। शिववास। |
| १३ | मं. | ३८।५९ | रा.८।४८ | भरणी | रा.१०।०० | शोभन | ३।१४ | मेष रा.३।४७ | ५।१३ | ६।४७ | २२ | ४ | **प्रदोष१३ व्रतं,** सिद्धियोगः रा. ८।४८ यावत् ततः राज्यप्रदयोगः, अग्निवासः, भद्रा ३८।५९ उपरि। |
| १४ | बु. | ३४।४२ | सं.७।०६ | कृत्तिका | रा.६।०७ | सुकर्मा | ५०।१८ | वृष रा.१।३८ | ५।१३ | ६।४७ | २३ | ५ | **प्रदोष१४ व्रतं,** भद्रा ६।५० यावत्। ❖रा.८।३१ यावत् ततः दक्षिणां विनायात्रा। |
| ३० | गु. | ३१।१५ | दि.५।४३ | रोहिणी | रा.८।३१ | धृतिः | ४४।४६ | वृष रा.१।३८ | ५।१३ | ६।४७ | २४ | ६ | ज्यैष्ठी३०, स्नानदानश्राद्धादि, **वटसावित्री(वरसाईत)व्रतम्,** शिववासः,अग्निवासः,पूर्वयात्रा दि.५।४३ उपरि❖ |

| तिथयः | | तिथिमानानि | | नक्षत्रमान | | योगः | | चन्द्रराशि | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | **ज्येष्ठाशुक्लपक्षः** शक१६४६, संवत् २०८१,सन् १४३१, उत्तरायण, उत्तरगोलः, ग्रीष्म-ऋतु पश्चिमे कालः, **दिनांक ७ जून तः २२ यावत् सन् २०२४ ई।** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः | द. प. | राशिः घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| १ | शु. | २८।५५ | दि.४।४६ | **मृगशिरा** | रा.८।२१ | शूलः | ४०।०७ | **वृष दि.८।२६** | ५।१२ | ६।४८ | २५ | ७ | चन्द्रदर्शनमं,**मुण्डनं-कर्णविध** दि.४।४६ उपरि। सिद्धियोगः-पश्चिमां विनायात्रा दि.४।४६यावत्,अग्निवासः। |
| २ | श. | २७।४१ | दि.४।१६ | **आर्द्रा** | रा.८।४२ | गण्ड | ३६।२२ | **मिथु अहोरात्र** | ५।१२ | ६।४८ | २६ | ८ | **मृगशिरायां रवि ६।३२ दि.७।४६।** शिववास दि.४।१६ यावत् ततः अग्निवास, दक्षिणयात्रा रा.८।४२ उपरि। |
| ३ | र. | २७।४८ | दि.४।२६ | **पुनर्वसु** | रा.६।३२ | वृद्धि | ३३।३७ | **मिथु दि.३।२०** | ५।१२ | ६।४८ | २७ | ९ | **रम्भातृतीया,**पञ्चाग्निव्रतं,**गणेश४ व्रतं,** सिद्धियोग,दक्षिणयात्रा दि.३।२० यावत् ततः उत्तरयात्रा दि.४।२६ या.। |
| ४ | चं. | २६।१५ | दि.४।५४ | **पुष्य** | रा.१०।५४ | ध्रुव | ३१।५३ | **कर्क अहोरात्र** | ५।१२ | ६।४८ | २८ | १० | **मुण्डनं-कर्णविधः** पञ्चम्यां दि.४।५४ उपरि। सर्वार्थसिद्धियोगः,अग्निवासः, पूर्वां विनायात्रा दि.४।५४ उपरि ← |
| ५ | मं. | ३१।४५ | सं.५।५४ | **आश्लेषा** | रा.१२।४२ | व्याघात | ३१।१० | **कर्क रा१२।४२** | ५।१२ | ६।४८ | २९ | ११ | मृत्युयोग सं.५।५४ उपरि, शिववासः। ← भद्रा २९।१५ यावत्, दग्धतिथि दि.४।५४ यावत्। |
| ६ | बु. | ३५।२७ | रा.७।२६ | **मघा** | रा.२।५३ | हर्षण | ३१।१९ | **सिंह अहोरात्र** | ५।११ | ६।४९ | ३० | १२ | अमृतयोग रा.७।२६ यावत् ततः सिद्धियोगः, शिववासः रा.७।२६ यावत्, अग्निवासः। |
| ७ | गु. | ३६।५५ | रा.६।०६ | **पूर्वाफा** | अहोरात्र | वज्र | ३२।१३ | **सिंह अहोरात्र** | ५।११ | ६।४९ | ३१ | १३ | पूर्व-उत्तर यात्रा अहोरात्र, भद्रा ३६।५५ उपरि। **पूर्वोदय गुरु २६।४७ दि.४।२४** |
| ८ | शु. | ४४।५० | रा.११।०६ | **पूर्वाफा** | प्रा.५।२० | सिद्ध | ३३।३९ | **सिंह दि.११।५६** | ५।१० | ६।५० | ३२ | १४ | मासान्तः। अग्निवासः, भद्रा १२।२२ यावत्। |
| ९ | श. | ४९।५७ | रा.०१।०८ | **उत्तराफा** | दि.७।५७ | व्यती | ३५।२० | **कन्य अहोरात्र** | ५।१० | ६।५० | १ | १५ | **मिथुने रवि** ७।२५,**षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो दि.८।०७ उपरि दि.२।३१ यावत् पुण्याहः,**ने.आषाढ़मासारम्भः। |
| १० | र. | ५४।३८ | रा.३।०१ | **हस्त** | दि.१०।३३ | वरीया | ३६।५६ | **कन्य रा.११।४५** | ५।१० | ६।५० | २ | १६ | **मासादिः,गंगादशहरा,** गंगास्नानदानादिः,श्रीरामेश्वरप्रतिष्ठादिनं तद्ददर्शञ्च, अमृतयोगः,अग्निवासः, पूर्वयात्रा। |
| ११ | चं. | ५८।४६ | रा.४।४० | **चित्रा** | दि.१२।५७ | परिघः | ३८।१० | **तुला अहोरात्र** | ५।१० | ६।५० | ३ | १७ | **निर्जलाएकादशी११ व्रतं स्मार्त्तानां,मुण्डनं,कर्णविधः।** सिद्धियोमः,दक्षिण-पश्चिम यात्रा रा.४।४० यावत्। |
| १२ | मं. | ६०।०० | अहोरात्र | **स्वाती** | दि.२।४६ | शिवः | ३८।५० | **तुला अहोरात्र** | ५।१० | ६।५० | ४ | १८ | तिलेनपारणं,**वैष्णवानां एकादशी व्रतम्।** अमृतयोग,शिववास, अग्निवासः,दक्षिण-पश्चिम यात्रा दि.२।४६ यावत्। |
| १२ | बु. | ०१।३५ | प्रा.५।४८ | **विशाखा** | दि.४।४० | सिद्धिः | ३८।४७ | **तुला दि.१०।१५** | ५।१० | ६।५० | ५ | १९ | **प्रदोष१३ व्रतं,** कर्णविधः। सिद्धियोगः प्रा.५।४८यावत् ततः मृत्युयोगः,सर्वार्थसिद्धियोगः दि.४।४० उपरि,शिववास। |
| १३ | गु. | ०३।२८ | दि.६।३३ | **अनुराधा** | सं.५।५० | साध्य | ३७।३३ | **वृश्चि अहोरात्र** | ५।१० | ६।५० | ६ | २० | प्रदोष१४ व्रतं, अमृतयोगः-पश्चिम-उत्तर यात्रा दि.६।३३ यावत् ततः मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोग,अग्निवास। |
| १४ | शु. | ०३।५७ | दि.६।१६ | **ज्येष्ठा** | सं.६।३१ | शुभः | ३५।२६ | **वृश्चि सं.६।३१** | ५।१० | ६।५० | ७ | २१ | **व्रतायपूर्णिमा,** अमृतयोगः दि.६।१६ यावत् ततः उत्तरयात्रा सं.६।३१ यावत् ततः पूर्वयात्रा, भद्रा ३।५७उपरि। |
| १५ | श. | ०३।१० | दि. ६।२६ | **मूल** | सं.६।४१ | शुक्ल | ३२।२० | **धनु अहोरात्र** | ५।१० | ६।५० | ८ | २२ | ज्यैष्ठीपूर्णिमा१५ स्नानदानादि,**साम्प्रतिकवैवस्वतमन्वादि,**श्रीकबीरजयन्ती,**आर्द्रायां रवि दि.८।४३।** अग्निवास,। |

| तिथयः | तिथिमान | | नक्षत्रमान | | योग | | चन्द्रराशि | | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | **आषाढ़कृष्णपक्षः** शक१९४६, संवत् २०८१,सन् १४३१, उत्तरायण, उत्तरगोलः, ग्रीष्म-ऋतु पश्चिमे कालः, **दिनांक २३ जून तः ५ जुलाई यावत् सन् २०२४ ई।** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः | द. प. | राशिः | घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| १ र. | १।११ | प्रा.५।३८ | पूर्वाषाढा | सं.६।२४ | ब्रह्म | २८।१२ | धनु | रा४७।३८ | ५।१० | ६।५० | ९ | २३ | बिल्वमाषाढके त्यजेत्,त्रयोदशदिनात्मकपक्षात् मुहूर्त्ताभाव,शिववास प्रा.५।३८यावत् ततः अग्निवास-पूर्व-उत्तरयात्रा। |
| ३ चं. | ५४।०५ | रा.२।४८ | उत्तराषा | सं.५।४२ | ऐन्द्र | २३।१४ | मकर | अहोरात्र | ५।१० | ६।५० | १० | २४ | सर्वार्थसिद्धियोगः-पूर्वां विनायात्रा सं.५।४२ उपरि रा.२।४८ यावत्, भद्रा २६।०५ उपरि ५४।०५ यावत्। |
| ४ मं. | ४६।१४ | रा.१२।५१ | श्रवण | दि.४।४० | वैधृतिः | १७।२६ | मकर | रा.४।०१ | ५।१० | ६।५० | ११ | २५ | **विघ्नराज ४ व्रतं,** राज्यप्रदयोगः, शिववासः, अग्निवासः **पञ्चकारम्भः(भदवा)** दि.४।४० उपरि। |
| ५ बु. | ४३।४२ | रा.१०।३८ | धनिष्ठा | दि.३।२१ | विष्कुम्भः | ११।०५ | कुम्भ | अहोरात्र | ५।१० | ६।५० | १२ | २६ | शिववासः, पश्चिमयात्रा दि.३।२१ यावत्। |
| ६ गु. | ३७।४५ | रा.८।१६ | शतभिषा | दि.१।५० | प्रीतिः | ४।०८ | कुम्भ | अहोरात्र | ५।१० | ६।५० | १३ | २७ | अग्निवासः, भद्रा ३७।४५ उपरि। ←पश्चिमां विनायात्रा दि.१२।२३ उपरि,भद्रा ४५।१६ उपरि। |
| ७ शु. | ३१।३५ | सं.५।४८ | पूर्वाभा | दि.१२।१२ | सौभाग्य | ४७।०६ | कुम्भ | दि.६।३७ | ५।१० | ६।५० | १४ | २८ | मृत्युयोगः सं.५।४८ यावत्, शिववासः सं.५।४८ उपरि, भद्रा ४।४० यावत्, दग्धतिथि सं.५।४८ उपरि। |
| ८ श. | २३।४४ | दि.२।३६ | उत्तराभा | दि.१०।३० | शोभन | ३६।२६ | मीन | अहोरात्र | ५।१० | ६।५० | १५ | २९ | सिद्धियोगः-राज्यप्रदयोगः दि.२।३६उपरि, शिववासः-अग्निवासः दि.२।३६ यावत्,दग्धतिथि दि.६।३६ यावत्। |
| ९ र. | १८।०० | दि.१२।२३ | रेवती | दि.८।५४ | अतिगण्ड | ३२।०३ | मीन | दि.८।५५ | ५।११ | ६।४६ | १६ | ३० | अमृतयोग-अग्निवासःदि.१२।२३उपरि,सर्वार्थसिद्धियोगःदि.८।५४उपरि;**पञ्चक(भदवा)समाप्ति दि.८।५४यावत्**← |
| १० चं. | १२।३८ | दि.१०।१४ | अश्विनी | दि.७।२५ | सुकर्मा | २४।५५ | मेष | अहोरात्र | ५।११ | ६।४६ | १७ | जुला | अमृतयोगःदि.१०।१४यावत् ततः सिद्धियोग-शिववास,अग्निवासः दि.१०।१४यावत्,पूर्वांविनायात्रा दि.७।२५यावत्। |
| ११ मं. | ०७।४५ | दि.८।१७ | भरणी | प्रा.६।०८ | धृतिः | १८।१६ | मेष | दि.१२।०४ | ५।११ | ६।४६ | १८ | २ | **योगिनीएकादशी ११ व्रतं सर्वेषां।** मृत्युयोग दि.८।१७यावत् ततः अमृतयोग,शिववास, अग्निवास दि.८।१७उपरि। |
| १२ बु. | ०३।४० | प्रा.६।४० | रोहिणी | रा.४।२८ | शूलः | १२।१८ | वृष | अहोरात्र | ५।१२ | ६।४८ | १९ | ३ | यवचूर्णेन पारणं,**प्रदोष१३ व्रतं,**सर्वार्थसिद्धियोग, शिववास-अग्निवास-पूर्व-दक्षिण यात्रा प्रा.६।४० यावत्।✠ |
| १३ गु. | ००।१८ | प्रा.५।१६ | मृगशिरा | रा.४।१३ | गण्ड | ०७।०३ | वृष | दि.४।२१ | ५।१२ | ६।४८ | २० | ४ | **प्रदोष१४ व्रतं, चतुर्दशीतिथिमान**५७।३७ रा.४।१५। अमृतयोगः प्रा.५।१६ यावत् ततः मृत्युयोग। |
| ३० शु. | ५६।४० | रा.३।५२ | आर्द्रा | रा.४।२७ | वृद्धि | ०२।३८ | मिथु | अहोरात्र | ५।१२ | ६।४८ | २१ | ५ | **आषाढ़ी अमावस्या** स्नानदान-श्राद्धादौ अमावस्या, शिववासः। ✠सिद्धियोगः प्रा.६।४०यावत् ततः मृत्युयोगः, |

## आषाढ़शुक्लपक्षः

शक१६४६, संवत् २०८१,सन् १४३१, उत्तरायण, उत्तरगोलः, ग्रीष्म-ऋतु
पश्चिमे कालः, दिनांक ६ जुलाई तः २१ जुलाई यावत् सन् २०२४ ई।

| तिथयः | | तिथिमानानि | | नक्षत्रमान | | योगः | | चन्द्रराशि | सूर्योदय | सूर्यास्त | दिनांक | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनानि | | द. प. | घं. मि. | नक्षत्राणि | घं. मि. | योगाः | द. प. | राशिः घ. मि. | घं.मि. | घं.मि. | गते | ता | |
| १ | श. | ५६।३५ | रा.३।५० | पुनर्वसु | रा.शे५।१० | व्याघात् | ५६।४४ | मिथु रा.१०।५६ | ५।१२ | ६।४८ | २२ | ६ | ग्रीष्मनवरात्रारम्भ, कलशस्थापनं,पुनर्वसु रवि १२।५६। अमृतयोग,दक्षिण-पश्चिमयात्रा अहोरात्र। |
| २ | र. | ५७।४३ | रा.शे४।१७ | पुष्य | अहोरात्र | हर्षण | ५५।३१ | कर्क अहोरात्र | ५।१२ | ६।४८ | २३ | ७ | जगन्नाथरथयात्रा,समुद्रस्नानं श्रीजगन्नाथदर्शनं,देवादिप्रतिष्ठा, चन्द्रदर्शनं। करमूले पुलिकमूलबन्धनं ← |
| ३ | चं. | ५९।५४ | रा.शे५।१० | पुष्य | प्रा.६।२५ | वज्र | ५४।४४ | कर्क अहोरात्र | ५।१३ | ६।४७ | २४ | ८ | मुण्डनं पुष्ये प्रा.६।२५ यावत्,कर्णवेधः, उपनयनं,सर्वार्थसिद्धियोगः-पूर्वां विनायात्रा प्रा.६।२५ यावत्। |
| ४ | मं. | ६०।०० | अहोरात्र | आश्लेषा | दि.८।०७ | सिद्ध | ५५।११ | कर्क दि.८।०७ | ५।१४ | ६।४६ | २५ | ९ | श्रीगणेश४ व्रतं,अग्निवास,भद्रा३१।०० उपरि। ← सौराठ-ससौला सभारम्भ। सर्वार्थसिद्धियोगः। |
| ४ | बु. | ०३।०७ | प्रा.६।२८ | मघा | दि.१०।१४ | व्यती | ५३।१२ | सिंह अहोरात्र | ५।१४ | ६।४६ | २६ | १० | विवाह पंचम्यां मघायां च प्रा.६।२८ तः दि.१०।१४ यावत्, उपनयनं पूर्वाफाल्गुन्यां,शिववासः प्रा.६।२८उपरि। |
| ५ | गु. | ०३।५६ | प्रा.६।४८ | पूर्वाफा | दि.१२।३८ | वरीया | ५७।४५ | सिंह रा.७।१८ | ५।१४ | ६।४६ | २७ | ११ | विवाह-देवादिप्रतिष्ठा दि१२।३८ उपरि, कर्णवेध, शिववास, अग्निवास, पूर्व-उत्तरयात्रा दि.१२।३८या। |
| ६ | शु. | ०८।१६ | दि.८।३३ | उत्तराफा | दि.३।१४ | परिघः | ५६।२४ | कन्या अहोरात्र | ५।१४ | ६।४६ | २८ | १२ | गृहप्रवेशः दि.८।३३ यावत्,विवाह दिवारात्रौ,मुण्डनं-कर्णवेधः सप्तम्यां,सौराठ-ससौला सभासमाप्तिः। |
| ७ | श. | १३।१४ | दि.१०।३१ | हस्त | सं.५।५१ | शिवः | ६०।०० | कन्या अहोरात्र | ५।१४ | ६।४६ | २९ | १३ | नवपत्रिकाप्रवेशः, निशापूजा,गृहप्रवेशः दि.१०।३१ यावत्, दक्षिणयात्रा। देवादिप्रतिष्ठा,शिववासःदि.८।३३यावत्। |
| ८ | र. | १८।१६ | दि.१२।३३ | चित्रा | रा.८।१९ | शिवः | ००।५५ | कन्या दि.७।०५ | ५।१५ | ६।४५ | ३० | १४ | महाष्टमी व्रत,करमूले पुलिकमूलबन्धनं,सिद्धियोगःदि.१२।३३यावत् ततः शिववास,पूर्वयात्रा दि.७।५या.,दक्षिणयात्रा |
| ९ | चं. | २२।५९ | दि.२।२६ | स्वाती | रा.१०।२८ | सिद्धिः | ०२।०१ | तुला अहोरात्र | ५।१५ | ६।४५ | ३१ | १५ | महानवमी व्रतं,त्रिशूलनीपूज,हवनादि,मासान्त,शिववास-अग्निवास दि१२।२६यावत्,दक्षिणपश्चिमयात्रा दि२।२६उ। |
| १० | मं. | २७।०२ | दि.४।०३ | विशाखा | रा.००।१३ | साध्य | ०२।२४ | तुला सं.५।४६ | ५।१५ | ६।४५ | १ | १६ | विजयादशमी,नवरात्रव्रतस्यपारणं,कर्के रवि रा.११।३५,याम्यायनसंक्रान्तिपुण्यकालो दि.१२।००उपरि पुण्याहः |
| ११ | बु. | ३०।०२ | सं.५।१५ | अनुराधा | रा.१।३१ | शुभः | ०१।५५ | वृश्चि अहोरात्र | ५।१५ | ६।४५ | २ | १७ | हरिशयनी११ व्रतं सर्वेषां,चातुर्मास्यव्रतारम्भः,मासादिः। अमृतयोगः,सर्वार्थसिद्धियोगः,अग्निवासः,पश्चिमयात्रा। |
| १२ | गु. | ३१।५९ | सं.६।०३ | ज्येष्ठा | रा.२।१९ | शुक्ल | ००।३३ | वृश्चि रा.२।१९ | ५।१६ | ६।४४ | ३ | १८ | वासुदेव१२, यवचूर्णेनपारणं,प्रदोष१३ व्रतं, गृहप्रवेश मूले रा.२।१९ उपरि,शिववासः, उत्तरयात्रा अहोरात्र। |
| १३ | शु. | ३२।३५ | सं.६।१८ | मूल | रा.२।३६ | ऐन्द्र | ५३।३९ | धनु अहोरात्र | ५।१६ | ६।४४ | ४ | १९ | प्रदोष १४ व्रतं, गृहप्रवेश त्रयोदशयां सं.६।१८ यावत्,गृहारंभ,शिववास,अग्निवास, पूर्व-उत्तरयात्रा। |
| १४ | श. | ३१।५२ | सं.६।०० | पूर्वाषाढा | रा.२।२४ | वैधृतिः | ४९।२९ | धनु अहोरात्र | ५।१६ | ६।४४ | ५ | २० | पुष्ये रवि१६।२५। सिद्धियोगः,भद्रा ३१।५२ उपरि। याम्यायनारम्भः। मृत्युयोगः दि.४।०३ उपरि। |
| १५ | र. | २९।५९ | सं.५।१६ | उत्तराषा | रा.१।४७ | विष्कुम्भः | ४५।०५ | धनु दि.८।१६ | ५।१७ | ६।४५ | ६ | २१ | आषाढीपूर्णिमा१५ स्नानदानादिः, गुरुपूर्णिमा, गुरुव्यासयोः पूजनं, चाक्षुषमन्वादिः,सन्१४३२सालसंज्ञकवर्षारंभ। |

## दुर्वाक्षतमन्त्र–

ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढा नड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णूरथेष्ठाः सभेयोयुवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्। मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रुणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।।

## यज्ञोपवीतधारण मन्त्र–

**वाजसनेयि**–ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।

**छन्दोग–**

ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वोपवीतेनोपनह्यामि।

**जीर्णयज्ञोपवीतत्याग मन्त्रः–**

ॐ एतावद्दिनब्रह्मत्वं धारितं मया,
जीर्णत्वत्त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम्।

## शत्रुनाशक बगलामुखी मन्त्र–

**ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।**

**महालक्ष्मी मंत्र**

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद। श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

**पद्मावती मंत्र**

ॐ नमः भगवती पद्मावती सर्वजन मोहिनी सर्वकारज करणी मम् निकटं संकट हरिणी मम् मनोरथ पूर्णी चिंता पूर्णी ॐ पद्मावती नमः स्वाहा।

## कुबेर साधना मंत्र

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्यादिपतये धनधान्य समृद्धि में देहि दापय स्वाहा।

**नवार्ण मन्त्र**–ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

- **प्रदक्षिणा विधिः–**

**आसन्नप्रसवा नारी जलपूर्णघटं यथा।**
**उद्वहन्ती शनैर्याति तथा कुर्यात् प्रदक्षिणम्।।**

**अर्थ :– आसन्नप्रसवा नारी जल सँ भरल घैल लए कए जेना शनैःशनै चलै छथि, तहिना प्रदक्षिण काल मे डेगक गति होयबाक चाही।**

- **कोन देवताक कतेक प्रदक्षिण करी ?–**

**एकं चण्ड्यां रवौ सप्त त्रिर्दद्याच्च विनायके।**
**चत्वारि केशवे दद्यात् शिवस्यार्द्धप्रदक्षिणम्।।**

**अर्थ**– भगवती के मात्र एक बेर, सूर्य के सात बेर, गणेश के तीनि बेर, विष्णु के चारि बेर आ शिव के आधा बेर प्रदक्षिण करक चाही। **टिप्णी :–** आन देवता सभक प्रदक्षिणक संख्याक विषय मे कोनो वचन उपलब्ध नहि होयत अछि, तैं आन सभक एक बेर अथवा तीन बेर प्रदक्षिण करी। विशेष कामना सँ २१, १०८ या १००८ प्रदक्षिण सेहो कएल जाइत अछि।

## ग्रहों का यजुर्वेदीय शान्ति मन्त्र

**सूर्य**-ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन्।

**चन्द्र**-ॐ इमं देवा असपत्नग्वं सुबध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमि राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाग्वं राजा।

**मंगल**-ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयमपाग्वं रेताग्वंसि जिन्वति।

**बुध**-ॐ उद्बुधस्वाग्नेः प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सग्वं सृजेथामयञ्च। असमिन्त्सधस्ते अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।

**गुरु**-ॐ वृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्।

**शुक्रः**-ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानग्वं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ।

**शनि**-ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः।

**राहु**-ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।

**केतु**-ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।

| ग्रहों का तान्त्रिक मन्त्र | ग्रहों का बीज मन्त्र | संख्या |
|---|---|---|
| **सूर्य**-ॐ घृणिः सूर्याय नमः। | ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः। | ७,०००. |
| **चन्द**-ॐ सों सोमाय नमः। | ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः। | ११,००० |
| **मंगल**-ॐ अं अंगारकाय नमः | ॐ हुँ श्रीं भौमाय नमः। | १०,००० |
| **बुध**-ॐ बुं बुधाय नमः। | ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः। | ८,००० |
| **गुरु**-ॐ वृं वृहस्पतये नमः। | ॐ ह्रीं क्लीं हुँ वृहस्पतये नमः | १६,००० |
| **शुक्र**-ॐ शुं शुक्राय नमः। | ॐ ह्र श्रीं शुक्राय नमः। | ११,००० |
| **शनि**-ॐ शं शनैश्चराय नमः। | ॐ ऐं ह्री श्रीं शनैश्चराय नमः | २३,००० |
| **राह**-ॐ रां राहवे नमः। | ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः। | १८,००० |
| **केतु**-ॐ कें केतवे नमः। | ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः। | ७,००० |



## योगिनी शान्ति मन्त्र–

**मङ्गला**– ॐ ह्रीं मंगले मंगलायै स्वाहा।
**पिङ्ला**–ॐ ग्लौं पिंगले वैरि–कारिणि प्रसीद फट् स्वाहा। **धान्या**–ॐ श्रीं धनदे धान्यायै स्वाहा, **भ्रामरी**–ॐ भ्रामरि जगतामधीश्वरि क्लीं स्वाहा। **भद्रिका**–ॐ भद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय स्वाहा। **उल्का**– ॐ उल्के मम रोगं नाशय जृँभय

**महामृत्युञ्जय मन्त्र**–'ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ।। **विनियोगः** अस्य श्री महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वामदेवकहोल-वशिष्ठऋषयः, पंक्तिगायत्र्य- नुष्टुप्छन्दांसि सदाशिव महामृत्युंजयरुद्रा देवता हौं बीजं जूं शक्तिः सः कीलकं महामृत्युंजयप्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।
**लघुमृत्युंजयमन्त्रः**- ॐ जूं सः।

**संक्षिप्त दाह-संस्कार-विधि**–स्नान कय नव श्वेत वस्त्र धारण कय पूर्वमुँह वैसि हाथ में तेकुशा लय नव माँटिक पात्र में जल भरि शव के दक्षिण मुँह कय- **ॐ गयादीनि च तीर्थानि ये च पुण्याः शिलोच्चयाः। कुरु क्षेत्रञ्च गंगाञ्च यमुनाञ्च सरिद्वराम्। कौशिकीं चन्द्रभागाञ्च सर्वपापप्रणाशिनीम्। भद्रावकाशां सरयूं गण्डकीं तमसां तथा धैनवञ्च वराहञ्च तीर्थं पिण्डारकम् तथा। पृथिव्यां यानि तीर्थानि चत्वारः सागरास्तथा।** मनसँ जल में तिर्थक ध्यान करैत ओहि जल सँ शवकेँ स्नान करा नूतन वस्त्रद्वय, यज्ञोपवीत, पुष्प, चन्दनादिसँ अलंकृत कय चितापर कुश ओछा पुरुष कें अधोमुख(नीचामुँह) स्त्री कें उपर मुँह(चित्त) उत्तर शिरकय सुताबी तकरा बाद अपसव्य कय दक्षिण मुँह भय वाम हाथ में सात बन्धन सँ बान्हल उल्का ग्रहण करी-- **ॐ देवाश्चाग्निमुखाः सर्वे कृतस्नपनं गतायुषमेनं दहन्तु।** मनमे ध्यान करैत- **ॐ कृत्वा सुदुष्करं कर्म जानता वाप्यजानता। मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं पञ्चत्वमागतम्। धर्माधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम्। दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकाञ्च गच्छतु।** ई दूनु मन्त्र पढि तीन वेर शव के प्रदक्षिणा करैत जरैत उल्का सँ मुँह में मुखाग्निदी, तकरा बाद खढ़ आ काठादि सँ चित्ता जराबी आओर अन्त में एक कबूतरक बरावरि अवशेष बचावी, तकरा बाद एक प्रादेशक बराबरि सात टा काठी लय जरैत चित्ता में पाछाँ मुँह - **'ॐ क्रव्यादय नमस्तुभ्यं'** ई मन्त्र पढि सात्तों काठी चित्तापर फेकि दी। तकरा बाद- **'ॐ अहरहर्न्नयमानो गामश्वं पुरुषं पशुम्। वैवश्वतो न तृप्यति सुराररिव दुर्मतिः।'** ई मन्त्र पढी यमगाथा गवैत(यमक गुणगान) बच्चा सव कें आगा बृद्ध लोकनि ओकर पाछाँ-पाछाँ पैर सँ पैर नहि सटय(ऐंरी-गोरी) एहि प्रकारें जलाश्यादि जाकय स्नान करथि - **ॐ अद्य अमुक गोत्र अमुकप्रेत एष तिलतोयाञ्जलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम।** एहिं मन्त्र कें पढि तिलांजलि देवाक चाही। स्त्री लोकनि लेल- **ॐ अद्य अमुकगोत्रे अमुकप्रेते** इ पढवा क चाही। भीजले वस्त्र धारण कयने कर्त्ता सहित सभ गोर्टे कर्त्ताक दुआरि पर जाय **ॐ लौहवद् दृढकायोस्त** ई मन्त्र सँ लौह स्पर्श करी तकरा बाद **ॐ अश्मेव स्थिरो भूयासम्** ई मन्त्र सँ पाथर स्पर्श तकर बाद **ॐ अग्निर्नः शर्म यच्छतु** अग्नि स्पर्श, तकर बाद जलक स्पर्श कय तीत नीमक पात(मिर्च) आदि खाय अपन व्यवहारक अनुसारें अपना घर जयवाक चाही



**संक्षिप्त वैतरणी दान**–पितृ के लिए–भगवानक स्मण कय शुद्ध भय तेकुशा, फूल, अक्षत लय **ॐ कृष्णगव्यै नमः** तीन वेरि गायपर, कुशपर **ॐ ब्राह्मणाय नमः** तीन वेरि, तकरा बाद गाय कें जल सँ सिक्त तय पढ़ी- **ॐ उष्णे वर्षति शीते वा मारुते वाति वा भृशम्। दातारं त्रायते यस्मात्तस्माद्वैतरणी स्मृता।। ॐ यमद्वारे महाघोरे कृष्णा वैतरणी नदी। तां सन्तर्तुं ददाम्येतां कष्णां वैतरणीं च गाम्।** ईमन्त्र पढ़ी ओकरा बाद तेकुशातिलजल लय संकल्प करी- **ओमद्य अमुकगोत्रस्य पितुः अमुकशर्मणः यमद्वारस्थित- वैतरणी नदी- सुखसन्तरणकाम इमां गां रुद्रदैवतां यथानामगोत्राय ब्राह्मणायाहं ददे।** गौदान ग्रहण केनिहार **ओं स्वस्ति** कहथि। फेरि तेकुशातिलजलद्रव्यादि लय दक्षिणा करथि- **ओमद्य कृतैतत्कृष्णगवीदान-प्रतिष्ठार्थमेतावद् द्रव्यमूल्यकहिरण्यमग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहन्ददे।** ओकरा बाद दान ग्रहण कयनिहार व्यक्ति **ओं स्वति** कहि दक्षिणा ग्रहण करथ। शुद्र कें **ओं** के स्थान पर **नमः** पढावक चाही। गायक अभाव में एतावद् द्रव्य मूल्यक कृष्ण गव्यै नमः पढ़ी। (माता के लेल संकल्प में मात्र **गात्रस्य** स्थान में **गोत्रायाः** आ **पितुः अमुक शर्मण** स्थान में **मातुः अमुक देव्याः** होयत शेष सभ कर्म यथावत होयत।)

| १४३१ साल के **एकादशी** | | १४३१ साल के **त्रयोदशी** | | १४३१ साल के **चतुर्दशी** | | १४३१ साल के | | १४३१ साल के **पंचक (भदवा)** | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **कृष्ण पक्ष** | **शुक्लपक्ष** | **कृष्ण पक्ष** | **शुक्लपक्ष** | **कृष्ण पक्ष** | **शुक्लपक्ष** | **पूर्णिमा** | **संक्रान्ति** | आरम्भ दिन, समय ⇔ | समाप्ति दिन, समय |
| १३ जुला गुरु | २९ अग शनि | १५ जुला. शनि | ३० जुला रवि | १६ जुला रवि | ३१ जुला सोम | १ अग मंगल | १७ जुला कर्क सोम | ६ जुला गुरु दि.७।०३ | १० जुला सोम रा.११।५७ |
| १२ अग शनि | २७ अग. रवि | १३ अग. रवि | २८ अग. सोम | १४ अग. सोम | २९अग. मंग | ३० अग गुरु | १७ अग सिंह गुरु | २ अग. बुध दि.३।२० | ७ अग. सोम दि.८।०३ |
| १० सित. रवि | २५ सित.सोम | १२ सित. मंग | २७ सित. बुध | १३ सित. बुध | २८ सित गुरु | २९ सित शुक्र | १८ सित कन्या सोम | २९ अग. मंग रा.११।३४ | ३ सित. रवि दि.३।४१ |
| १०अक्टू मंगल | २५ अक्टू बुध | १२ अक्टू गुरु | २६ अक्टू.गुरु | १३ अक्टू शुक्र | २७ अक्टू शुक्र | २८ अक्टू शनि | १८ अक्टू तुला बुध | २३ अक्टू सोम दि.३।५७ | २८ अक्टू शनि दि.८।१४ |
| ९ नव. गुरु | २३ नव. गुरु | १० नव. शुक्र | २४ नव. शुक्र | ११ नव. शनि | २५ नव. शनि | २६ नव. रवि | १७ नव वृश्चिक शुक्र | १९ नव. रवि रा.१२।४ | २४ नव. शुक्र दि.४।१५ |
| ८ दिस. शुक्र | २३ दिस.शनि | १० दिस. रवि | २४ दिस. रवि | ११ दिस. सोम | २५ दिस. सोम | २६दिस. मंगल | १७ दिस. धनु रवि | १७ दिस. रवि दि.८।०५ | २१ दिस. गुरु रा.१२।११ |
| ७ जन. रवि | २१ जन. रवि | ९ जन. मंगल | २३ जन. मंगल | १० जन बधु | २४ जन. बुध | २५ जन. गुरु | १५ जन मकर सोम | १३ जन. शनि दि.४।०८ | १८ जन. गुरु दि.८।१४ |
| ६ फर. मंगल | २० फर मंगल | ७ फर. बुध | २१ फर. बुध | ८ फर गुरु | २२ फर. गुरु | २४ फर शनि | १३ फर कुम्भ मंगल | ९ फर. शुक्र रा.१२।९ | १४ फर. बुध दि.४।१३ |
| ६ मार्च बुध | २० मार्च बुध | ८ मार्च शुक्र | २२ मार्च शुक्र | ८ मार्च शुक्र | २३ मार्च शनि | २५ मार्च सोम | १४ मार्च मीन गुरु | ८ मार्च शुक्र दि.८।१० | १२ मार्च मंगल दि.१२।१४ |
| ५ अप्रै शुक्र | १९ अप्रै शुक्र | ६ अप्रै. शनि | २१ अप्रै. रवि | ७ अप्रै. रवि | २२ अप्रै सोम | २३ अप्रै मंगल | १३ अप्रैल मेष शनि | ४ अप्रैल गुरु दि.४।१५ | ९ अप्रैल मंगल दि.८।१९ |
| ४ मई शनि | १९ मई रवि | ५ मई रवि | २० मई सोम | ६ मई सोम | २१ मई मंगल | २३ मई गुरु | १४ मई वृष मंगल | १ मई बुध रा.१२।२२ | ६ मई सोम दि.४।१८ |
| २ जून रवि | १७ जून सोम | ४ जून मंगल | १९ जून बुध | ५ जून बुध | २० जून गुरु | २२ जून शनि | १५ जून मिथुन शनि | २९ मई बुध दि.८।३२ | २ जून रवि रा.१।३८ |
| २ जुला सोम | १७ जुला बुध | ३ जुला बुध | १८ जुला गुरु | ४ जुल गुरु | १९ जुला शुक्र | २१ जुला रवि | १६ जुला कर्क मंग | २५ जून मंग दि.४।४० | ३० जून रवि दि.८।५४ |

## संवत् 2080-2081 के प्रमुख व्रत,पर्व

| तिथि | मास | व्रत/पर्व |
|---|---|---|
| ७ | जुलाई- | मधुश्रावणीव्रतारम्भ |
| ७ | जुलाई | मौनापञ्चमी |
| १७ | जुलई | मलमासारम्भः |
| १९ | अगस्त | मधुश्रावणीव्रतसमाप्ति |
| २० | अगस्त | भाद्रीरविव्रतारम्भ |
| २१ | अगस्त | नागपञ्चमी |
| ३१ | अगस्त | रक्षाबन्धन,संस्कृतदिवस |
| ६ | सितम्बर | श्रीकृष्णजयन्तीव्रत |
| ७ | सितम्बर | कृष्णाष्टमीव्रतं |
| १४ | सितम्बर | कुशीअमावस्या, |
| १८ | सितम्बर | हरितालिका व्रत(तीज) |
| १८ | सितम्बर | चौठचन्द्र पूजा |
| १८ | सितम्बर | विश्वकर्मापूजा |
| २६ | सितम्बर | इन्द्रपूजारम्भ |
| २८ | सितम्बर | अनन्त पूजन |
| २९ | सितम्बर | अगस्त्यार्घदानं |
| ३० | सितम्बर | महालयारंभ,पितृपक्षारम्भ |
| ६ | अक्टूबर | जितिया व्रत |
| १५ | अक्टूबर | शारदीयनवरात्रारंभ |
| २४ | अक्टूबर | विजयादशमी |
| २८ | अक्टूबर | कौमुदी(कोजागरा) |
| १० | नवम्बर | धनतेरस |
| १२ | नवम्बर | दीपावली,कालीपूजा |
| १४ | नवम्बर | गोवर्धनपूजा,बालदिवस |
| १५ | नवम्बर | भातृद्वितीया |
| १९ | नवम्बर | छठपूजा |
| २३ | नवम्बर | देवोत्थान एकादशी। |
| २५ | नवम्बर | विद्यापतिस्मृतिदिवस |
| २६ | नवम्बर | सामाविसर्जन |
| २६ | नवम्बर | षा.रविव्रतारम्भ |
| १७ | दिसम्बर | विवाहपञ्चमी |
| २३ | दिसम्बर | गीताजयन्ती |
| ९ | जनवरी | दशतारकारम्भ |
| १५ | जनवरी | मकरसंक्रान्ति |
| १० | फरवरी | शिशिरनवरात्रारम्भ |
| १४ | फरवरी | सरस्वतीपूजा |
| ८ | मार्च | महाशिवरात्री |
| २४ | मार्च | होलीकादाहः |
| २६ | मार्च | होली |
| ९ | अप्रैल | वसंतनवरात्रारम्भ |
| १३ | अप्रैल | मेषसंक्रान्ति,सतुआईन |
| १४ | अप्रैल | चैतीछठ |
| १७ | अप्रैल | श्रीरामनवमी, |
| १० | मई | अक्षयतृतीया |
| १२ | मई | षा.रविव्रतविसर्जन |
| १६ | मई | मैथिलीदिवस |
| ६ | जून | वटसावित्रीव्रत, |
| १६ | जून | गंगादशहरा |
| ६ | जुलाई | ग्रीष्मनवरात्रारंभ |
| १७ | जुलाई | हरिशयनीएकादशी |
| २१ | जुलाई | गुरुपूर्णिमा |

## विविध-मुहूर्त-

❖ मुण्डन- नवम्बर-२४,२९,दिसम्बर-१,१५,जनवरी-१७,३१ फरवरी-१९,२१,२२,२६,२९, मार्च-११, अप्रैल-१५, मई-९,१०,२०,२७, जून-७,१०,१७, जुलाई-८,१२।। ❖ उपनयन- जनवरी-२१, फरवरी-१९, २०, मार्च-२०,२१, अप्रैल- १८,१९, जुलाई-८,१०

❖ विवाहः- नवम्बर-२४,२७,२९,दिसम्बर-३,४,७,८,१०,१३,१४,१५, जनवरी-१७,१८,२१,२२,३१, फरवरी-१,४,५,७,८,१५,१८,१९,२६,२८, मार्च-३,४,६,७,८,१०,११, अप्रैल-१८,१९,२१,२५,२६,२८,मई-१,जुलाई- १०,११,१२

❖ द्विरागमनं- नवम्बर-२४,२७,दिसम्बर- १,१३,१४,१५, फरवरी-१५,१८,१९ ,२१,२२,२५,२६,२८,२९, मार्च-११, अप्रैल-१५,२१,२२,२४,२५,२६,२८, मई-९,१०,१२।। ❖ गृहारम्भः - जुलाई- ५,६,७, अक्टूबर- २३,२५,२८, नवम्बर-२३,२४,२७,२९,दिसम्बर-१, जनवरी-२५, फरवरी-१९,२१,२६,२९, अप्रैल- २६, जुलाई-१९। ❖ गृहप्रवेशः - अक्टूबर- २१,२५,२६,२७,२८, नवम्बर- २२,२३,२४,२५, जनवरी- १७,२२,२४ फरवरी-१९,२१,२२, अप्रैल-१५,२०, जुलाई-१२,१३,१८,१९

❖ देवादिप्रतिष्ठा- फरवरी-१५,१८,१९,२१,२२। मार्च-११, जुलाई-७,११,१२।

ग्रहण- अश्विनशुक्लपक्ष पूर्णिमा तिथि शनिवार तदनुसार २८ अक्टूबर २०२३
चन्द्र ग्रहण स्पर्श रात्रि १।०७ मध्य- रात्रि-१।४६, मोक्ष- रात्रि २।२५